

प्राथमिक शिक्षक

शैक्षिक संवाद की पत्रिका

वर्ष 42

अंक 4

अक्टूबर 2018



पत्रिका के बारे में

प्राथमिक शिक्षक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की एक त्रैमासिक पत्रिका है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है, शिक्षकों और संबद्ध प्रशासकों तक केंद्रीय सरकार की शिक्षा नीतियों से संबंधित जानकारीयाँ पहुँचाना, उन्हें कक्षा में प्रयोग में लाई जा सकने वाली सार्थक और संबद्ध सामग्री प्रदान करना और देश भर के विभिन्न केंद्रों में चल रहे पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों आदि के बारे में समय पर अवगत कराते रहना। शिक्षा जगत में होने वाली गतिविधियों पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए भी यह पत्रिका एक मंच प्रदान करती है।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्ति किए गए विचार लेखकों के अपने होते हैं। अतः यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक चिंतन में परिषद् की नीतियों को ही प्रस्तुत किया गया हो। इसलिए परिषद् का कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

© 2018. पत्रिका में प्रकाशित लेखों का रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित है। परिषद् की पूर्व अनुमति के बिना, लेखों का पुनर्मुद्रण किसी भी रूप में मान्य नहीं होगा।

सलाहकार समिति		रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय	
निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.	: हषिकेश सेनापति	एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस	
अध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग	: सुनीति सनवाल	श्री अरविंद मार्ग	
अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: एम. सिराज अनवर	नयी दिल्ली 110 016	फ़ोन : 011-26562708
संपादकीय समिति		108, 100 फीट रोड	
अकादमिक संपादक	: पद्मा यादव एवं उषा शर्मा	होस्केरे हल्ली एक्सटेंशन	
मुख्य संपादक	: श्वेता उप्पल	बनाशंकरी III स्टेज	
		बेंगलुरु 560 085	फ़ोन : 080-26725740
प्रकाशन मंडल		नवजीवन ट्रस्ट भवन	
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: गौतम गांगुली	डाकघर नवजीवन	
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: अरुण चितकारा	अहमदाबाद 380 014	फ़ोन : 079-27541446
संपादन सहायक	: ऋषिपाल सिंह	सी. डब्ल्यू. सी. कैंपस	
उत्पादन सहायक	: प्रकाश वीर सिंह	धनकल बस स्टॉप के सामने	
आवरण		पनिहटी	
अमित श्रीवास्तव		कोलकाता 700 114	फ़ोन : 033-25530454
मुख कवर चित्र		सी. डब्ल्यू. सी. कॉम्प्लेक्स	
साक्षी शर्मा, कक्षा V, केंद्रीय विद्यालय, आई.आई.टी., दिल्ली		मालीगाँव	
		गुवाहाटी 781 021	फ़ोन : 0361-2674869

मूल्य एक प्रति ₹ 65.00

वार्षिक ₹ 260.00

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 के लिए प्रकाशित तथा चन्द्रप्रभू ऑफ़सेट प्रिंटिंग वर्क्स प्रा. लि., सी-30, सैक्टर 8, नोएडा 201 301 द्वारा मुद्रित।

प्राथमिक शिक्षक

वर्ष 42

अंक 4

अक्टूबर 2018

इस अंक में

संवाद		3
लेख		
1. समझना और सीखना समानता व अंतर	लक्ष्मी नारायण मित्तल	5
2. समग्र शिक्षा विद्यालयी शिक्षा में एक एकीकृत योजना	सरला वर्मा	9
3. कक्षा में पढ़ने की आदत	रजनी	17
4. प्रभावी शिक्षण के लिए संप्रेषण कौशल	उषा शुक्ला	21
5. बच्चों की शिक्षा में शिक्षक-अभिभावक संबंध की भूमिका एक विश्लेषण	अखिलेश यादव	30
6. बाल संसद के रास्ते	प्रमोद दीक्षित 'मलय'	36
7. कक्षा शिक्षण में वार्तालाप गतिविधि, रोल प्ले और तत्काल प्रस्तुति	शारदा कुमारी	42
8. प्राथमिक शिक्षा व शिक्षकों से जुड़ी विपरीत परिस्थितियाँ एवं उनका सामना	अलका त्रिपाठी अंजली बाजपेयी	48
9. बच्चे का विकासात्मक संदर्भ और विद्यालय	ऋषभ कुमार मिश्र	53
10. पूर्व प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा का शिक्षण	पद्मा यादव	59

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



विद्या से अमरत्व
प्राप्त होता है।

परस्पर आवेष्टित हंस राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के कार्य के तीनों पक्षों के एकीकरण के प्रतीक हैं—

(i) अनुसंधान और विकास,

(ii) प्रशिक्षण, तथा (iii) विस्तार।

यह डिजाइन कर्नाटक राज्य के रायचूर जिले में मस्के के निकट हुई खुदाइयों से प्राप्त ईसा पूर्व

तीसरी शताब्दी के अशोकयुगीन भग्नावशेष के आधार पर बनाया गया है।

उपर्युक्त आदर्श वाक्य ईशावास्य उपनिषद् से लिया गया है जिसका अर्थ है— विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

विशेष

11. उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित सीखने के प्रतिफल (कक्षा 6 से 8) 64

बालमन कुछ कहता है

12. खेलों का महत्त्व निशिता मोहिल 76
13. मुस्कान दिपाष्वी 77

कविता

14. तरक्की हर्षवर्धन कुमार 78



संवाद

सीखने की प्रक्रिया में यह एक महत्वपूर्ण बिंदु है कि शिक्षक अपनी कक्षायी प्रक्रियाओं को किस तरह से संयोजित करते हैं और बच्चों को समग्रता में विभिन्न अवसर उपलब्ध कराते हैं। सीखने से जुड़ी समस्त अवधारणाएँ इस ओर संकेत करती हैं कि परिवार, विद्यालय, समुदाय, नीतियाँ और स्वयं शिक्षकों की शिक्षा किस रूप में आकार लेती हैं। 'समग्र शिक्षा' की संकल्पना में इन्हीं बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है। कुशल पाठक के रूप में पढ़ने का हुनर अन्य विषयों के अध्ययन को प्रभावित करता है। अतः यह आवश्यक है कि बच्चों में पढ़कर समझने की कुशलता का विकास किया जाए। पढ़ने का संबंध विभिन्न प्रकार की उप कुशलताओं के साथ भी है, जिन्हें विकसित करने के लिए बाल साहित्य सहित विभिन्न प्रकार की पाठ्य सामग्री की उपलब्धता एक अनिवार्य आवश्यकता है।

बच्चों का स्कूली जीवन उनके विकास के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इन वर्षों में बच्चों के विकास के लिए अनुकूल वातावरण मिलना आवश्यक है। दुर्भाग्यवश हमारे देश में गरीबी और पिछड़ेपन के कारण अधिकांश बच्चों को घरों में एक उद्दीपित वातावरण नहीं मिल पाता। शिक्षा का अधिकार अधिनियम इस अभाव की पूर्ति के संदर्भ में एक प्रमुख प्रयास है। हालाँकि शिक्षा के क्षेत्र में अभी भी बहुत सुधार लाने की आवश्यकता है। शिक्षा क्रम को प्रभावपूर्ण ढंग से क्रियान्वित करने के लिए आवश्यक है कि पर्याप्त समय, स्टॉफ़, भवन तथा उसका रख-रखाव, निधियाँ, शैक्षिक सामग्री, खेल के मैदान आदि अनिवार्य रूप से उपलब्ध हों, परंतु दुर्भाग्यवश अधिकतर स्कूलों में ये न्यूनतम आवश्यकताएँ भी उपलब्ध नहीं हैं। लगन और प्रतिबद्धता की भावना से कार्य करने वाले शिक्षकों की संख्या भी कम हो रही है। ज्यादातर शिक्षकों द्वारा अपनाए जाने वाले शिक्षण के तरीके छात्रों के लिए किसी प्रकार की चुनौती प्रस्तुत नहीं करते। अब ज़रूरत है शिक्षा में टेक्नोलॉजी के प्रयोग की। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा ई-कंटेंट तैयार किया जा रहा है जो NROER पर शिक्षक देख सकते हैं और शिक्षा में उसका प्रयोग कर सकते हैं। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्मित किताबें ई-पाठशाला में उपलब्ध हैं, जिन्हें मुफ्त डाउनलोड किया जा सकता है और 'स्वयं प्रभा' पर शैक्षिक चर्चाओं का लाभ उठाया जा सकता है।

उम्मीद है यह अंक आपको पसंद आएगा। इस अंक से संबंधित यदि कोई सुझाव हों तो आप हमें भेज सकते हैं।



मिल-जुल कर स्कूल में जाएँ, साथ पढ़ें और
साथ में खाएँ। रंग-बिरंगी प्यारी दुनिया,
साथ मिलकर इसे सजाएँ।

समझना और सीखना समानता व अंतर

लक्ष्मी नारायण मित्तल*

आम व्यक्ति का जीवन हो या किसी विशिष्ट व्यक्ति का जीवन, 'समझ' और 'सीख' दोनों ही शब्द एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में दोनों के ही जीवन में अभिन्न अंग के रूप में शामिल हैं। जीवन का निर्वाह भर करना है, तो एक अलग बात है, परंतु जीवन को रचनात्मक रूप देना है तो 'समझ' और 'सीख' के बगैर काम नहीं चलेगा। 'सीख' तो स्वतः आरंभ हो जाती है, प्राकृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए और उनके साथ 'समझ' का भी पुट हो, तो बात विलक्षण हो जाती है। प्रस्तुत लेख में 'सीख' और 'समझ' पर एक समझ बनाने का प्रयास किया गया है। अध्यापकों के साथ चर्चा कर कैसे इन शब्दों को समझा जाए और विद्यालयी शिक्षण में इनके महत्त्व को जाना जाए इन्हीं विचारों की प्रस्तुति इस लेख में है।

प्रशिक्षक-शिक्षकों के समक्ष विचार हेतु समझना और सीखना दो शब्दों को रखें। शिक्षकगण इस बात पर विचार करें कि क्या वे इन दोनों शब्दों को एक-दूसरे का पर्यायवाची मानते हैं या इनमें भेद करते हैं। यदि भेद करते हैं तो शिक्षकों को उसे स्पष्ट करने को प्रेरित किया जाए। यदि यहाँ चर्चा होने लगे तो प्रशिक्षक को सुगमकर्ता की भूमिका निभानी चाहिए तो उन्हें 'समझना' और 'सीखना' में क्या बारीक भेद है इसकी जानकारी निम्नवत दी जानी चाहिए।

सर्वप्रथम यह स्पष्ट करना कि 'समझदार होना' और 'साक्षर होना' बिल्कुल भिन्न बातें हैं

शिक्षकों के समक्ष दो बातें रखी जाएँ— समझदार व्यक्ति और साक्षर व्यक्ति। फिर उनसे पूछा

जाए कि क्या वे दोनों को एक ही मानते हैं या अलग-अलग। निष्कर्ष यही निकल कर आएगा कि दोनों का अर्थ अलग-अलग है, समझदार व्यक्ति साक्षर हो भी सकता है और नहीं भी या फिर व्यक्ति में बहुत से हुनर भी हो सकते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि वह समझदार ही है। वह समझदार हो भी सकता है और नहीं भी।

दैनिक जीवन के कुछ उदाहरणों से 'समझना' और 'सीखना' के बीच के फर्क को उजागर करना

प्रशिक्षक, बोर्ड पर निम्न बिंदुओं को लिख सकते हैं, जैसे— हल चलाना, गाड़ी चलाना, बच्चों को पढ़ाना, व्यवहार करना, खाना बनाना, संबंधी या रिश्तों के साथ निर्वाह करना, गणित के सवाल लगाना आदि।

* पूर्व प्राचार्य एवं प्रोफेसर, एच-899 ओल्ड हाउसिंग बोर्ड, मुंबई 476 001

फिर शिक्षकों से कहा जाए कि बोर्ड पर लिखी बातों को वे दो श्रेणियों में बाँट दें। एक श्रेणी में उनको रखें जिन्हें वे मूलतः समझने (समझदारी) की बात मानते हैं और दूसरी श्रेणी में उन्हें रखें जिन्हें वे मूलतः सीखने से संबंधित मानते हैं। जब प्रशिक्षु-शिक्षक ऐसा कर लें तो उनसे यह पूछा जाए कि आखिर उनके द्वारा किए गए वर्गीकरण का आधार क्या है?

देखा गया है कि 'समझने' की श्रेणी में 'व्यवहार करना' और 'संबंध या रिश्तों का निर्वाह करना' रखा जाता है। प्रशिक्षक इन बिंदुओं पर कुछ इस प्रकार अपनी बात रख सकता है कि हमारे लिए सबसे मुश्किल कार्य सही व्यवहार करना और संबंधों का ठीक-ठीक निर्वाह करना ही होता है। हमारी सबसे बड़ी विफलता इसी क्षेत्र में हम महसूस करते हैं और इसका कारण यही है कि यह सीखने से नहीं आता। यदि यह सीखने से आने वाली चीज़ होती तो एक निश्चित उम्र आने पर या एक निश्चित समय तक लगातार करते रहने के कारण स्वतः ही हमें व्यवहार करना और संबंधों का निर्वाह करना आ जाता। ऐसा होता नहीं है, ऐसा हम सभी अपने-अपने अनुभवों से जानते हैं।

जीवन के मूल प्रश्नों से जोड़कर 'समझने' और 'सीखने' का भेद समझाना

प्रशिक्षक-शिक्षकों के समक्ष जीवन के दो मूल प्रश्नों को रखें —

- मैं जीवन में क्या चाहता हूँ? (जीवन के लक्ष्य से संबंधित प्रश्न)
- जीवन में जो चाहता हूँ उसे कैसे प्राप्त करूँगा? (जीवन के कार्यक्रम से संबंधित प्रश्न)

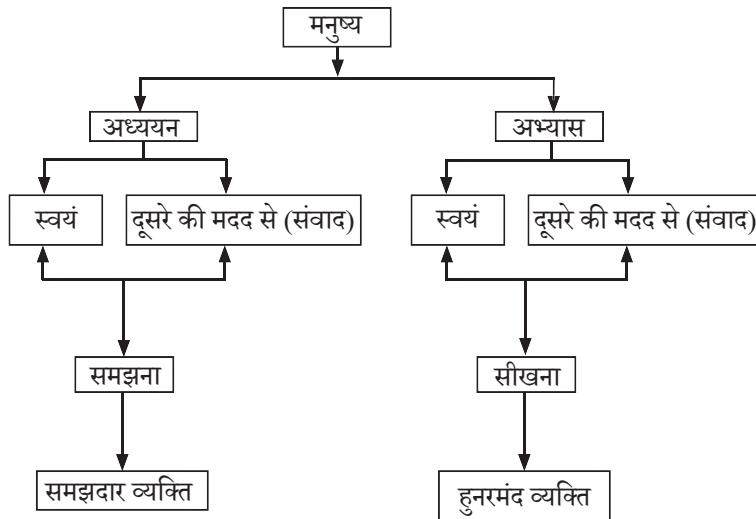
फिर प्रशिक्षक कह सकता है कि जीवन से संबंधित ये दो मूल प्रश्न हैं। 'समझने' और 'सीखने' की आवश्यकता के मूल में यही दो प्रश्न हैं। हमें आखिर यही दो बातें तो मूलतः समझनी हैं कि मैं चाहता क्या हूँ और उसे कैसे हासिल करूँगा। समझना विचार प्रधान होता है यानि समझना विचार और बुद्धि के स्तर पर होने वाली चीज़ है और समझ के क्रियान्वयन की जब बात आती है तब शरीर की कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों की भूमिका प्रधान हो जाती है। उस क्रम में बहुत से हुनर सीखने की आवश्यकता पड़ती है। हुनर के मामले में चुनाव की स्वतंत्रता होती है।

'क्यों' और 'कैसे' जैसे प्रश्नवाचक शब्दों के जरिए 'समझना' और 'सीखना' के भेद पर बात रखना

प्रशिक्षक यह भी कह सकते हैं कि, समझने और सीखने का भेद हम 'क्यों' और 'कैसे' जैसे प्रश्नवाचक शब्दों के जरिए भी समझ सकते हैं। जैसे — 'मैं क्यों जी रहा हूँ' को समझने की आवश्यकता होती है। ऐसे ही 'मैं गणित क्यों पढ़ूँ या सीखूँ' को भी समझने की आवश्यकता है। 'कैसे' के उत्तर में जब हम जाएँगे, जैसे कि 'मैं कैसे जिऊँ' या 'मैं भाषा का अच्छा ज्ञाता कैसे बनूँ' तो समझ के साथ-साथ सीखने की भूमिका प्रधान हो जाती है। ऐसा दिखता है कि 'क्यों' का जवाब हमारे पास नहीं होता, लेकिन 'कैसे' का जवाब हम अपने आस-पास के लोगों के जीने या करने में देखते ही रहते हैं, और वहीं से सीख भी लेते हैं। इसी कारण हुनरमंद लोग तो बहुत मिल जाते हैं, परंतु समझदार लोग मुश्किल से ही मिलते हैं।

‘समझना’ और ‘सीखना’ के संदर्भ में (विशेष रूप से समझने और समझाने के लिए) संवाद के महत्त्व को रखना

‘समझना’ और ‘सीखना’ के भेद को स्पष्ट कर देने के बाद प्रशिक्षक निम्न रेखाचित्र शिक्षक-प्रशिक्षुओं के समक्ष रख सकता है —



इस रेखाचित्र को समझाने के क्रम में प्रशिक्षक यह बात रख सकता है कि, ‘समझने और सीखने’ के संदर्भ में ही अध्ययन और अभ्यास शब्दों के बारे में भी स्पष्टता की आवश्यकता है। अध्ययन और अभ्यास या तो स्वयं कर सकते हैं या दूसरों की मदद से। दुनिया में ऐसे लोग हुए ही हैं जिन्होंने स्वयं ही सीखा और समझा। लेकिन आम आदमी को या बहुसंख्यक मनुष्यों को तो दूसरों की मदद की ज़रूरत पड़ती ही है। विद्यालय को इसी दृष्टि से देख सकते हैं। शिक्षक अध्ययन और अभ्यास हेतु मदद करने के लिए ही तो नियुक्त होते हैं। शिक्षक द्वारा यह मदद पहुँचाने का सबसे कारगर माध्यम संवाद है। ऐसा हम स्वयं

भी स्वीकार करते हैं कि हमें अपने साथ संवाद ही सबसे अधिक स्वीकार होता है। विद्यार्थी को भी संवाद ही सर्वाधिक स्वीकृत होता है और वही हम सबसे कम करते हैं। संवाद की विशेषता यह है कि इसमें दूसरों को समझाने के साथ-साथ समझने का कार्य भी होता है और दूसरे समझे बिना समझाना

तभी हो सकता है जब समझने वाला स्वयं तत्पर हो। विद्यालय में तो शिक्षक को विद्यार्थी की यह तैयारी भी करानी पड़ती है कि वह समझने के लिए तैयार हो जाए। यहाँ संवाद की ही विशेष भूमिका होती है।

‘समझ के करो’ और ‘करके सीखो’ जैसे सूत्र देना

प्रशिक्षक प्रतिभागियों के सामने ‘समझ के करो’ और ‘करके सीखो’ के ये दो सूत्र रख सकते हैं। इस संदर्भ में प्रशिक्षु को बताएँ कि सभी कार्य समझ कर ही किये जाने चाहिए यानि क्यों कर रहा हूँ, यह स्पष्ट होना चाहिए। करने के लिए उस कार्य विशेष का कौशल सीखना ज़रूरी है जो कि

करके या अभ्यास से ही आता है। यहाँ यह भी समझने की आवश्यकता है कि समझने में भी हुनर की भूमिका होती है, जिसमें भाषा यानि अपने विचार-भावों को रख पाना एक मुख्य हुनर है। प्रकृति में यह व्यवस्था है कि यही हम सबसे पहले सीखते हैं। हुनर सीखे लेने के बाद उसका उपयोग समझ पर ही निर्भर करता है।

‘समझ’ और ‘हुनर के पूरक’ संबंध की बात करना

प्रशिक्षक, प्रशिक्षु के सामने यह बात भी रख सकते हैं कि ‘समझने और सीखने (हुनर)’ का एक-दूसरे से पूरकता का रिश्ता है। हुनर समझने में मदद करता

है तो समझ हुनर के सदुपयोग का आधार बनती है। समझ का क्रियान्वयन हुनर से ही हो सकता है। शिक्षक को यह स्पष्टता रहनी चाहिए कि वह दोनों पक्षों पर ध्यान दें और इस कारण शिक्षण में समग्रता आएगी।

निष्कर्ष

समझना सीखना एक-दूसरे के पूरक हैं। समझने से चीजें सीखना आसान हो जाता है। बिना समझे कोई भी कार्य कठिन होता है। विद्यालयी शिक्षा में भी समझ कर पढ़ना और पढ़कर समझना महत्वपूर्ण होता है। अर्थात् पढ़ना ही समझना है।

समग्र शिक्षा विद्यालयी शिक्षा में एक एकीकृत योजना

सरला वर्मा*

वर्तमान समय में शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सूचक है। शिक्षा समाज में एक एकीकृत बल के रूप में कार्य करती है जो सामाजिक एकजुटता एवं राष्ट्रीय पहचान को बढ़ावा देने वाले मूल्य प्रदान करती है, जिससे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन तथा समाज में समानता द्वारा कोई राष्ट्र उन्नति करता है। देश में शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कई कार्यक्रमों और योजनाओं की शुरुआत की गयी, जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास किया जा सके। केंद्र और राज्य सरकारों के द्वारा कुछ योजनाएँ जैसे — सर्व शिक्षा अभियान (SSA), राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA) और शिक्षक शिक्षा संस्थानों (TEIs) के लिए बहुत प्रयास किए गये, परंतु इतने प्रयासों के बावजूद भी विद्यालयी शिक्षा प्रणाली को प्रभावी नहीं बनाया जा सका और न ही उसे पूर्ण रूप से गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सका। हालाँकि, इन योजनाओं के क्रियान्वयन और प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय, राज्य, जिला और उप-जिला स्तरों पर स्कूल शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए समांतर संस्थागत व्यवस्थाएँ भी की गईं इसी समान उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कई बार प्रयासों और कर्मियों के कार्यों में दोहराव होते गये। इस कारण शिक्षा प्रणाली को एक ऐसे संगठित स्वरूप की ज़रूरत हुई, जहाँ इन तीनों योजनाओं एवं अन्य संबंधित पहलुओं का एक साथ समावेश हो जिससे बच्चों की शिक्षा के साथ शिक्षक प्रशिक्षण आदि को एक साथ देखा जा सके। इसलिए इन सभी को एक ही रूप में देखने के लिए एकीकृत योजना को बनाया गया है। इस योजना में संपूर्ण विद्यालय विकास कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा 1 से 12 तक को एक साथ रखा गया है अर्थात् विद्यालयी शिक्षा को समग्र रूप से प्री-नर्सरी कक्षा से 12 वीं कक्षा तक विभाजित किए जाने के बजाए एक स्वरूप में देखने का प्रस्ताव दिया है, जिससे कार्य क्षमता और बजट का सही उपयोग किया जा सके। इसलिए इसे विद्यालयी शिक्षा क्षेत्र के लिए प्री-स्कूल से कक्षा 12 तक विस्तारित एक व्यापक कार्यक्रम और व्यापक लक्ष्य के साथ तैयार किया गया है। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए राज्यों को प्रोत्साहित करना होगा। स्कूली शिक्षा सीखने और सीखने के परिणामों के लिए बराबर अवसरों के सुधार एवं विकास कार्यक्रम या योजना सभी स्तरों पर विशेष रूप से राज्य, जिला और उप-जिला स्तर प्रणाली और संसाधनों का उपयोग करने के लिए कार्यान्वयन प्रणाली और कार्य को व्यवस्थित रूप से करने में मदद करेगी, इसके अलावा स्कूली शिक्षा के विकास के लिए एक व्यापक रणनीतिक योजना जिला स्तर पर स्कूली शिक्षा के परिणामों में सुधार करने के लिए संयुक्त योजना को जोर देगा।

* असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली 110 016

समग्र शिक्षा — एक एकीकृत योजना का परिचय

समग्र शिक्षा, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्री-स्कूल से कक्षा 12 तक की विद्यालयी शिक्षा से संबंधित एक एकीकृत योजना है। समग्र शिक्षा से पूर्व केंद्र सरकार की तीन योजनाएँ यथा—सर्व शिक्षा अभियान (SSA), राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा (RMSA) तथा शिक्षक शिक्षा संस्थान (TEIs) पृथक-पृथक रूप में कार्य करती थीं जिसके कारण अक्सर इन योजनाओं द्वारा संचालित कार्यों की पुनरावृत्ति हो रही थी, क्योंकि सभी कार्य विद्यालयी शिक्षा से संबंधित थे। अतः इन बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने इन तीनों योजनाओं को सम्मिलित रूप से विद्यालयी शिक्षा के लिए एक एकीकृत योजना के अंतर्गत रखा जिसका नाम ‘समग्र शिक्षा’ है।

समग्र शिक्षा का मुख्य लक्ष्य विद्यालयी शिक्षा में सुधार कर इसकी गुणवत्ता को बढ़ाना है। इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य सभी बच्चों को स्कूल जाने एवं पढ़ने के समान अवसर उपलब्ध कराना है। यह योजना प्री-स्कूल से लेकर उच्च-माध्यमिक अर्थात् प्री-नर्सरी से कक्षा 12 तक ‘विद्यालय’ को निरंतरता के रूप में मानती है।

समग्र शिक्षा का दृष्टिकोण

सर्व शिक्षा अभियान (SSA), राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA) और शिक्षक शिक्षा संस्थानों (TEIs) की केंद्र प्रायोजित योजनाएँ मानव संसाधन मंत्रालय के तीन मुख्य विद्यालयी शिक्षा विकास के कार्यक्रम थे जिन्हें केंद्र सरकार ने राज्य सरकारों के साथ मिलकर पूरा करने का उद्देश्य रखा।

इन योजनाओं द्वारा अलाभान्वित एवं पिछड़े वर्गों को समानता का अधिकार देते हुए समान शिक्षा के लिए आगे बढ़ाना था। इन योजनाओं के अंतर्गत कार्यों को निम्नलिखित प्रकार से व्यवस्थित किया गया था —

सर्व शिक्षा अभियान द्वारा शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 (आर.टी.ई., 2009) के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा अर्थात् कक्षा 1 से 8 तक की शिक्षा को रखा गया।

- राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान में कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा को रखा गया।
- शिक्षक शिक्षा संस्थानों (TEIs) के अंतर्गत सेवापूर्व तथा सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण गुणवत्ता को बढ़ाने और मॉनीटर करने संबंधी कार्यों को रखा गया, जिन्हें एस.सी.ई.आर.टी. एवं डी.आई.ई.टी. के साथ मिलकर किया जाता रहा।

इस तरह इतनी योजनाएँ और इतने प्रयासों के बावजूद भी विद्यालयी शिक्षा प्रणाली को प्रभावी नहीं बनाया जा सका और न ही उसे पूर्णरूप से गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सका। इस कारण शिक्षा प्रणाली को एक ऐसे संगठित स्वरूप की ज़रूरत हुई जहाँ इन तीनों योजनाओं एवं अन्य संबंधित पहलुओं का एक साथ समावेश हो जिससे बच्चों की शिक्षा के साथ शिक्षक प्रशिक्षण आदि को एक साथ देखा जा सके। अतः तीनों योजनाओं को सम्मिलित रूप से ‘समग्र शिक्षा’ योजना कहा गया।

समग्र शिक्षा योजना का दृष्टिकोण शिक्षा में सतत विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए प्री-स्कूल से उच्च माध्यमिक स्तर तक समावेशी तथा समान शिक्षा को सुनिश्चित करना है, जिससे कार्य क्षमता और बजट का सही उपयोग किया जा सके। इस तरह केंद्र

सरकार द्वारा राज्य सरकार को शिक्षा का समानीकरण एवं समावेशीकरण के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना भी है।

समग्र शिक्षा योजना के प्रमुख उद्देश्य

समग्र शिक्षा योजना के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- समग्र शिक्षा योजना का प्रमुख उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रावधान है। छात्रों के सीखने के परिणामों में वृद्धि, विद्यालयी शिक्षा में सामाजिक और जेंडर असमानता को दूर कर सभी स्तरों पर समानता और समावेशन सुनिश्चित करना है।
- स्कूली शिक्षा प्रावधानों में न्यूनतम मानकों (indicators) को सुनिश्चित करना, शिक्षा में व्यवसायीकरण को बढ़ावा देना, निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम, 2009 (आर.टी.ई.) कार्यान्वयन में राज्य स्तरीय एस.सी.ई.आर.टी./राज्य शिक्षा संस्थान और जिला स्तर पर डी.आई.ई.टी. के नोडल एजेंसियों के रूप में सुदृढ़ीकरण और उन्नयन में सहायता करना भी इस योजना का एक उद्देश्य है।
- इस योजना का मुख्य लक्ष्य शिक्षा की सार्वभौमिक पहुँच, समानता और गुणवत्ता, शिक्षा के व्यवसायीकरण को और शिक्षक शिक्षा संस्थानों (TIEs) को सुदृढ़ता प्रदान करना है।
- यह योजना केंद्र प्रायोजित योजना के रूप में राज्य स्तर पर विभाग द्वारा एक राज्य कार्यान्वयन सोसाइटी के माध्यम से लागू की जाएगी। राष्ट्रीय स्तर पर, यह योजना एक परियोजना अनुमोदन बोर्ड (PAB) की अध्यक्षता में एक गवर्निंग काउंसिल के अंतर्गत मानव संसाधन विकास मंत्री और स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग

के सचिव की अध्यक्षता में होगी। समग्र शिक्षा योजना कार्यक्रम की मॉनीटरिंग, समानता और गुणवत्ता से संबंधित कार्यात्मक क्षेत्रों में तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए विभाग को भारत के एडसिल (Educational Consultant of India Limited) में तकनीकी सहायता समूह (TSG) द्वारा सहायता दी जाएगी। इस तरह राज्य में विद्यालयी शिक्षा के लिए एक ही योजना लाने की कोशिश की गई है।

समग्र शिक्षा योजना के प्रमुख उद्देश्य

- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रावधान
- विद्यालयी प्रावधान में न्यूनतम मानकों को सुनिश्चित करना
- शिक्षा में व्यवसायीकरण को बढ़ावा देना
- निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 (RTE Act, 2009) को लागू करने में राज्यों की सहायता करना
- शिक्षक प्रशिक्षण हेतु एस.सी.ई.आर.टी./राजकीय शैक्षिक संस्थानों एवं डाइट को नोडल एजेंसी के रूप में मजबूती प्रदान करना
- विद्यालयी शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर समानता तथा समावेश को ध्यान में रखना
- विद्यार्थियों हेतु शिक्षा तथा सीखने के प्रतिफलों में विकास संबंधी प्रावधान
- विद्यालयी शिक्षा के अंतर्गत सामाजिक तथा जेंडर गैप/अंतर को पाटना

- केंद्र और राज्यों के बीच योजना के लिए फंड साझाकरण पैटर्न-8 उत्तर-पूर्वी राज्यों, जैसे— अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा तथा

3 हिमालयी राज्यों के लिए 90:10 के अनुपात में प्रस्तावित किया गया है। जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड और विधानसभा के साथ अन्य सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए फंड साझाकरण पैटर्न 60:40 रखा गया है। इसके अलावा बिना विधानमंडल के संघ शासित प्रदेशों के लिए 100% केंद्र द्वारा प्रायोजित (अक्टूबर, 2015 में प्राप्त केंद्र प्रायोजित योजनाओं के तर्क संगतकरण पर मुख्यमंत्रियों के उप-समूह की सिफारिशों के अनुसार) करने का प्रस्ताव है।

- एकीकृत योजना में दो 'T'— शिक्षक और प्रौद्योगिकी (Teacher and Technology) पर ध्यान केंद्रित करके स्कूल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने पर बल दिया गया है। इस योजना के तहत स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए रणनीति तैयार की जाएगी। यह योजना राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को योजना मानदंडों और उनके लिए उपलब्ध समग्र संसाधन के अंतर्गत अपने अनुसार योजना बनाने और प्राथमिकता देने के लिए लचीलापन देने का प्रस्ताव रखती है। योजना में उद्देश्य मानदंडों के आधार पर, जैसे— छात्रों के नामांकन, प्रतिबद्ध जिम्मेदारियाँ, सीखने के प्रतिफलों और विभिन्न प्रदर्शित संकेतकों आदि के आधार पर निधि आवंटित करने का प्रस्ताव है।
- यह योजना बच्चों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने, विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शिक्षण एवं शिक्षण प्रक्रिया में सुधार करने तथा विद्यालयी शिक्षा पूरी करने में मदद करेगी।

इसके अलावा यह हस्तक्षेपों (interventions) के माध्यम से शिक्षक शिक्षा के एकीकरण द्वारा विद्यालयी शिक्षा में अलग-अलग सहायक संरचनाओं, जैसे — एकीकृत प्रशिक्षण कैलेंडर, अध्यापन में नवाचार, परामर्श और मॉनीटरिंग आदि के बीच प्रभावी अभिसरण और संबंधों (convergence and linkages) की सुविधा प्रदान करेगा।

- यह एकल योजना एस.सी.ई.आर.टी. (SCERT) को लक्ष्य केंद्रित और गतिशील बनाने के लिए सभी सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आचरण और मॉनीटरिंग (mentoring and monitoring) के लिए नोडल एजेंसी बनने में सक्षम करेगी। यह सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों और समाज के सभी वर्गों में अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग द्वारा होने वाले लाभों को पहुँचाने में भी सक्षम होगी।

समग्र शिक्षा योजना के प्रमुख आयाम

इस योजना के तहत बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षकों द्वारा कक्षा कक्ष में ज्यादा से ज्यादा तकनीकी के उपयोग पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, जिसमें प्रस्तावित स्कूल शिक्षा के सभी प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं—

- (i) बुनियादी ढाँचे के विकास सहित सार्वभौमिकरण तथा प्रतिधारण (universal access including infrastructure development and retention)
- (ii) जेंडर और समानता (gender and equality)
- (iii) समावेशी शिक्षा (inclusive education)

- (iv) गुणवत्ता (quality)
- (v) शिक्षकों के वेतन के लिए वित्तीय सहायता (financial support for teachers' salary)
- (vi) डिजिटल पहल(digital initiatives)
- (vii) वर्दी, पाठ्यपुस्तकें इत्यादि सहित आर.टी.ई. एंटाइटलमेंट्स (RTE entitlements including uniforms, textbooks, etc.)
- (viii) प्री-नर्सरी शिक्षा(pre-nursery education)
- (ix) व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education)
- (x) खेल और शारीरिक शिक्षा (Sports and Physical Education)
- (xi) शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षण को सुदृढ़ बनाना(strengthening of teacher education and training)
- (xii) मॉनीटरिंग(monitoring)
- (xiii) कार्यक्रम प्रबंधन (programme management)
- (xiv) राष्ट्रीय घटक(National Component)– केंद्रीय संस्थान, जैसे — एन.सी.ई.आर.टी., नीपा, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., एन.सी.पी.सी.आर., एन.आई.सी., टी.एस.जी. आदि को सम्मिलित किया गया है।

यह प्रस्तावित है कि शैक्षिक रूप से पिछड़ा ब्लॉक (EBB), विशेष फोकस जिलों (SFDs), सीमा क्षेत्रों (Border areas) और 115 योजना के अंतर्गत शामिल जिलों को वरीयता दी जाएगी।

समग्र शिक्षा के मुख्य केंद्र बिन्दु

शिक्षा का समग्र उपागम

स्कूली शिक्षा को प्री-स्कूल से कक्षा 12 तक समग्र रूप में देखा गया।

- पहली बार उच्च माध्यमिक स्तर तथा प्री- स्कूल स्तर को समावेशित किया गया है।
- नवीन उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक स्कूलों की व्यवस्था संयुक्त विद्यालयों के निर्माण के उद्देश्य से करने की कोशिश की गयी है।

प्रशासनिक सुधार

- एकल तथा एकीकृत प्रशासनिक संरचना
- राज्यों को प्राथमिकता के अनुसार योजना में हस्ताक्षर करने हेतु छूट प्रदान करना
- एकीकृत प्रशासन द्वारा स्कूल को निरंतरता के रूप में देखना
- गुणवत्ता सुधार हेतु सीखने के प्रतिफल को आधार मानना

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना

- शिक्षक तथा प्रौद्योगिकी में ध्यान केंद्रित करते हुए शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना
- शिक्षक तथा विद्यालय प्रमुख की क्षमता में विकास करना
- शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार करने की दृष्टि से शिक्षक शिक्षण संस्थानों, जैसे— एस.सी.ई.आर.टी तथा डी.आई.ई.टी., को सशक्त बनाना
- एस.सी.ई.आर.टी को सेवारत एवं सेवा पूर्व प्रशिक्षण हेतु नोडल संस्थान के रूप में रखना जिससे शिक्षक प्रशिक्षण को आवश्यकता आधारित तथा आकर्षित बनाया जा सके।
- पुस्तकालय को मज़बूती प्रदान करने की दृष्टि से स्कूलों को 5000 से 25,000 रु. प्रतिवर्ष अनुदान के रूप में देना है।

- स्कूलों में विज्ञान एवं गणित अधिगम को बढ़ावा देने हेतु राष्ट्रीय आविष्कार अभियान को सहयोग देना है।
- प्राथमिक स्तर पर बुनियादी कौशलों के विकास हेतु 'पढ़े भारत बढ़े भारत' अभियान को सहयोग देना है।

डिजिटल शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना

- 5 साल के भीतर सभी माध्यमिक विद्यालयों में ऑपरेशन डिजिटल बोर्ड को सहयोग करना है।
- स्मार्ट क्लास रूम, डिजिटल बोर्ड तथा डी.टी.एच. चैनल के माध्यम से शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना है।
- डिजिटल कदम, जैसे— शालाकोष, शगुन, शाला सारथी, को मज़बूती प्रदान करने की आवश्यकता है।
- उच्च प्राथमिक से उच्च माध्यमिक स्तर तक आई.सी.टी. के ढाँचे को सुदृढ़ करना है।
- शिक्षकों के कौशल विकास हेतु 'दीक्षा' नामक डिजिटल पोर्टल का अधिकाधिक प्रयोग करना है।

स्कूलों को सुदृढ़ बनाना

- सरकारी विद्यालयों की आधारिक संरचना की गुणवत्ता में सुधार करना है।
- समग्र स्कूल अनुदान जिसकी राशि 14,500–50,000 रु. से बढ़ाकर 25,000 से 1 लाख कर दी गई है वह स्कूलों को बच्चों के नामांकन के आधार पर दी जाएगी।
- स्वच्छता संबंधी गतिविधियों हेतु विशिष्ट प्रावधान 'स्वच्छ विद्यालय' का सहयोग करना है।

बालिका शिक्षा पर बल

- बालिकाओं का सशक्तीकरण करना है।
- कक्षा 6–8 से कक्षा 6–12 तक कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय का उन्नयन करना है।

- उच्च प्राथमिक से उच्च माध्यमिक स्तर तक की बालिकाओं को स्वरक्षा का प्रशिक्षण देना है।
- विशेष आवश्यकता वाली बालिकाओं को कक्षा 1 से 12 तक प्रतिमाह 200 रु. सहायता राशि के रूप में देना। इससे पहले यह केवल कक्षा 9 से 12 तक सीमित थी।
- 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' से संबंधित प्रतिबद्धता को बढ़ाना है।

आर.टी.ई. 2009 का सहयोग

- वर्दी के बँटवारे हेतु राशि 400 से बढ़ाकर 600 रु. प्रति विद्यार्थी प्रति वर्ष कर दी गई है।
- पाठ्यपुस्तकों के आवंटन हेतु राशि 150–250 रु. से बढ़ाकर 250–400 रु. प्रति विद्यार्थी प्रति वर्ष कर दी गई है।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चे हेतु वज़ीफ़े की राशि 3000 से बढ़ाकर 3500 रु. प्रति बच्चा प्रति वर्ष कर दी गई है।
- प्राथमिक स्तर पर आयु उपयुक्त कक्षा में प्रवेश हेतु विशेष प्रशिक्षण देना है।
- स्कूल में सार्वभौमिक पहुँच को सुनिश्चित करने हेतु यातायात सुविधा बढ़ाने के लिए 6000 रु. प्रति बच्चा प्रति वर्ष खर्च करना है।

कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करना

- उच्च प्राथमिक स्तर पर व्यावसायिक कौशल के विकास को बढ़ावा देना है।
- कक्षा 9–12 के लिए व्यावसायिक शिक्षा को पाठ्यक्रम के साथ सम्मिलित करना तथा साथ ही ज्यादा व्यावहारिक बनाना है।
- कौशल विकास पर बल देना है।

शारीरिक शिक्षा तथा खेल पर ध्यान केंद्रित करना

- खेल शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना है।
- प्रत्येक स्कूल को प्राथमिक स्तर पर 5000 रु., उच्च प्राथमिक स्तर पर 10,000 रु. तथा माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर 25000 रु. खेल-कूद की सामग्री खरीदने हेतु दिया जाएगा।
- 'खेलो-इंडिया' को सहयोग करना।

क्षेत्रीय संतुलन में ध्यान केंद्रित करना

- संतुलित शैक्षिक विकास का प्रचार करना।
- शैक्षिक रूप से पिछड़े ब्लॉक (EBBs) से संक्रमित जिलों, विशिष्ट केंद्रित जिलों (SFES), बॉर्डर क्षेत्र तथा नीति आयोग द्वारा चिह्नित 115 महत्वाकांक्षी जिलों को प्राथमिकता देना।
- 'सबका साथ सबका विकास' का प्रचार करना।
समग्र शिक्षा, सरकार का वादा है एक गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने का, जिसमें विभिन्न कौशलों तथा ज्ञान से संबंधित बच्चे सम्मिलित हों जिससे उनका समग्र विकास हो सके। बच्चों को भविष्य में इस क्रियाशील राष्ट्र निर्माण अथवा उच्च शिक्षा लेने के अनुरूप तैयार किया जा सके।

एकीकृत योजना के अंतर्गत आर.टी.ई., 2009

एकीकृत या समग्र योजना, विद्यालय में शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के कार्यान्वयन हेतु राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों को सहयोग करेगी। इस योजना में एक न्यायसंगत और समावेशी गुणवत्ता शिक्षा प्रदान करने की परिकल्पना की गई है जो अग्रलिखित मार्गदर्शक द्वारा निर्देशित की जाएगी—

- (i) शिक्षा का समग्र दृष्टिकोण (Holistic view of education)— इसकी व्याख्या राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में संपूर्ण सामग्री के व्यवस्थित सुधार तथा पाठ्यक्रम, शिक्षक-शिक्षा, शैक्षिक नियोजन एवं प्रबंधन के लिए शिक्षा प्रक्रिया के आवश्यक कार्यान्वयन के रूप में की गई है।
- (ii) साम्यता (Equity)— इसका तात्पर्य समान अवसरों को प्रदान करना ही नहीं है, अपितु ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करने से भी है जिसमें समाज के वंचित वर्ग तथा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, मुस्लिम अल्पसंख्यकों के बच्चे, भूमिहीन कृषि श्रमिक तथा विशेष क्षमता वाले बच्चे, आदि अवसर का लाभ उठा सकें।
- (iii) पहुँच (Access)— यह सुनिश्चित करना ही काफ़ी नहीं है कि विद्यालय निर्दिष्ट दूरी के अंदर सभी बच्चों की पहुँच के भीतर हों बल्कि यह भी आवश्यक है कि यह परंपरागत रूप से बहिष्कृत श्रेणियों, जैसे — अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं सर्वाधिक वंचित समूहों के अन्य वर्ग, मुस्लिम अल्पसंख्यक, बालिकाओं एवं विशेष क्षमता वाले बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं एवं समस्याओं को समझकर शिक्षा के ज्यादा से ज्यादा अवसर सुलभ हों।
- (iv) जेंडर संवेदनशीलता (Gender concern)— लड़कियों को लड़कों के साथ एक कक्षा में बैठाने हेतु सक्षम बनाना मात्र ही पर्याप्त नहीं है अपितु राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986/92 के

परिप्रेक्ष्य में शिक्षा को देखना भी है। अतः यह महिलाओं की स्थिति में बुनियादी परिवर्तन लाने के लिए निर्णायक हस्तक्षेप है।

(v) नैतिक मजबूती (Moral compulsion)—माता-पिता, शिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों तथा अन्य हितधारकों हेतु दण्ड प्रक्रियाओं पर बल डालने के बजाए शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आर.टी.ई.) के माध्यम से नैतिक मजबूती प्रदान करना।

(vi) शिक्षकों का केंद्रीकरण (centrality of teacher)—शिक्षकों को कक्षा-कक्ष के अंदर एवं बाहर शिक्षण हेतु वातावरण तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए, इसके साथ ही वे सभी बच्चों विशेषतया बालिकाओं के लिए समावेशित शिक्षा हेतु वातावरण तैयार करें।

(vii) शैक्षिक प्रबंधन का अभिसरण और एकीकृत प्रणाली (Convergent and integrated system of educational management)—आर.टी.ई. कानून के कार्यान्वयन के लिए पूर्व आवश्यकता है। सभी राज्यों को उस दिशा में तेज़ी से व्यवहार्य रूप से आगे बढ़ना चाहिए।

इस तरह समग्र शिक्षा अर्थात् एकीकृत योजना शिक्षा प्रणाली को एक ऐसा संगठित स्वरूप प्रदान करती है जिसमें इन तीनों योजनाओं एवं अन्य संबंधित पहलुओं का एक साथ समावेश होता है। जिससे बच्चों की शिक्षा के साथ शिक्षक प्रशिक्षण आदि को एक साथ देखा जा सकता है। इस तरह केंद्र सरकार ने शिक्षा का समानीकरण एवं समावेशीकरण के साथ-साथ राज्य सरकार को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने के लिए एक पहल की है।

संदर्भ

कॉनसेप्ट पेपर ऑन “इन्टीग्रेटेड स्कीम फ़ॉर स्कूल एजुकेशन — मर्जिंग द सेंट्रली स्पोसर्ड स्कीम्स ऑफ़ एस. एस. ए., आर.एम. एस.ए., एंड टी.ई.” Samagra.mhrd.gov.in/docs/Letter%20to%20states%20(Final).pdf

केंद्र सरकार का ‘समग्र शिक्षा अभियान’ पोर्टल <https://www.enterhindi.com/samagra-shiksha-abhiyan-portal-mhrd/> पर देखा गया।

कक्षा में पढ़ने की आदत

रजनी*

प्रायः सरकारी स्कूलों की प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में यह देखा जाता रहा है कि इस स्तर पर बच्चों में पढ़ना-लिखना, सीखना-सिखाना तथा पठन जैसे कौशलों का विकास कैसे किया जाए, यह एक गंभीर मुद्दा होता है। कक्षा में बच्चों के कमजोर पठन-बोध को एक 'समस्या' की तरह देखा जाता है। पाठ्य-पुस्तकों में आने वाले बदलावों व *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* के आने के उपरान्त भी पढ़ने को लेकर प्रायः कक्षाएँ संदर्भ रहित व अर्थहीनता के उपागम को अनुसरित करती दिखती हैं, जहाँ पढ़ने की शुरुआत ही अक्षरों के विभाजन से होती है। इन वर्तमान परिस्थितियों में प्राथमिक शालाओं में निस्संदेह बच्चों को रोचक व सार्थक रूप में पढ़ना-लिखना सिखाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य तो है, परंतु कक्षागत स्तर पर बच्चों के सीखने के तरीकों का सूक्ष्म निरीक्षण व सैद्धांतिकी की समझ के साथ कक्षा में होने वाले दैनिक अनुभवों पर चिंतन से यह चुनौती संभवतः सरल हो सकती है। प्रस्तुत लेख में कक्षा तीन में प्रशिक्षु शिक्षण के दौरान हुए कुछ ऐसे ही रोचक अनुभवों के हवाले से बच्चों में पढ़ने की आदतों का विकास किस प्रकार संभव हो सकता है, जैसे विषय पर चर्चा की गई है।

कक्षा तीन में पढ़ाने का अवसर मेरे लिए कई मायनों में चुनौतीपूर्ण था, क्योंकि इस कक्षा तक आते-आते बच्चे एक सटीक परिपाटी पर चलने के आदी हो चुके थे। गृह कार्य के नाम पर बिना समझ के ब्लैकबोर्ड और दूसरी तरह से नकल कर उत्तर लिखने से परेशान हो चुके थे। इस कक्षा में प्रारंभिक शिक्षण के समय बच्चे अकसर पाठ के पूरा होने पर सवाल-जबाब के दौरान मेरी तरफ इस उम्मीद से ताकते थे कि पूछे गए सवाल का जवाब मेरे द्वारा ही ब्लैकबोर्ड पर लिख दिया जाएगा। उस समय बच्चों से सवाल-जवाब की प्रक्रिया में खासी ऊर्जा का दोहन करना होता था। कक्षा

में तकरीबन आधी से ज्यादा संख्या उन बच्चों की थी जिनको यह लगता है कि वे पढ़ना नहीं जानते हैं। इसके साथ ही जो बच्चे पढ़ना जानते हैं उनका कब्जा कक्षा में आगे की बेंचों पर होता था। 'वे बच्चे' जो 'पढ़ना नहीं जानते थे' कक्षा में पीछे बैठा करते थे। अकसर यह बच्चे कक्षा में स्वयं को अलग-थलग रखते थे और कक्षा की चर्चाओं में भी हिस्सा नहीं लेते थे। कक्षा के माहौल में तथाकथित कमजोर बनाम होशियार की श्रेणी बनी हुई थी। कक्षा मिलने के सप्ताह भर बाद सबसे पहला जो काम हमने किया वह यह कि कक्षा में एक किताबी कोना बनाया, जिसमें यही कोई पंद्रह

* असिस्टेंट प्रोफेसर, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110 007

से बीस कहानी की किताबें रखी गई प्रारंभ में कुछ किताबें फाड़ी गई कुछ किताबों के पन्नों पर चित्रकारी की गई परंतु इस सब में जो सबसे ज्यादा ध्यान खींचने वाली बात मेरे लिए थी, वह यह कि कक्षा के वे बच्चे जो अपने आप को 'न पढ़ने वालों' की श्रेणी में रखते थे वे अब किताबों के साथ अपना एक रिश्ता बनाने लग गए थे। जब भी उन्हें मौका मिलता वे किताबों की ओर चले जाते व उन्हें उलट-पलट कर देखने लगते। धीरे-धीरे वे बच्चे उन किताबों पर लिखे अक्षरों को पहचानने की कोशिश करते व अपने दूसरे साथियों तथा मुझसे आकर पूछते कि 'मैडम इसको क्या पढ़ेंगे? इस किताब का क्या नाम है? या इस पर जो लिखा है उसे क्या पढ़ते हैं?' कई बार वे चित्रों की मदद से लिखे हुए का अंदाज़ा लगाते और अकसर अपने अंदाज़े को सही साबित करने के लिए मुझसे पूछने आते कि मैडम क्या यहाँ जो लिखा है उसे हाथी पढ़ेंगे! इसे बिल्ली पढ़ेंगे! आदि-आदि। इस तरह से हमारी कक्षा में अब पढ़ने की शुरुआत और जुगत दोनों होने लगी थी। वे बच्चे जो अब तक पढ़ना जान चुके थे और जो पढ़ने की शुरुआती अवस्था में थे दोनों ही समूह इस जुगत में निरंतर लगे रहते थे। अब बारी थी कक्षा में एक ऐसे सकारात्मक पढ़ने-लिखने के माहौल की जो बच्चों को पढ़ने-लिखने के बहुत से मौके दे। कक्षा में इसके लिए सबसे पहली शुरुआत प्रातःकालीन संदेश (morning message) लेखन से की गई। जिसके लिए बच्चों के रोजमर्रा के जीवन के अनुभवों का प्रयोग किया जाता, जैसे — कक्षा में आते ही बच्चे अकसर अपने पिछले बीते दिन में हुई घटनाओं पर बहुत बात करना चाहते थे। इसके लिए कक्षा में यह एक नियम बनाया गया कि रोज सुबह आते ही हम सभी एक-एक करके कक्षा में अपने सभी साथियों

की बात सुनेंगे। कक्षा में यदि कोई अपनी किसी बात को बताना चाहता है या साझा करना चाहता है तो वह बता सकता है और फिर हम किसी एक बच्चे की कही गई बात को उसके नाम के साथ ब्लैकबोर्ड पर लिखेंगे। शुरुआत में इस प्रक्रिया में बहुत कुछ गड़बड़ हुआ क्योंकि सभी को यह चाव था कि मेरी बात ब्लैकबोर्ड पर लिखी जाए इसलिए कुछ बच्चे अनर्गल कहानियाँ भी बनाते थे और अकसर कक्षा में इस बात को लेकर मतभेद भी पैदा होता था कि किस बच्चे की बात ब्लैकबोर्ड पर आये और किसकी नहीं। समय के साथ-साथ बच्चों को यह भी समझ में आया कि केवल अनर्गल कहानियाँ बनाने से काम नहीं चलेगा, बल्कि एक समय पर कक्षा के बच्चे बड़ी ही तार्किकता और लोकतांत्रिक तरीके से यह तय भी करने लगे कि आज *मोर्निंग मैसेज* में किस बच्चे की बात बहुत रोचक और ज़रूरी थी उसी बात को ब्लैकबोर्ड पर लिखा जाये। जैसे एक दिन एक बच्ची ने कहा कि 'उसने स्कूल के बाहर एक बंदरिया को देखा जिसने अपने छोटे से बच्चे को चिपका रखा था और स्कूल के कुछ बच्चे उसे पत्थर मार रहे थे जिसे देख कर उसे बहुत दुःख हुआ।' कक्षा के बच्चों ने चर्चा के अंत में आपस में यह सहमति जताई कि यही बात ब्लैकबोर्ड पर लिखी जाये। इस बात में एक नैतिक संदेश होने के साथ-साथ एक भाव है कि किसी को अकारण ही तंग किया जाये तो उसे कितना दुःख होता होगा।

बच्चे अकसर कक्षा में इस तरह की संवेदनाओं से गुज़रते हैं इसलिए संभवतः वे यह जानते हैं कि इस बात का कितना महत्त्व है! बच्चे अकसर अपनी लिखी हुई बात को अपने नाम के साथ पढ़ते और जो बच्चे अभी पढ़ने की शुरुआती अवस्था में थे वे लिखी हुई बात पर हुई चर्चा से लिखे हुए संदेश में

चिह्नों को पढ़कर समझने का प्रयास करते और बोली गई बात के लिखित रूप के साथ एक रिश्ता बनाने का प्रयास करते। इस तरह बच्चे अब पढ़ने की प्रक्रिया से जुड़ने लगे थे। कक्षा में एक दूसरी चीज यह भी की गई कि बच्चों द्वारा कक्षा शिक्षण के दौरान पढ़ी गई कहानियों, कविताओं व अन्य रोचक कहानियों, किस्से, अखबारी बाल चुटकुले, कोई ज़रूरी खबर, पहेलियाँ व चित्र कहानियों के पोस्टर कक्षा की दीवारों पर लगाये गए। समय के साथ अब हमारी कक्षा लिखित सामग्री से समृद्ध हो चुकी थी।

बच्चे अकसर बहुत पुरानी हो चुकी कहानियों व अन्य पोस्टरों को हटाने की माँग करते तो कई बार उन्हें कुछ कहानियाँ इतनी पसंद आतीं कि वे बार-बार उसे पढ़ते। बच्चे सामान्यतः अपने खाली समय में दीवारों पर लगी किसी चित्र कहानी को अपने शब्द देते तो किसी अधूरी छूटी हुई कहानी को पूरा करने के लिए अंदाज़ा लगाते व स्टोरी बोर्ड व पोस्टरों पर बनी खाली जगह में अपनी बात लिखने का प्रयास करते। वे जोड़े या समूह में चित्र कहानियों पर चर्चा करते व अपने-अपने अंदाज़े को साझा करते। कक्षा का यह प्रिंट समृद्ध परिवेश बच्चों को पढ़ने व लिखने के लिए उत्साहित करने में कारगर सिद्ध हुआ। पढ़ने के लिए यह उत्साह बच्चों को पढ़ने की प्रक्रिया में जुड़े रहने के लिए प्रेरित करता था जो पढ़ना सीखने के लिए बेहद ज़रूरी है। कक्षा पुस्तकालय में रखी गई अलग-अलग प्रकार की किताबें, जैसे — बिग बुक्स, रोमांचक कहानियाँ, पंचतंत्र की कहानियाँ, तेनालीरामन की कहानियाँ व चित्र कहानी आदि प्रायः कक्षा में आने वाले भिन्न-भिन्न स्तर के बच्चे, जैसे — वे बच्चे जो कक्षा तीन के हिसाब से अभी पढ़ना सीखने को लेकर संघर्ष कर रहे थे, चित्र किताबों या बिग बुक्स की मदद

से चित्र में व्याप्त संदर्भ से अक्षरों का अंदाज़ा लगाते थे। कई बार वे अपनी स्वयं की व्याख्या के हिसाब से ही कहानी को पढ़ते थे। इस प्रक्रिया में भले ही शब्दों का उच्चारण सटीक न हो पर कहानी पर उनकी एक समझ बनती थी।

पुस्तकालय कोने में लगे बोर्ड पर अपने नाम के साथ उस दिन पढ़ी गई किताब का नाम लिखते और अपने दूसरे साथियों से भी चर्चा करते। अपने एक साथी से किसी किताब की रोचकता में कही गई बातें अकसर पहले बच्चे को उस अमुक किताब को पढ़ने के लिए प्रेरित करती थी। इस प्रकार कक्षा में लिखित सामग्री से युक्त परिवेश, बाल साहित्य का प्रयोग व बच्चों के सीखने की गति और तरीके के प्रति शिक्षिका का सकारात्मक रवैया कक्षा के बच्चों में पढ़ने की आदतों को उत्पन्न करने तथा विकसित करने में कारगर साबित हो रहा था। इसके साथ ही बच्चों से उनके द्वारा पढ़ी गई कहानी पर कक्षा में चर्चा भी, बच्चों को कहानी को समझकर अपनी बात रखने के अवसर देती थी व उस कहानी में निहित किसी समस्या तथा द्वंद पर सोच पाने, कल्पना कर पाने और हल ढूँढ़ पाने में सहयोग देती थी। बच्चे अपने द्वारा पढ़ी गई कहानी पर अकसर अपनी बात भी लिख कर लाते व कक्षा शिक्षिका होने के नाते मुझसे उन विचारों को साझा करते। कहानी पर अपने विचार अभी लिखित रूप में कम ही दिए जाते थे, परंतु खाली समय पाते ही वे पढ़ी गई किताब पर मुझसे खूब चर्चा करते व अपने प्रत्युत्तरों (responses) को साझा करते। उन किताबों में कई कहानियाँ ऐसी भी थीं जिन्हें मैं नहीं पढ़ पाई थी। यह बात मैं बच्चों को बता दिया करती थी इस पर वे मुझे भी अपने द्वारा पढ़ी गई कहानी या

कविता को पढ़ने के लिए प्रेरित किया करते। इस तरह बच्चों में एक आत्मबोध भी विकसित हो रहा था जिसमें कक्षा के प्रति, किताबों के प्रति व अन्य लोगों के प्रति उनकी क्या ज़िम्मेदारी है, इसकी समझ शामिल थी।

निष्कर्ष

अंततः यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक शालाओं में बच्चों को पढ़ना-लिखाना सिखाना एक सार्थक व सकारात्मक माहौल में ही संभव है जहाँ बच्चों को पढ़ने-लिखने के लिए समृद्ध अवसर दिए जाएँ। लिखित सामग्री से भरपूर कक्षाएँ बच्चों को लगातार

पढ़ने की प्रक्रिया से जोड़े रखती हैं व लिखित सामग्री और मौखिक भाषा के बीच एक संबंध स्थापित करने में सहायक होती हैं। इसके साथ ही कक्षा में रोचक व सौंदर्यपूर्ण साहित्य की उपलब्धता बच्चों में किताबों और साहित्य के प्रति पढ़ने का रुझान भी पैदा करती हैं। पढ़ने को लेकर बच्चों का यह रुझान ही उनमें समझकर पढ़ने की योग्यता को विकसित करने में भी मदद करता है। साथ ही कक्षा में शिक्षिका का बच्चों के सीखने के प्रति एक सकारात्मक रवैया भी बच्चों में पढ़ने की इच्छा व स्वभाव को लेकर प्रेरणा का स्रोत बनता है।

संदर्भ

कौशिक, सोनिका. 2008. 'व्हाट इज़ रीडिंग'. *रीडिंग फ़ॉर मीनिंग*. रीडिंग डेवलपमेंट सेल, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली रोशनलास्ट, लूइस. 2005. *मेकिंग मीनिंग विद् टेक्सट*. हीनमैन. प्रोटस्मांउथ, न्यू हैम्पशायर. स्मिथ, फ्रैंक. 1971. *अंडरस्टैंडिंग रीडिंग*. एल.ई.ए. न्यू जर्सी.

प्रभावी शिक्षण के लिए संप्रेषण कौशल

उषा शुक्ला*

कक्षागत अंतःक्रिया में अधिगम का एक बहुत बड़ा अंश आज भी भले ही वैयक्तिक न हो, किंतु व्यक्ति आधारित अवश्य है। परंपरागत रूप में यह अंश शिक्षक के द्वारा संप्रेषित किया जाता है। किंतु वर्तमान संदर्भ में आज यदि संप्रेषण की तकनीक को समझकर उसका उपयोग किया जाए तो बच्चों के लिए केवल शिक्षक ही नहीं वरन् साथी, समुदाय एवं अन्य व्यक्तियों के साथ किया गया संपर्क-संवाद सीखने की अनंत संभावनाओं के द्वार खोल सकता है। संप्रेषण की सार्थकता न केवल संवाद को प्रभावी बनाती है, बल्कि हस्तांतरित किए गए ज्ञान को चिरकाल तक स्थायी बनाने में अहम भूमिका भी निभाती है। प्रस्तुत लेख कक्षा-शिक्षण में संप्रेषण की भूमिका को बताता है।

कक्षा-शिक्षण में संप्रेषण की भूमिका

शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं छात्राध्यापकों में संप्रेषण दक्षता के विकास के लिए एक समन्वित प्रारूप विकसित करना आवश्यक है जिसके अंतर्गत ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति और संबंधित व्यवहारों का सुधारात्मक प्रयास अपेक्षित है। जिसके लिए उच्चारण, शब्द-चयन, प्रवाह, आवश्यक विराम, उतार-चढ़ाव, स्वर, प्रसन्नता, हावभाव, संकेत, बैठने या खड़े होने के ढंग, नवीन तकनीक के प्रयोग का अभ्यास करना आवश्यक है।

कक्षा में संप्रेषण की स्थितियाँ

शिक्षण, विद्यार्थियों में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन लाने की प्रक्रिया है। आज का अध्यापन केवल सूचना अदायगी नहीं रहा, वरन् एक आनंददायी माहौल में जीवन हेतु शिक्षा उपलब्ध कराने की प्रक्रिया है। इस



शाब्दिक



अशाब्दिक



कायिक/सांकेतिक

प्रक्रिया के माध्यम से न केवल भावी पीढ़ी को ज्ञान से संपन्न किया जाता है वरन् सामाजिकता, चारित्रिक विकास और सर्वतोन्मुखी प्रतिभा से परिपूर्ण करने के लिए आवश्यक प्रयास भी किए जाते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कक्षा-कक्ष में शिक्षक एवं विद्यार्थी की पारस्परिक अंतःक्रिया का विशेष महत्त्व है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार रचनात्मक परिप्रेक्ष्य में सीखना ज्ञान के निर्माण की एक प्रक्रिया है। विद्यार्थी सक्रिय रूप से पूर्व प्रचलित विचारों में उपलब्ध सामग्री/गतिविधियों के अनुसार अपने लिए ज्ञान की रचना करते हैं। बच्चों के संज्ञान

* वरिष्ठ व्याख्याता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, जबलपुर

में उनके अध्यापकों की भूमिका विशेष महत्वपूर्ण है। प्रभावी शिक्षक ही इस ज्ञान की रचना में अपना सक्रिय योगदान दे सकता है।

प्रभावी शिक्षक तथा प्रभावी शिक्षण का स्वरूप क्या हो?

यह प्रश्न जितना पुरातन है उतना ही विवादास्पद भी रहा है। सामान्यतः यह कहा जा सकता है कि एक उत्साही, समर्पित और संवेदनशील व्यक्ति जो प्रत्येक बच्चे में निहित संभावनाओं को पूर्ण विस्तार दे सके, प्रभावी शिक्षक कहलाता है। इस शिक्षक द्वारा जो भी प्रयास संपादित किए जाते हैं प्रभावी शिक्षण का स्वरूप धारण करते हैं। सामान्यतः प्रभावी शिक्षण से आशय है —

- सीखने के अनुकूल माहौल जुटाना
- ज्ञान को साझे अनुभव के रूप में प्रस्तुत करना
- भाषा की समझ एवं दक्षता हासिल करना
- मूल्यांकन को सतत शैक्षिक प्रक्रिया मानना
- व्यावसायिक-उन्मुखीकरण का प्रयास
- बच्चों की आकांक्षाओं या क्षमताओं को समझकर तदनु रूप प्रयास करना
- बच्चों में विविध मूल्यों या कौशल का विकास करना
- बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रयास करना

इन समस्त स्थितियों को तभी विकसित किया जा सकता है जब एक शिक्षक एवं विद्यार्थी में प्रगाढ़ तादात्म्य स्थापित हो। यहाँ यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि कक्षा में संदेशों के आदान-प्रदान की एक दोषरहित और साझी प्रक्रिया की स्थापना हम सबका ध्येय है। वस्तुतः प्रभावी शिक्षण पूर्णरूपेण

रचनात्मक अधिगम की अपेक्षा रखता है और रचनात्मक अधिगम के अंतर्गत संज्ञानात्मक-शिक्षार्जन, बहुविध-व्याख्या और बहुविध-अभिव्यक्तियों के लिए द्विमुखी शक्तिशाली संप्रेषण की तीव्र आवश्यकता महसूस की गई है।

संप्रेषण की चर्चा क्यों ?

कक्षा चाहे दूसरी हो या बारहवीं, बच्चे हों अथवा तरुण या किशोर ... यह सर्वविदित है कि आज के परिप्रेक्ष्य में लोगों में सुनने की दक्षता न्यून है। इसका कारण चाहे जो भी हो पर इतना अवश्य है कि हमें आज अपनी बात पहुँचाने के लिए कुछ कारगर कदम उठाने पड़ेंगे। हमारा चिरंतन लक्ष्य यही है कि विद्यार्थी द्वारा सुने गये अंश का अधिकतम प्रतिशत न केवल ग्रहण किया जा सके, अपितु चिरकाल तक मस्तिष्क में विद्यमान रहते हुए जीवन के व्यावहारिक क्षेत्र में प्रयोग में लाया जा सके। इससे संप्रेषण की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है। आज का बच्चा समर्पित श्रोता मात्र नहीं रहा बल्कि, संचार उपकरणों के आकर्षण-जाल में बँधा-बँधा सा हमारी कक्षा में प्रवेश करता है और इस बच्चे तक अपनी बात पहुँचाने के लिए हमें पूरी तैयारी के साथ कक्षा में प्रवेश करना ही होगा।

सामान्यतः संप्रेषण का व्यावहारिक कौशल निम्नलिखित स्थितियों पर निर्भर है—

- व्यक्ति की उपलब्धि उसकी संज्ञानात्मक दक्षता के अनुसार होती है।
- कार्यात्मकता का विस्तार होता है।
- प्रभावशीलता में वृद्धि होती है।
- संदर्भ के अनुकूल प्रस्तुति की जा सकती है।

वॉल्टन (1966) ने शिक्षण के चार सिद्धांत प्रतिपादित करते समय संप्रेषण सिद्धांत को विशेषतः

निरूपित किया है। विद्वानों का विचार है कि जो कुछ भी बाह्य ज्ञान बच्चे को दिया जाता है उसकी ग्रहणशीलता संप्रेषण पर ही अवलंबित है। इसका तात्पर्य यह है कि समुचित संप्रेषण पाठ को प्रभावी ही नहीं बनाता; वरन् उससे स्थायी स्मृति का विस्तार भी होता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि संप्रेषण एक प्रक्रिया होने के साथ-साथ एक सिद्धांत भी है। शिक्षकों, प्रशिक्षकों एवं छात्राध्यापकों में संप्रेषण दक्षता के विकास के लिए एक समन्वित प्रारूप विकसित करना आवश्यक है। ताकि उनके द्वारा हस्तांतरित किया गया ज्ञान अधिकांश प्रतिशत तक विद्यार्थियों या प्रशिक्षार्थियों तक पहुँच सके। वस्तुतः कक्षा-कक्ष प्रबंधन एक त्रिध्रुवी प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के दौरान संदेशों का आदान-प्रदान जितने अधिक प्रभावी ढंग से होगा वह उतना ही कारगर होगा। एक कक्षा-कक्ष औपचारिक संवादों के आदान-प्रदान पर निर्भर नहीं होता, बल्कि जीवंत संबंधों की स्थापना पर अवलंबित होता है जिसके अंतर्गत ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति, अभिप्रेरणा और संबंधित मानवीय व्यवहारों का सुधारात्मक प्रयास भी शामिल होता है। विद्यालयों या संस्थानों में इन जीवंत संबंधों की स्थापना के लिए उच्चारण, शब्द-चयन, प्रवाह, आवश्यक विराम, उतार-चढ़ाव, स्वर, प्रसन्नता, हावभाव, संकेत, बैठने या खड़े होने के ढंग, नवीन तकनीक के प्रयोग का औचित्य भी सिखाया जाता है जो सबसे अधिक आवश्यक है। यह औचित्य अनायास उत्पन्न नहीं होता। भारत के शिक्षकों को नवीन शिक्षण तकनीक की जानकारी देने के साथ-साथ संप्रेषण के सही तरीकों का अभ्यास करना हमारा ध्येय है। प्रभावी प्रशिक्षक या शिक्षक होने के लिए आवश्यक है कि संप्रेषण कौशल का विस्तार किया जाए।

जॉन डिवी के अनुसार संप्रेषण अनुभवों के आदान-प्रदान की वह प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप दोनों सहभागियों में लाभ के लिए परिवर्तन होता है।

वहीं एडगर डेल के अनुसार संप्रेषण ऐसी प्रक्रिया है जिसमें परस्पर लाभ के लिए विचारों तथा भावनाओं का आदान-प्रदान होता है।

कक्षा-शिक्षण में संप्रेषण की भूमिका

- विद्यार्थियों को ज्ञान का हस्तांतरण करने में सहायक
- विद्यार्थियों की अंतर्निहित रुचियों का विकास
- विद्यार्थियों की अवधारणात्मक समझ का विकास
- विद्यार्थियों की स्थायी स्मृति का विस्तार
- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक
- शिक्षक-विद्यार्थी संबंध का प्रतिस्थापन
- विद्यार्थी-विद्यार्थी संबंधों को प्रगाढ़ बनाने में सहायक
- शालागत अंतरवैयक्तिक संबंधों का विकास

कक्षागत संप्रेषण के आधारभूत बिंदु

- शिक्षक को पर्याप्त विषय-वस्तु संबंधी ज्ञान होना चाहिए।
- पर्याप्त आत्मविश्वास आवश्यक है।
- भाषायी दक्षताएँ— श्रवण, वाचन, पठन, लेखन आदि में पटुता ज़रूरी है।
- कक्षाध्यापन में दृष्टांत, उदाहरण, तर्क, तथ्य आदि का प्रयोग करना आवश्यक है।
- शिक्षक के द्वारा समुचित प्रविधि का चयन किया गया हो।

- विषय-वस्तु का हावभाव या अभिनयात्मकता के द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया हो।
- भाव और संवेग का प्रयोग किया गया हो साथ ही साथ विषय-वस्तु विस्तार में उनका सहारा लिया गया हो।

संप्रेषण के तरीके

एक ऐसी क्रिया अथवा ढंग जिसके माध्यम से शिक्षक (सुविधादाता) अपनी सूचनाओं, विचारों युक्तियों और अभिवृत्तियों को विद्यार्थियों तक पहुँचाता है। इस प्रकार संप्रेषण के माध्यम निम्नलिखित हो सकते हैं—

- वाचिक (शब्द, विचार, मत, कथन, तर्क आदि)
- लिखित (लिखित सूचनाएँ, पत्र, कथा, प्रसंग आदि)
- आंगिक/सांकेतिक (भाव, मुद्रा, हस्त-संचालन, नेत्र-संकेत, खड़े होने का ढंग, संवेग, पैरों का संचालन)
- तकनीक-आधारित (टेलीफोन, फ़ैक्स, मेल, मैसेज)

संप्रेषण दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच मौखिक, लिखित, सांकेतिक या प्रतीकात्मक माध्यम से विचार एवं सूचनाओं के प्रेषण की प्रक्रिया है। संप्रेषण हेतु संदेश का होना आवश्यक है। संप्रेषण में पहला पक्ष प्रेषक (संदेश भेजने वाला) तथा दूसरा पक्ष प्रेषणी (संदेश प्राप्तकर्ता) होता है। संप्रेषण उसी समय पूर्ण होता है जब संदेश मिल जाता है और उसकी स्वीकृति या प्रत्युत्तर दिया जाता है।

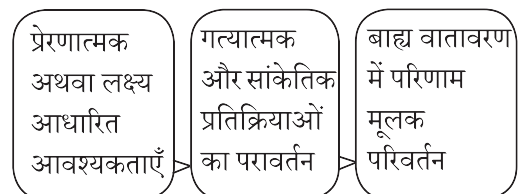
बोले गये संप्रेषण के पर्यायवाची के रूप में मौखिक संप्रेषण प्रयोग नहीं करते। अतएव, मौखिक ध्वनियाँ जो कि शब्द नहीं मानी जातीं,

जैसे कि घुरघुराना या शब्दरहित गायन या गुनगुनाना आदि अशाब्दिक हैं। संकेत भाषा तथा लेखन को सामान्यतः शाब्दिक संप्रेषण का रूप माना जाता है, क्योंकि दोनों में शब्दों का इस्तेमाल होता है। यद्यपि वाणी की तरह दोनों में पैराभाषीय तत्व हो सकते हैं एवं जो प्रायः अशाब्दिक संदेशों में दिखलायी देते हैं। अशाब्दिक संप्रेषण किसी भी माध्यम द्वारा हो सकता है। अशाब्दिक संप्रेषण (non-verbal communication) से तात्पर्य सामान्यतः शब्द रहित संदेशों को भेजने एवं प्राप्त करने की संप्रेषण प्रक्रिया से है। अर्थात् भाषा ही संप्रेषण का एकमात्र माध्यम नहीं है, कुछ अन्य माध्यम भी हैं। इस प्रकार के संप्रेषण के लिए ‘अवाचिक संप्रेषण’, ‘वाचेतर संप्रेषण’, ‘अशाब्दिक संचार’ आदि शब्दों का भी प्रयोग होता है।

क्या संप्रेषणशीलता विकसित की जा सकती है?

सन् 1969 में आर्गेल (Argyle) ने स्पष्ट किया कि संप्रेषण कौशल का विकास अन्य क्रियाओं की भाँति योजनाबद्ध रूप से किया जा सकता है। उनके अनुसार, यह एक सुसंगठित और समन्वित गतिविधि है जिसका विकास किया जा सकता है और जो श्रृंखलाबद्ध रूप में संवेदनात्मक, स्नायविक और क्रियात्मक यंत्र रचना के रूप में प्रकट होती है।

आर्गेल का मॉडल

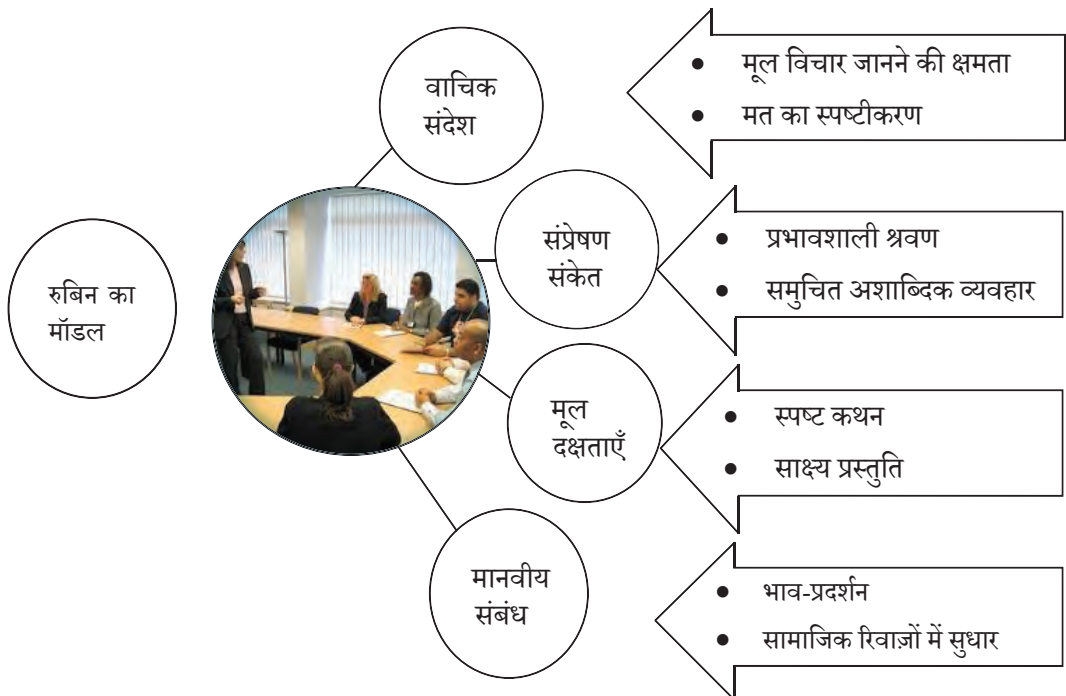


इसके अतिरिक्त प्रभावशाली संप्रेषण हेतु स्वतंत्र व्यावहारिक प्रयास के क्षेत्र इस प्रकार हो सकते हैं — उच्चारण, शब्द-चयन, प्रवाह, आवश्यक विराम, उतार-चढ़ाव, स्वर, प्रसन्नता, हावभाव, संकेत, बैठने या खड़े होने के ढंग का नियमित रूप से अभ्यास करना आवश्यक है।

रुबिन (Rubin) का विचार इनसे भिन्न नहीं है। उन्होंने संप्रेषणात्मक सक्षमता और कौशल को निम्नलिखित क्षेत्रों से संबंधित माना है (चित्र देखें)। एक संप्रेषणशील व्यक्ति कुछ गुणों के आधार पर पहचाना जा सकता है और संभवतः सतत प्रयत्न एवं अभ्यास के द्वारा इन्हीं गुणों को विकसित कर किसी व्यक्ति में संप्रेषण की शक्ति का विकास किया जा सकता है —

हार्गी आदि (1981) ने संप्रेषण संबंध कौशल की कसौटी निर्धारित करने की चेष्टा कुछ परिस्थितियों के आधार पर की है। अगर व्यावहारिक रूप में समझा जाए तो उनके अनुसार सूचनाओं या ज्ञान को अधिकाधिक प्रतिशत तक ग्रहणकर्ता (बालक) तक पहुँचाना ही संप्रेषण है। उन्होंने इसके लिए निम्नलिखित संसूचक निर्धारित किए हैं—

- अशाब्दिक संपर्क — सामान्यतः विद्यार्थी हाव-भाव, सिर हिलाने या आँखों के संकेत के माध्यम से प्रेरित हो सकते हैं।
- पुनर्बलन — यह क्रिया पाठ का मंतव्य सभी बच्चों तक पहुँचाने में सहायक होती है।
- प्रतिक्रिया — पाठ के संदर्भ में प्रतिक्रियाओं को आमंत्रित किया जाए एवं उनका सही समाधान



किया जाए तो उनका स्थायी-स्मृति विस्तार संभव हो सकेगा।

- भूमिका निर्धारण — एक अच्छा शिक्षक पूर्व से ही यह सुनिश्चित कर लेता है कि किस गतिविधि के संदर्भ में उसकी भूमिका क्या एवं किस प्रकार की होगी एवं उसे किस प्रकार कार्य रूप में परिणत किया जा सकता है।
- घनिष्टता — यदि शिक्षक-छात्र संबंधों में घनिष्टता हो तो वह संप्रेषण को काफी हद तक प्रभावित करती है और उसका अनुकूल प्रभाव पड़ता है।
- व्याख्या — संबंधित पदों की आवश्यकतानुरूप व्याख्या करना समय-समय पर आवश्यक हो जाता है, ताकि विद्यार्थियों की विषयवस्तु के संबंध में स्थायी और स्पष्ट धारणा बन सके।
- अवधान खींचना — कुछ विशेष शब्द, क्रियाएँ, संकेत या उदाहरण प्रस्तुत किए जाने आवश्यक हैं, जो ध्यानाकर्षण में सहायक हों और पाठ का प्रभाव बढ़ाने में कारगर साबित हो सकें।
- व्यक्तिगत विचार-विमर्श — आवश्यकतानुसार विचार-विमर्श न केवल विद्यार्थियों की रुचि का विस्तार करता है, बल्कि पाठ को प्रभावी भी बनाता है।
- समस्या प्रकटीकरण — कोई भी पाठ जो समस्या के रूप में प्रस्तुत किया गया हो और समाधान के एक अंश के रूप में आगे बढ़ाया गया हो, सदैव प्रभावकारी सिद्ध होता है।
- संप्रेषण कौशल का विकास — यह एक समन्वित प्रक्रिया है जिसमें विषयवस्तु संबंधी ज्ञान, अभिव्यक्ति कौशल, हाव-भाव और व्यक्तित्व की प्रभावशीलता संप्रेषण के लिए अत्यावश्यक

है। संप्रेषण कौशल का विकास करने के लिए एक सोची समझी रणनीति के तहत प्रयास करना आवश्यक है। जो मूलभूत दक्षताओं पर आधारित है—

श्रवण

वाचन

पठन

लेखन

सन् 1971 में एम.हिल्डब्रैंड ने संप्रेषण कौशल के विकास के लिए जिन तरीकों या प्रयासों का उल्लेख किया है उनका प्रयोग प्रभावी संप्रेषण के लिए आवश्यक है।

संगठन और स्पष्टता प्रस्तुतीकरण में स्पष्टता लाने के लिए निम्न बिंदु अपेक्षित हैं —

- पाठ की विधिवत पूर्व-तैयारी करना आवश्यक है अर्थात् उस पाठ से संबंधित सभी तथ्यों, जानकारियों एवं आवश्यक सामग्री को पहले से ही जुटा लिया जाए।
- कठिन अंश का सरलीकरण करने के लिए कक्षाध्यापन में दृष्टान्त, उदाहरण, तर्क, तथ्य आदि का प्रयोग करना आवश्यक है।
- विषय-वस्तु विस्तार के विभिन्न तरीके कभी-कभी दुरूह मालूम पड़ते हैं इन स्थितियों में व्यावहारिक उदाहरण देकर प्रश्न पूछते हुए आसानी से आगे बढ़ा जा सकता है।
- समय-समय पर आवश्यक सहायक-सामग्री का प्रयोग करना आवश्यक है।
- संपूर्ण पाठ योजना शिक्षण प्रतिमानों को ध्यान में रखकर बनाई गई हो।

- पाठ्यांश को स्मरणीय बनाने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि जो कुछ भी प्रस्तुत किया जाए उसमें व्यवहारिक क्षेत्र के जीवंत उदाहरणों को शामिल किया गया हो।

विश्लेषण

कक्षा-कक्ष अंतःक्रिया में विश्लेषण और विमर्श का विशेष महत्त्व है जिसके लिए आवश्यक है —

- विषय या क्षेत्र पर अधिकार या अनायास ही नहीं आ जाता इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक संबंधित अंशों के बारे में सभी उपलब्ध स्रोतों के माध्यम से अध्ययन करें। इस सबके लिए स्वाध्याय की एक लंबी परंपरा अपेक्षित है।
- विषयवस्तु को ग्राह्य बनाने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक स्वतः ही शिक्षण में आनंद का अनुभव करें।
- कक्षा-कक्ष प्रबंधन में गत्यात्मकता का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। कुर्सी पर लगातार बैठे या स्थिर खड़े हुए शिक्षक और बेंचों पर बंधे हुए विद्यार्थियों में संप्रेषण की मात्रा कम ही होती है।
- प्रेमपूर्ण व्यवहार प्रस्तुत की गई विषयवस्तु को प्रभावशाली बना देता है। यद्यपि अनेक मनोवैज्ञानिकों ने तथ्यों की प्रभावात्मकता बढ़ाने के लिए नकारात्मक व्यवहार का प्रभाव देखने की कोशिश भी की है।
- आवश्यकतानुसार संकेत या हावभाव आदि का प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है।

प्रायोजित संप्रेषण कौशल विकास

प्रायोजित संप्रेषण कौशल विकास के अंतर्गत संदर्शक प्रयोजना के अनुसार संप्रेषण विकास का प्रयास कर

सकते हैं, जैसे — कुछ गपशप के क्षण या कोई भूमिका के लिए प्रेरित करना।

(क) संदर्शक या समूह अंतःक्रिया

प्रेरक जब समूह को किसी अंतः क्रिया के द्वारा प्रेरित करता है।

- उद्दीपक-आधारित कथोपकथन — एक विषय, वस्तु या स्थिति को उद्दीपन हेतु प्रस्तुत कर संप्रेषण का माध्यम बनाया जा सकता है।
- प्रत्यक्ष या क्रम अंतःक्रिया — उसी समय उपस्थित प्रत्यक्ष पदार्थों या स्थिति का क्रमिक विश्लेषण करने की ओर प्रेरित करना।
- साहस बढ़ाना या स्वीकारोक्ति — संप्रेषण कौशल विकास के लिए संदर्शक के प्रेरणादायक वाक्यों के साथ-साथ स्वीकारोक्ति भी कभी-कभी आवश्यक हो जाती है, जैसे यह कहा जाए कि कभी-कभी मैं अपनी बात स्पष्ट नहीं कर पाता है।
- चातुर्य या प्रेरणा — प्रेरणादायक बातों द्वारा प्रोत्साहित करते हैं।
- आलोचना या अफवाह — तत्कालीन कथन/स्थिति का विचार करना।

(ख) संदर्शक या व्यक्तिगत या शिक्षार्थी अंतःक्रिया

संदर्शक अपने समूह के साथ अंतः क्रिया करते हुए कुछ कथनों या उपकथनों के माध्यम से मूल्यांकन करने के बाद प्रोत्साहित करते हैं।

- स्पष्ट मूल्यांकन प्रविधि — शिक्षार्थियों को स्पष्ट सुझाव दिए गए हों और बीच-बीच में गतिविधि द्वारा मूल्यांकन भी किया जाए जैसे समूहों में विषय विशेष पर परिचर्चा करवाने के बाद समूहवार प्रस्तुतीकरण एवं मूल्यांकन हो।

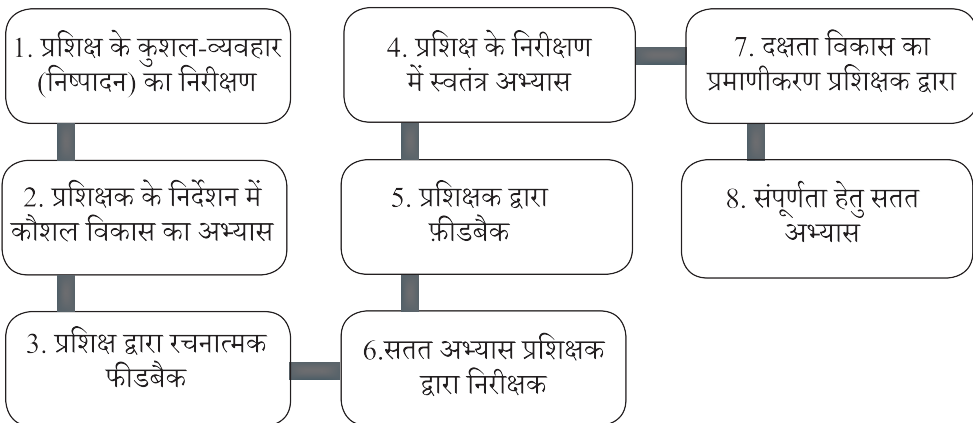
- स्रोत खोजना या सुधार के सुझाव — संदर्शक किसी वक्ता या संवादाता का उदाहरण देकर उनकी शैली की समालोचना करते हुए सुधार हेतु प्रेरित कर सकते हैं। इस प्रकार भी उदाहरण दे सकते हैं कि अमुक व्यक्ति के बोले गए वाक्य में भी प्रभाव तो है, लेकिन वह वाक्य के अंतिम पद धीरे से बोलता है आदि।

एक संस्थान में प्रशिक्षक की देखरेख में संप्रेषण कौशल विस्तार प्रक्रिया को कैसे संपादित किया जाए। यह क्रमशः नीचे दिए गए चित्र के माध्यम से समझा जा सकता है —

जिज्ञासु मनुष्य है जिसने संचार माध्यमों के आकर्षण का भली-भाँति अनुभव कर लिया है। इस बच्चे के विकास की बागडोर प्रभावी शिक्षकों के हाथों में ही सौंपी जा सकती है।

यदि भली-भाँति संप्रेषण हो तो संभवतः शिक्षण भी प्रभावी हो सकेगा। एक कक्षा-कक्ष औपचारिक संवादों के आदान-प्रदान पर निर्भर नहीं होता, बल्कि जीवंत संबंधों की स्थापना पर अवलंबित होता है। जिसके अंतर्गत ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति, अभिप्रेरणा और संबंधित मानवीय व्यवहारों के सुधारात्मक प्रयास भी शामिल होते हैं। विद्यालयों या संस्थानों में इन जीवंत संबंधों की स्थापना

आर्गेल का मॉडल



इसके अतिरिक्त प्रभावशाली संप्रेषण हेतु स्वतंत्र व्यावहारिक प्रयास के क्षेत्र उच्चारण, शब्द-चयन, प्रवाह, आवश्यक विराम, उतार-चढ़ाव, स्वर, प्रसन्नता, हावभाव, संकेत, बैठने या खड़े होने के ढंग, नवीन तकनीक के प्रयोग का औचित्य भी सिखाया जाता है जो सबसे अधिक आवश्यक है। यह औचित्य अनायास उत्पन्न नहीं होता। भारत के शिक्षकों को नवीन शिक्षण तकनीक की जानकारी देने के साथ-साथ संप्रेषण के सही तरीकों का अभ्यास करना हमारा ध्येय है।

के लिए उच्चारण, शब्द चयन, प्रवाह, आवश्यक विराम, उतार-चढ़ाव, स्वर, प्रसन्नता, हावभाव, संकेत, बैठने या खड़े होने के ढंग, नवीन तकनीक के प्रयोग का औचित्य भी सिखाया जाता है जो सबसे अधिक आवश्यक है। यह औचित्य अनायास उत्पन्न नहीं होता। भारत के शिक्षकों को नवीन शिक्षण तकनीक की जानकारी देने के साथ-साथ संप्रेषण के सही तरीकों का अभ्यास करना हमारा ध्येय है।

संदर्भ

- एन.सी.ई.आर.टी. 2005. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.
- जोन, एडेअर. 2010. ट्रेनिंग फ़ॉर कम्युनिकेशन. मैरूडोनाल्ड, लंदन.
- तिवारी, एन.वी. 1995. ए ट्रेनिंग पैकेज ऑन डेवलपिंग कम्युनिकेशन स्किल. टी.टी.आई, भोपाल.
- बरलो, डी.के. 2001. दी प्रोसेस कम्युनिकेशन — एन इंटरोडक्शन टू थ्योरी एंड प्रैक्टिस. रीनेहार्ट प्रेस, सैन फ्रांसिस्को.
- भटनागर, ए. बी., मीनाक्षी भटनागर और अनुराग भटनागर. 2014. अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, उत्तर प्रदेश.

बच्चों की शिक्षा में शिक्षक-अभिभावक संबंध की भूमिका एक विश्लेषण

अखिलेश यादव*

प्रस्तुत शोध पूर्णतः प्रारंभिक शिक्षा (कक्षा 1 से 8) को केंद्रबिंदु में रखकर किया गया है। शोध में शोधार्थी ने बतलाया है कि बच्चों की शिक्षा में अभिभावक-शिक्षक संबंध का अच्छा होना बच्चों की शिक्षा के लिए सकारात्मक होता है। शोध में वर्णित शिक्षक-अभिभावक संबंध से शोधार्थी का आशय है—अभिभावकों एवं शिक्षकों के मध्य संपर्क से जब हमारे मन में एक शिक्षक का दृश्य चित्रित होता है तब शिक्षक की क्या अभिधारणा होती है क्या हम शिक्षक को पाठ्यचर्या एवं पुस्तक से बढ़ा कक्षीय ज्ञान प्रदाता के रूप में देखते हैं। प्रायः यह देखा गया है कि जब भी विद्यालय ने बच्चों को घर में अपने अभिभावक के साथ पढ़ने के लिए प्रेरित किया, तो ऐसा सामने आया कि उन्हें उन बच्चों के मुकाबले अधिक फ़ायदा हुआ है जो सिर्फ़ विद्यालयों में ही शिक्षा प्राप्त करते हैं। बच्चों की भाषा विकास में उसके परिवार का महत्वपूर्ण योगदान होता है। रायपुर के प्राथमिक विद्यालय के अवलोकन के पश्चात् लेखक ने पाया कि विद्यालय में नियमित (दो माह के अंतराल पर) शिक्षक-अभिभावक संपर्क कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। जिसमें अभिभावकों के सहयोग से बच्चों के शैक्षिक बाधक तत्वों की पहचान कर उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाता है एवं बच्चों के पालन-पोषण के मुद्दों पर चर्चा की जाती है। साथ ही अभिभावकों की मदद से कैसे बच्चों में पढ़ने की संस्कृति विकसित की जा सकती है, लेख में इस पर भी चर्चा की गयी है। बच्चों के कक्षा ज्ञान को अभिभावकों की मदद से वास्तविक जीवन से जोड़ा एवं उपयोग किया जा सकता है। अंत में कहा जा सकता है कि एक बच्चे के जीवन में दो महत्वपूर्ण स्तंभ शिक्षक एवं अभिभावक होते हैं जिनके मध्य सकारात्मक संबंध का होना अति आवश्यक होता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में कहा गया है कि उर्वर एवं सुदृढ़ शिक्षा का सृजन सदैव बच्चे की भौतिक व सांस्कृतिक मिट्टी में होता है, उसी में उसकी जड़ें जमी होती हैं तथा उसका पोषण माता-पिता,

शिक्षकों, सहपाठियों व समुदाय के साथ अंतःक्रिया के माध्यम से होता है। अभिभावक, परिवार प्रणाली के महत्वपूर्ण घटक हैं। वे अपने बच्चों के वयस्क होने तक उनकी देखरेख की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी निभाते हैं।

* शोधार्थी (पी.एच.डी.), केंद्रीय शिक्षा संस्थान (शिक्षा शास्त्र विभाग), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

परिवार बच्चों को सामाजिक बनाने की प्रक्रिया बड़े हद तक पूरी करता है और उसके मानसिक विकास को भी प्रभावित करता है। इस नज़रिये का समर्थन विभिन्न मानवशास्त्रीय अध्ययनों और शोधों में भी किया गया है। परिवार के सदस्यों के जेंडर के आधार पर उनकी भूमिका निर्धारित करने का काम भी परिवार करता है। वह उनके आपसी व्यवहार, अंतरसंबंध, समुचित सामाजिक रवैये आदि को भी स्थापित करता है। परिवार संदर्भों का एक ऐसा आधारभूत ढाँचा तैयार करता है, जिसकी मदद से बच्चा समाज को देखता-समझता है।

बच्चा एक तरफ स्कूल में औपचारिक शिक्षा और दूसरी ओर अपने घर में एक अलग तरह की शिक्षा प्राप्त करता है और अक्सर अपेक्षाकृत गहरी शिक्षा उसके अभिभावक और उसका पारिवारिक माहौल देते हैं। बच्चों का शिक्षकों से असंवाद की स्थिति के कारण बचपन से ही बच्चों के मन में जाने-अनजाने एक द्वंद्व पैदा हो जाता है जो अक्सर पूरी ज़िंदगी किसी न किसी रूप में उनके साथ रहता है। इस संवादहीनता या अपर्याप्त संवाद के कई कारण हैं। इनके कुछ तो व्यावहारिक संगठनात्मक कारण हैं और कुछ स्पष्ट रूप से उन संस्कारों का हिस्सा हैं, जिन्हें देख-समझ कर, प्रयास करके, बातचीत करके दूर किया जा सकता है। व्यावहारिक कारणों में मुख्यधारा के स्कूलों में छात्रों की भीड़ भी एक कारण है। इस असंवाद की स्थिति को अभिभावक-शिक्षक संबंध के माध्यम से दूर किया जा सकता है।

शिक्षक-अभिभावक संबंध के मायने

अभिभावकों की भागीदारी और विद्यार्थी की सफलता के बीच सकारात्मक संबंध होता है। अपने बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों या परिवार की हिस्सेदारी किसी

भी अन्य सुधार कार्यक्रम की अपेक्षा कहीं ज़्यादा असरदार होती है। शिक्षकों को अभिभावक-अध्यापक साझेदारी का महत्त्व समझते हुए अभिभावकों को उनके बच्चों की शिक्षा में भागीदार बनाना चाहिए। शिक्षक के तौर पर उसे यह जानना चाहिए कि अभिभावकों का सहयोग आप कैसे प्राप्त कर सकते हैं। भारत में सर्व शिक्षा अभियान जैसे सरकारी कार्यक्रम के तहत विद्यालय के प्रबंधन के लिए ग्राम शिक्षा समिति तथा अभिभावक-अध्यापक संघ जैसे ढाँचों को सुनिश्चित किया गया। गाँव के सभी वर्गों के प्रतिनिधियों को साथ लेकर ये संस्थाएँ प्राथमिक विद्यालयों के कामकाज और उनकी सुविधाओं की देखरेख करती हैं। इस तरह वे विभिन्न वर्गों से आने वाले सामाजिक या शारीरिक तौर पर वंचित बच्चों की शिक्षा संबंधी ज़रूरतों को लेकर जागरूकता पैदा करने के काम में स्थानीय समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित कर पाती हैं। ऐसे बच्चों के माता-पिता अपने बच्चों की पढ़ाई में दिलचस्पी लेने के लिए प्रेरित होते हैं और विद्यालय की शैक्षणिक प्रक्रिया में सांस्कृतिक तथा पारंपरिक तौर पर अपना योगदान दे पाते हैं। नरेश लाल शाह (2013) ने अपने लेख 'समुदाय को सरकारी शिक्षा पर भरोसा है' में शिक्षक-अभिभावक संबंध के संदर्भ में बतलाते हैं कि शिक्षकों की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि किस तरह से बच्चों के अभिभावक घर पर बच्चों की सहायता करें। समय पर उनको कापियाँ, पेंसिल दें और बच्चों को पढ़ने के लिए घर पर प्रेरित करें। इस हेतु इन्होंने बतलाया कि राजकीय प्राथमिक विद्यालय, मथोली, चिन्याली सौड की विद्यालय प्रबंध समिति एवं अभिभावकों के मध्य संवाद कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। जिसमें

अधिकांशतः अभिभावक ग्रामीण पृष्ठभूमि से संबंध रखते हैं। इनको बतलाया गया कि बच्चे की घर पर उचित देखभाल के माध्यम से शिक्षा का उपयुक्त वातावरण बनाया जा सकेगा। कभी-कभी विद्यालय ही अभिभावकों से संवाद हेतु गाँवों में चला जाता है। जिसका फ़ायदा यह हुआ कि जो अभिभावक विद्यालय नहीं आ पाते हैं उनसे भी शिक्षक संपर्क स्थापित कर पाते हैं और बच्चों की शिक्षा से जुड़े मुद्दों को बच्चों के परिवार के साथ चर्चा करते हैं।

विद्यालयी शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी के मामले में कोलमैन रिपोर्ट एक महत्वपूर्ण कदम था। इस रिपोर्ट में पहली बार स्वीकार किया गया कि बच्चों की शिक्षा तथा उनकी उपलब्धियों में परिवार का सबसे अहम स्थान है। यह रिपोर्ट 1960 के दशक में आई थी। तब से लेकर आज तक इस बारे में जितने भी अध्ययन हुए, उन सबमें कुछ ऐसा ही परिणाम सामने आया है। इससे पहले यही माना जाता रहा था कि विभिन्न विद्यालयों में बच्चों की उपलब्धियों के उच्च मानक विद्यालय के संसाधनों, अध्यापकों तथा अन्य कारकों के परिणामस्वरूप हैं। कोलमैन रिपोर्ट अमेरिका के 1900 प्राथमिक विद्यालयों में कराए गए सर्वेक्षण पर आधारित थी। इस अध्ययन में यह भी बताया गया था कि परिवारों की श्रेणी तथा उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति से परे, जब कभी विद्यालयों ने बच्चों को घर में अपने माँ-बाप के साथ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया, उन्हें ऐसे बच्चों के मुकाबले कहीं ज़्यादा फायदा हुआ जो सिर्फ़ विद्यालयों में अपने अध्यापकों के साथ पढ़ते थे। यह भी देखा गया कि बच्चे के विद्यालयों में दाखिला लेने के पहले ही उसकी जातीय तथा सामाजिक श्रेणी की उपलब्धियों का असर उस पर हावी हो चुका होता

है। इस दरम्यान उसकी शैक्षणिक प्रवीणता घटित हो चुकी होती है। इस परिवर्तन के पीछे जो कारण सुझाए गए हैं, उनमें एक यह है कि परिवारजन कहीं ज़्यादा समय तक बच्चे को पढ़कर सुनाते रहते हैं। अल्प आय परिवारों में बच्चे को औसतन 25 घंटे पढ़कर सुनाया जाता है, जबकि मध्यम आय वाले परिवारों में यह औसत 1700 घंटे का देखा गया है।

शिक्षकों-अभिभावकों की भागीदारी और बच्चे की उपलब्धियों में सकारात्मक संबंध की पुष्टि के लिए पर्याप्त साक्ष्य हैं —

- माता-पिता द्वारा बच्चों को कहानियों की किताबें पढ़कर सुनाने से बच्चों की भाषा परिष्कृत होती है और उनमें पुस्तक प्रेम जागता है।
- माता-पिता द्वारा बच्चों को ज़्यादा से ज़्यादा कहानियाँ सुनाने से उनकी साक्षरता योग्यता में वृद्धि होती है।
- माता-पिता द्वारा बच्चों के साथ बिताई गई अवधि का सीधा असर बच्चे के विकास और विद्यालय की उपलब्धियों पर पड़ता है।

यूनेस्को (1990) ने अपने दस्तावेज़ में शिक्षक-अभिभावक संबंध के महत्त्व को बतलाया, जो निम्नलिखित है—

1. परिवार की जीवन शैली यदि जानी-पहचानी होती है तो वह बच्चे को विद्यालय में ज़्यादा और बेहतर सीखने लायक बनाती है।
2. अभिभावक और बच्चे के बीच का संबंध यदि भाषा की दृष्टि से समृद्ध और भावात्मक समर्थन देने वाला होता है तो इससे बच्चे को लाभ होता है।

3. यदि माता-पिता अपने बच्चे को सुरक्षित जीवन देते हैं, उन्हें समय का सही उपयोग करने के लिए प्रेरित करते हैं और साथ-साथ पारिवारिक जीवन के सामान्य अंग के तौर पर उनके साथ अनुभव बाँटते हैं तो इससे बच्चे विद्यालय में बेहतर प्रदर्शन कर पाते हैं।
 4. माता-पिता यदि अपने बच्चों के सामने मानक स्थापित करते हैं तो बच्चे उन मानकों को गंभीरता से ग्रहण करते हैं।
 5. बच्चे अपने माता-पिता और शिक्षकों के बीच होने वाली दो-तरफा बातचीत से भी लाभान्वित होते हैं।
 6. विद्यालय से अभिभावकों के संबंध का मतलब है कि उनका संबंध अपने बच्चे से तो बना रहता ही है, शैक्षणिक संस्थान के अलावा वह दूसरे बच्चों के अभिभावकों के साथ भी बना रहता है।
 7. घर के माहौल को बेहतर बनाने के लिए माता-पिता को कई तरह से प्रशिक्षित किया जा सकता है और अक्सर इसके सकारात्मक परिणाम निकलते हैं।
 8. विद्यालय को चाहिए कि बच्चे के साथ परिवार को जोड़ने के मामलों में वह हरेक परिवार के साथ अलग-अलग तरह की रणनीति अपनाए, क्योंकि विद्यालय के साथ सभी परिवारों के संबंध अलग-अलग तरह के ही होते हैं।
- हाल के वर्षों में विद्यालय में अभिभावकों की भागीदारी को एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक रणनीति के तौर पर देखा जाने लगा है। प्रत्येक विद्यालय को चाहिए कि वह ऐसी साझेदारी को बढ़ावा दे जो अभिभावकों की भागीदारी को बढ़ाने के साथ ही बच्चे के सामाजिक, मानसिक और शैक्षणिक विकास में सहयोगी हो।

शैक्षणिक सुधारों के इस दौर में अनेक शोध अध्ययनों और वर्षों के अनुभवों से जो यह बात सामने आई है कि अभिभावकों तथा परिवार की भागीदारी से विद्यार्थी की उपलब्धि और उसकी सफलता बढ़ती है। पालीवाल रश्मि (2010) शिक्षक-अभिभावक संबंध के महत्त्व के संदर्भ में बतलाती है कि बच्चों की शिक्षा में प्रगति हेतु बच्चों को प्रोत्साहन अति आवश्यक है, बच्चों की कमजोरियाँ क्या हैं यह अभिभावक से संपर्क साधकर ज्ञात किया जा सकता है। साथ ही अगर किसी बच्चे के अभिभावक अशिक्षित होते हैं तब इसका असर बच्चे की शिक्षा पर भी पड़ता है, किंतु इस असर को काफ़ी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। जिसका एक बेहतरीन माध्यम है शिक्षक एवं अभिभावक का समय-समय पर आपसी संपर्क बनाये रखना।

एक शोध के दौरान प्राथमिक विद्यालय, रायपुर, गाज़ीपुर, उत्तर प्रदेश का अवलोकन करने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी के साथ शिक्षकों से विचार-विमर्श करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वहाँ यह जानकर अच्छा लगा कि विद्यालय के द्वारा किए जाने वाले कार्य समुदाय एवं अभिभावकों की भागीदारी के बिना नहीं किये जाते हैं। जैसाकि प्राथमिक विद्यालय, रायपुर के शिक्षक बतलाते हैं कि हमारे विद्यालय में समय-समय पर अभिभावकों से संपर्क स्थापित किया जाता है एवं बच्चों की शिक्षा में बाधक तत्वों की पहचान कर दूर करने के उपायों पर अभिभावकों से चर्चा की जाती है जिससे बच्चों की शिक्षा एक निरंतर प्रवाह के साथ बढ़ती रहे। शिक्षक बतलाते हैं कि विद्यालय में प्रत्येक दो महीने में एक बार शिक्षक-अभिभावक संपर्क कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। कार्यक्रम में अग्रलिखित कार्य किये जाते हैं —

1. बच्चों की शैक्षिक प्रगति, कमजोरियों एवं शिक्षा में बाधक तत्वों (आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षिक) और दूर करने के उपायों के संबंध में अभिभावकों से परिचर्चा की जाती है। जो अभिभावक आर्थिक रूप से कमजोर हैं उनके बच्चों को विभिन्न माध्यमों से सहायता प्रदान की जाती है, साथ ही उन अभिभावकों से चर्चा भी की जाती है जो सामाजिक रूप से पिछड़े समाज से संबंधित हैं। उनको समझाया जाता है कि बच्चों का श्रम कम से कम मात्रा में घर के कार्यों में इस्तेमाल किया जाये, क्योंकि सामाजिक रूप से पिछड़े समाज के लोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने, कारण परिवार के सभी सदस्य मिलकर आर्थिकोपार्जन करते हैं। इस कारण बच्चों को घर पर पढ़ने के लिए उपयुक्त समय एवं साधन नहीं मिल पाते। यह समस्या शिक्षक-अभिभावक संबंध के माध्यम से दूर कि जा सकती है।
2. बच्चों के पालन-पोषण से संबंधित मुद्दों पर अभिभावकों से चर्चा की जाती है, जैसे—बच्चों को कैसे नकारात्मक वातावरण से बचाया जाए, बच्चों को खेलने के उचित अवसर भी प्रदान किये जाएँ आदि। ऐसा देखा गया है जब बच्चों को स्वतंत्रता से दूर रखा जाता है तब उनमें कुंठा की भावना ग्रसित हो जाती है इस प्रकार के बच्चे परिवार से दूर हो जाते हैं यह प्रवृत्ति समाज के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है।
3. कक्षा ज्ञान एवं वास्तविक जीवन-आधारित ज्ञान के संदर्भ में अभिभावकों से चर्चा की जाती है कि अभिभावकों के छोटे-छोटे प्रयास के माध्यम से कक्षा ज्ञान को जीवन से जोड़ा जा सकेगा,

जैसे—घर पर नाप तौल एवं वजन करने की प्रक्रिया को गणित की कक्षा से जोड़ने से बच्चों को गणित सरल तरीके से समझ में आ जाएगी। इन प्रक्रियाओं में अभिभावक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि अभिभावक बच्चों को नाप तौल एवं वजन करने की प्रक्रिया की जानकारी कराकर शिक्षकों की मदद करते हैं। कक्षा ज्ञान को वास्तविक जीवन से नहीं जोड़ा गया तो बच्चों के मन में कक्षा ज्ञान के प्रति भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है।

4. अभिभावकों की मदद से बच्चों में पढ़ने की संस्कृति विकसित करने का प्रयास किया जाता है। अभिभावकों को समझाया जाता है कि पढ़ने की संस्कृति के विकास में आपका सबसे महत्वपूर्ण योगदान है। आप अपने बच्चों को पढ़ने के लिए रोचक पुस्तकें, पत्रिकाएँ आदि उपलब्ध कराएँ साथ ही घर के पढ़े-लिखे लोग बच्चों के साथ पुस्तकें लेकर बैठ जाएँ, जिससे बच्चों में भी पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित होगी।

शिक्षक एक बच्चे की तरफ इशारा करते हुए बतलाते हैं कि शुभम जब सात वर्ष का था तो उसके पिता स्कूल में दाखिला कराने लाये थे और शुभम के पिता ने बतलाया था कि शुभम को पाँच वर्ष की उम्र में एक इंग्लिश मीडियम स्कूल में दाखिला करा दिया था। दो वर्ष तक उसने उस स्कूल में शिक्षा प्राप्त की, किंतु शुभम की शिक्षा में कोई प्रगति नहीं हुई, क्योंकि शुभम की मानसिक स्थिति सामान्य बच्चों के समान नहीं थी। शुभम के सिखाने की गति सामान्य बच्चों से धीमी है, किंतु इस प्रकार के बच्चों को सामान्य कक्षा में सिखाया जा सकता है। आज शुभम चौथी कक्षा

में पढ़ाई कर रहा है वह भी सामान्य बच्चों के साथ, ऐसा संभव हुआ उसके अभिभावकों एवं हम शिक्षकों के मिले-जुले प्रयास से हम शिक्षकों ने शुभम के अभिभावकों को समझाया “शुभम की थोड़ी अतिरिक्त देखभाल कर उसकी शैक्षिक स्थिति को सुधारा जा सकता है। आप घर पर अतिरिक्त समय में शुभम को अध्यापन कार्य कराएँ जिससे शुभम की शैक्षिक स्थिति में सुधार लाया जा सकेगा।” (पाण्डे, 2010)। शिक्षक अभिभावक के संबंध संदर्भ में बतलाती हैं कि पहली कक्षा के शिक्षकों के लिए बहुत ज़रूरी है कि बच्चों के अभिभावकों से उनका संवाद लगातार बना रहे क्योंकि गृह शिक्षक के रूप में अभिभावकों की भूमिका को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है। बच्चों के संबंध में शिक्षक और गृह शिक्षक यानि अभिभावक दोनों सजग रहें और दोनों का ही पर्याप्त स्नेह और उचित मार्गदर्शन बच्चे को मिले तब पहली कक्षा के बच्चों के लिए विद्यालयी जीवन सुखद अहसास बन सकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जायेगा कि किसी बच्चे के जीवन में उसके अभिभावक, शिक्षक, परिवार एवं

आस-पास के समाज का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अभिभावक एवं शिक्षक ही वह कड़ी है जिनके सानिध्य में बच्चा सबसे अधिक समय व्यतीत करता है। किसी भी बच्चे की माता उसकी प्रथम शिक्षिका होती है। अभिभावक एवं शिक्षक के सानिध्य में ही बच्चा समाजीकरण की प्रक्रिया सीखता है। किसी भी बच्चे के भाषा विकास में परिवार की अति महत्वपूर्ण भूमिका होती है, खासकर बच्चे के शुरुआती जीवन के वर्षों तक। बच्चों की शिक्षा में अभिभावक एवं शिक्षक महत्वपूर्ण स्तंभ होते हैं, अगर ये दोनों महत्वपूर्ण स्तंभ आपस में नहीं जुड़ पाएँगे तो बच्चों का शैक्षिक विकास सुचारु रूप से नहीं हो पायेगा। अभिभावकों की विद्यालयी शिक्षा में भागीदारी बढ़ाने में अभिभावक संपर्क कार्यक्रम एवं ग्राम शिक्षा समिति की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। जैसाकि *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में बतलाया गया है कि ‘सभी स्कूलों को इस प्रकार के तरीके खोजने की आवश्यकता है जिससे विद्यालय में अभिभावकों की ज़्यादा से ज़्यादा भागीदारी बढ़ सके।’

संदर्भ

- एन.सी.ई.आर.टी. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली.
- पाण्डे, लता. 2010. ‘पहली कक्षा का शिक्षक’. *प्राथमिक शिक्षक*, अंक 3-4, वर्ष 34. एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली.
- पालीवाल, रश्मि. 2010. ‘राह बनाते शिक्षक’. *प्राथमिक शिक्षक अंक 3-4*, वर्ष 34. एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली.
- अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी. 2018. *लर्निंग कर्व* (शिक्षक, विशेषांक). अंक 14. अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, बेंगलुरु.
- यूनेस्को. 1990. ‘रीडिंग सैम — पैरेंट्स एंड लर्निंग’. यूनेस्को — *इंटरनेशनल एकेडमी ऑफ़ एजुकेशन*, इंटरनेशनल ब्यूरो ऑफ़ एजुकेशन. पेरिस.
- शाह, नरेश लाल. 2013. ‘समुदाय को सरकारी शिक्षा व्यवस्था पर भरोसा है’. *प्रवाह*. अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन. उत्तराखण्ड स्टेट इंस्टीट्यूट, देहरादून. उत्तराखण्ड

बाल संसद के रास्ते

प्रमोद दीक्षित 'मलय'*

विद्यालय वह स्थान होता है जहाँ किसी बच्चे के अनगढ़ व्यक्तित्व को गढ़ देश के श्रेष्ठ नागरिक के रूप में विकसित करने की दृष्टि और सोच काम करती है। बच्चों में यह चेतना कक्षाओं के अंदर केवल विषयगत समझ को विस्तार देने से ही संभव नहीं होती, बल्कि अन्य गतिविधियों, क्रियाकलापों और विद्यालयी संस्थाओं या समितियों में सक्रिय भागीदारी से भी पनपती है। प्रार्थना सभा, सांस्कृतिक आयोजन, खेलकूद प्रतियोगिताएँ, मीना मंच, विविध प्रोजेक्ट कार्य, दीवार पत्रिका निर्माण आदि इसमें मददगार होते हैं। 'बाल संसद' भी विद्यालय का एक ऐसा ही आयोजन है जिसके माध्यम से बच्चों में लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति निष्ठा, आस्था एवं श्रद्धाभाव, सामूहिकता, अभिव्यक्ति कौशल, निर्णय लेने की क्षमता, समस्याओं की पहचान और समाधान, मानवीय मूल्य और सौंदर्यबोध पैदा होता है। प्रस्तुत आलेख में बाल संसद के माध्यम से बच्चों में उपजी समझ और उनके कार्यों से विद्यालय एवं गाँव में हुए बदलावों को साझा करने का एक विनम्र प्रयास है।

वर्ष 2012, फ़रवरी का महीना रहा होगा। मेरा एक विद्यालय में पहली बार जाना हुआ। विद्यालय का मुख्य द्वार खुला था, मैं अंदर चला गया। अध्यापकों के पढ़ाने की आवाज़ें बाहर तक आ रही थीं। बीच-बीच में घम्म्....घम्म्....., चटाक्....चट्ट..... चटाक् की पीड़ादायक ध्वनियाँ दंड-भय रहित शिक्षा प्रदान करने के राज्य के दिशा-निर्देशों पर अट्टहास करती सुनाई पड़ रही थीं। चप्पल-जूते करीने से बाहर रखे हुए थे। कोई भी बच्चा परिसर में दिखायी नहीं पड़ रहा था। एक अपरिचित को परिसर में घूमते देखकर प्रधानाध्यापक मुझे अपने कमरे में ले गये। परस्पर परिचय और औपचारिकताओं के बाद हम दोनों ने शिक्षा अधिकार और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की

रूपरेखा 2005 पर चर्चा की। उनका मानना था कि ये सब किताबी बातें हैं, इनका विद्यालय की वास्तविक दुनिया से कोई लेना-देना नहीं है। यदि स्कूलों में दंड का प्रयोग न करें तो अनुशासन खत्म हो जायेगा। छात्र-शिक्षक संबंधों के मैत्रीपूर्ण होने और बच्चों को सोचने-समझने एवं स्वयं कुछ करने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराने पर उनका कतई विश्वास नहीं था। मैं सोचने को विवश था कि मैं किसी विद्यालय में हूँ या किसी कैदखाने में, जहाँ दाखिल हुआ बच्चा छह घंटों के लिए कैदी है, बंधक है। जहाँ प्रेरणा, हास्य, उल्लास, उमंग, उत्साह, प्यार-दुलार, ममता, समता, कल्पना, तर्क एवं सृजन का संसार नहीं, बल्कि घुटन, रुदन, पीड़ा, नैराश्य, कलुषता और विषमता का राज

* सह-समन्वयक, ब्लॉक संसाधन केंद्र नरैनी, बांदा, 79/18, शास्त्री नगर, अतर्रा 210 201

है। जहाँ बच्चे की मासूमियत, जिज्ञासा, इंद्रधनुषी कल्पनाओं और संवेदनाओं की रोज़ हत्या की जाती है। जहाँ कदम-कदम पर वर्जनाएँ हैं, कोमल चित्त पर थोपी गई परंपरागत सीखें हैं। इन छह घंटों में वह कितनी बार मरता और जीता है। मैंने बच्चों से मिलने की इच्छा व्यक्त की। वे मुझे यह जताते हुए कक्षाओं में ले गये कि इस विद्यालय के अनुशासन की चर्चा विभाग में भी है।

मैं एक कक्षा, शायद 7वीं थी, में घुसा तो सभी बच्चों ने यंत्रवत् खड़े होकर अभिवादन किया। उस समय पढ़ाये जा रहे विषय पर कुछ बातचीत की और प्रश्न पूछे। अधिकांश बच्चों ने लगभग सही जवाब दिये। मैंने कुछ कॉपियाँ लीं। देखा, बच्चे वही रटी-रटाई बातें शब्दशः बोल रहे थे जो कुछ उनमें लिखाया गया था। शिक्षक की सोच हावी थी, बच्चों का अपना कुछ भी नहीं था। प्रधानाध्यापक जी के चेहरे पर विजेता के भाव तैर रहे थे। जब मैंने प्रश्नों को थोड़ा कल्पना आधारित किया तो बच्चे गर्व से फूले जा रहे थे जैसे शिक्षा के क्षेत्र में कोई अद्भुत क्रांतिकारी नवाचार कर दिया हो। कुछ बोल नहीं पाये। लेकिन बच्चे सचमुच प्यारे थे। मैंने बच्चों से उनके बारे में बातें करने की कोशिश की। पहले तो बच्चे बोलने में झेंप रहे थे। वे एक बार मुझे तो दूसरी बार अपने प्रधानाध्यापक जी को देख रहे थे। यह बच्चों के मन-मस्तिष्क में प्रधानाध्यापक जी का खौफ़ था या ऐसी बातचीत की प्रक्रिया शायद उनके लिए पहली बार हो रही थी। मैंने प्रधानाध्यापक जी से मुझे बच्चों के साथ अकेला छोड़ देने का अनुरोध किया तो वे अनमने भाव-से बाहर चले गये। अब कक्षा में मैं और बच्चे थे। हमने मिलकर एक गीत गाया। बातें पुनः प्रारंभ हुईं। अब वातावरण सहज होने पर वे अपनी

बातें थोड़ा खुलकर कहने लगे थे और फिर तो बातों का सिलसिला घर-परिवार, खेत-खलिहान, दोस्तों, खेल-खिलौने, पढ़ाई-लिखाई, स्कूल से होते हुए नदी, तालाब, पहाड़, बादल, फूल, तितली, पक्षी और उस मरकहे साँड़ तक भी पहुँच गया, जो स्कूल आने के तालाब वाले रास्ते पर बरगद और पीपल के झुरमुट में अकसर मिलता है। बच्चों ने यह भी बताया कि पड़ोस के गाँव बल्लान में हर साल मकर संक्रान्ति पर लगने वाले चम्भू बाबा का मेला में जाना उन्हें अच्छा लगता है, क्योंकि वहाँ गोल घूमने वाला झूला होता है और जादूगर का खेल भी। विद्यालय तो मैं अनायास बिना किसी योजना के चला आया था, लेकिन अब मेरे दिमाग में योजना पकने लगी थी। मन ही मन मैंने योजना पर काम करने का निश्चय कर लिया था। तभी बातचीत के क्रम में मैंने बच्चों से बाल संसद की चर्चा कर दी। वे इसके बारे में बिल्कुल नहीं जानते थे। लेकिन उनमें उत्सुकता थी, वे बाल संसद के बारे में अधिकाधिक जानकारी जानना चाहते थे। मैंने हर संभव जानकारी देने की कोशिश की। बच्चों ने बाल संसद के गठन की इच्छा व्यक्त की, लेकिन यह भी बताया कि प्रधानाध्यापक जी ऐसे किसी काम को पसंद नहीं करते। वे तो बस पढ़ाई की ही बातें करते हैं। बाद में मैंने प्रधानाध्यापक जी से बाल संसद के बारे में विस्तार से बातें कीं। वे ऐसी किसी संस्था के बारे में नहीं जानते थे। मैंने उनके विद्यालय में बाल संसद बनाने का अनुरोध किया। वे इस प्रस्ताव से सहमत न थे, उन्हें अनुशासन खत्म हो जाने का डर था। लेकिन मेरे बार-बार आग्रह पर इस शर्त के साथ तैयार हुए कि विद्यालय की शैक्षिक व्यवस्था और अनुशासन पर कोई आँच नहीं आनी चाहिए। मैंने

वादा किया ऐसा कुछ नहीं होगा, बल्कि बाल संसद के बन जाने से विद्यालय बेहतर हो जायेगा। लेकिन मुझे एक अध्यापक का सहयोग चाहिए जो बच्चों के साथ काम करेंगे। इस पर एक विज्ञान शिक्षक इसके लिए सहर्ष तैयार हो गये। अब प्रत्येक कक्षा से 4-5 बच्चों को चयन करना था। बच्चों से बातचीत करते समय कुछ बच्चे मेरी समझ में आ गये थे। हम दोनों ने मिलकर तीनों कक्षाओं से 15 बच्चे का चयन किया जाए, जिनमें 8 लड़कियाँ थीं। यह करते-करते काफ़ी समय निकल गया था। अब मुझे जाना था इसलिए शिक्षक एवं बच्चों से कुछ आवश्यक बातें साझा कर अगले सप्ताह आने का वादा कर मैंने अपनी राह पकड़ी। बीच के इन 7-8 दिनों में वह शिक्षक साथी बाल संसद को समझने की दृष्टि से एक बार मेरे साथ बैठे और बहुत सारी बातें कीं।

अगले सप्ताह जब मैं विद्यालय पहुँचा तो बाल संसद में चयनित बच्चे एक कमरे में गोल घेरे में अपने शिक्षक के साथ बैठे अनौपचारिक बातचीत करते हुए शायद मेरा इंतज़ार कर रहे थे। इस एक सप्ताह में बच्चों में काफ़ी बदलाव देख रहा था। अब उनमें झिझक न होकर एक आत्मविश्वास झलक रहा था। आज काफ़ी काम करना था। सर्वप्रथम परिचय हुआ फिर बातें शुरू हुईं। आज बच्चे ज्यादा खुले हुए थे। थोड़े से प्रोत्साहन से मुद्दे पर अपनी समझ अनुसार विचार रखने लगे। आम सहमति से पदों का बँटवारा भी हुआ। अध्यक्ष, प्रधानमंत्री, शिक्षा, उद्यान, जल, रखरखाव, सूचना, क्रीड़ा, सांस्कृतिक, भोजन, पुस्तकालय, कार्यालय आदि विभागों के मंत्री और उनकी टोलियाँ बनाई गईं। कोशिश की गई कि प्रत्येक बच्चा किसी न किसी टोली का हिस्सा बने। उनके कार्यों के बारे में भी बताया

गया। बैठक करने, प्रस्ताव रखने, उस पर अपनी बात कहने और लिखने के बारे में परामर्श दिया। पिछले एक सप्ताह के उनके अनुभव भी सुने गये। इस तरह उस विद्यालय में बाल संसद का काम धीरे-धीरे बढ़ने लगा। अब बच्चों से मेरा भी एक अपनेपन का रिश्ता जुड़ने लगा था। इस काम में आनंद आने से मैं भी बहुत सारी बातें सीख पा रहा था। इस कारण मैं भी महीने में लगभग दो-तीन बार स्कूल हो आता। इस प्रकार काम करते हुए महीने बीत गए और परीक्षाएँ प्रारंभ होने को थीं। सत्र समाप्त होते-होते बच्चे काफ़ी कुछ सीख गये थे।

नया सत्र प्रारंभ हो चुका था। जुलाई का महीना था। एक दिन कार्यालय में मैं अपना काम निबटा रहा था कि मोबाइल बजा, कोई अज्ञात नंबर था। बातें शुरू हुईं—

उधर से आवाज़ आई — “हल्लो..... सर, नमस्ते मैंबोल रही हूँ।”

“मैं आपको पहचान नहीं पा रहा।”

“अरे सर, मैंविद्यालय में कक्षा 8 की छात्रा हूँ। आप बाल संसद बनाने आये थे न पिछले साल। तो सर इस साल भी बनवा दीजिए ना।”

“हाँ, याद आया। तुम वही कक्षा 7 की छात्राहो न जो ज़िद्दपूर्वक मुझे अपने घर ले गई थी और खाने को गुड़-चना दिया था।”

“जी सर। मैं वही गुड़-चने वाली हूँ, अब 8 में आ गई हूँ।” उसने यह भी बताया कि अब उसका स्कूल बदल रहा है। सर लोग भी परिवेशीय बातें करने लगे हैं और बच्चों को बोलने का अवसर देते हैं। मैंने अगले किसी दिन आने का वादा किया। वह खुश थी और मैं भी।

मैं सोच रहा था कि सही मायने में शायद बाल संसद के बहाने विद्यालय में बाल मैत्रीपूर्ण वातावरण

बन रहा था। अब विद्यालय में कैदखाने की अपनी पहचान से मुक्त होने की छटपटाहट थी और वह अपने को एक आनंदघर के रूप में रूपांतरित होने को लालायित हो रहा था।

मैंने वहाँ के शिक्षकों से बात कर इस बार बाल संसद का चुनाव करवाने का आग्रह किया जिसे उन्होंने मान लिया। चुनाव के दिन मैं भी पहुँचा। उस दिन विद्यालय में चहल-पहल थी, उत्सव जैसा माहौल था। लग रहा था कि कुछ नया हटकर होने वाला है। प्रधानाध्यापक जी ने बताया कि एक शिक्षक को प्रभारी बनाया गया है। नामांकन और नाम वापसी की प्रक्रिया दो दिन पहले पूरी हो गई है और संबंधित प्रत्याशियों ने बच्चों से संपर्क कर लिया है। मतदान की प्रक्रिया प्रारंभ होने के पहले अध्यक्ष और प्रधानमंत्री पद के दावेदारों का बच्चों के सम्मुख संबोधन होना था। दोनों पदों पर एक-एक लड़की और लड़का अर्थात् दो-दो दावेदार थे। सबने अपनी कही बातों में स्कूल को बेहतर बनाने, नियमित पढ़ने आने और मिलकर काम करने की अपील की। लेकिन एक लड़की, वही गुड़-चने वाली लड़की, ने अपनी बातों से मेरा ध्यान खींचा। उसने कहा — “यदि आप मुझे जिताते हैं तो मैं स्कूल में हो रहे भेदभाव और पढ़ाई में होने वाली पिटाई को खत्म करूँगी। कमजोर बच्चों के लिए बोले जाने वाले वाक्य कि इसे कुछ नहीं आता है, यह गधा है, उचित नहीं हैं। इन पर भी अंकुश लगेगा। मैं चाहूँगी कि हम बच्चों को भी स्कूल में प्यार-सम्मान मिले। कक्षा में पीछे बैठने वाले भैया-बहनों को भी आगे बैठने का मौका देने के साथ हमें हमारे नाम से पुकारा जाये, मैं ऐसा प्रयास करूँगी।” बहुत देर तक तालियाँ बजती रहीं। वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति आश्चर्यचकित

था कि ये वही बच्चे हैं जो पिछले साल अपनी बात नहीं कह पा रहे थे। चुनाव के बाद परिणाम घोषित हुआ। वह लड़की अध्यक्ष बन चुकी थी। अवसर मिलने पर प्रतिभा कैसे विकसित हो सकती है, इसे समझा जा सकता है।

मुझे याद आ रहा है कि रक्षाबंधन का त्योहार आने वाला था। बच्चों ने निर्णय लिया कि हम नये तरीके से यह पर्व मनाएँगे। उन्होंने बेकार पड़ी वस्तुओं जैसे शादी के पुराने कार्ड, रेशमी धागे, गत्तों के टुकड़े, स्पंज, थर्माकोल आदि से राखी बनाने का निश्चय किया। एक दिन समूह बनाकर राखी बनाने का काम शुरू हुआ। उस दिन विद्यालय में एक अलग प्रकार का माहौल था। मैं अनुभव कर रहा था कि बच्चे सही अर्थों में जीवन की पढ़ाई कर रहे थे। कुछ करके बहुत कुछ सीख रहे थे। यह सीखना उनका अपना था। वे अपनी राह स्वयं खोज रहे थे। तीन दिनों के सामूहिक कार्य का फल सुंदर और तरह-तरह की कल्पनात्मक राखियों के रूप में सामने था। पहली बार ऐसा हो रहा था कि शिक्षक बच्चों की सोच और काम की सराहना कर रहे थे। त्योहार की छुट्टी से पहले बच्चों ने शिक्षकों और एक-दूसरे को राखियाँ बाँधी और इससे भी बढ़कर बच्चों ने परिसर में लगे वृक्षों को राखियाँ बाँधकर उनकी रक्षा का संकल्प लिया।

बाल संसद की नियमित बैठकें हो रही थीं। नये-नये मुद्दे तलाशे जाते, उन पर विचार और काम होता। विद्यालय और समुदाय के बीच की बढ़ती दूरी के कम करने पर विचार-विमर्श हुआ। दीपावली का त्योहार नज़दीक था। बातों ही बातों में तय हुआ कि इस दीवाली में विद्यालय को समुदाय के सहयोग से सजाया जाये और दीपक जलाये जाएँ। योजना बनायी

गई कि बच्चे दो-दो दीपक, तेल और बाती लाएँगे। निश्चित दिन को शाम के समय बच्चे विद्यालय आना शुरू हो चुके थे। अभिभावक और माता-पिता भी दीपक लेकर आ रहे थे। कुछ पुराने छात्रों का समूह भी आ जुटा। प्रबंध समिति के सदस्य भी आये। कुल 917 दीपक एकत्र हुए। जब सभी दीपक जलाये गये तो पूरा विद्यालय रोशनी से नहा गया। ऐसा लग रहा था कि आसमान से सितारे धरती पर उतर आये हों। गाँववासियों ने वादा किया कि बच्चों ने पहल कर जो परंपरा डाली है उसे हम आगे भी जारी रखेंगे। एक बात मुझे और याद आती है। उस विद्यालय में वर्ष 2013 में नामांकन 207 था और एक नल होने के कारण मध्याह्न भोजन के समय थाली धोने एवं पानी पीने में काफ़ी अव्यवस्था रहती थी। विद्यालय द्वारा कई बार एक और नल लगाने के लिए प्रार्थना पत्र देने के बावजूद दूसरा नल नहीं लग सका। बाल संसद की बैठक में इस संबंध में एक प्रस्ताव रखा गया और सारी समस्याओं का चित्रण करते हुये एक प्रार्थना पत्र खण्ड विकास अधिकारी को भेजा गया। आश्चर्य, अगले सप्ताह ही नल लगाने की मशीन विद्यालय आ गयी। इस सफलता से बाल संसद के बच्चे अब अपनी ताकत को समझने लगे थे।

जब यह लेख लिख रहा था तो बच्चों से उनके अनुभव जानने एक बार फिर उस विद्यालय गया। मैंने अनुभव किया कि अब उस विद्यालय में जीवन साँसें ले रहा था। परिसर में बच्चों का मधुर कलरव था। विद्यालय अब चहक रहा था। बच्चों से बहुत बातें हुईं। सांस्कृतिक मंत्री सुमन ने बताया —“बाल संसद में आकर हमें अपने अधिकार और कर्तव्यों की समझ आयी है। अपनी ताकत का एहसास हुआ है। हमें लगता है कि अब स्कूल और

गाँव के लिए हम बेहतर काम कर सकेंगे।” यहाँ मुझे यह कहने में कोई गुरेज नहीं है कि सुमन उस जाति से है जिसने सदियों से समाज की उपेक्षा का दंश झेला है। उसके पिता बराती लाल विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्य हैं और उसे दूसरे जातियों के अन्य अभिभावकों ने उन्हें खुशी-खुशी चुना है। कई कार्यक्रमों में वह मंच पर बैठते हैं। इसे हम बाल संसद की सामाजिक परिवर्तन की एक उपलब्धि के तौर पर देख सकते हैं। बाल संसद में काम करने से लोकतंत्र में विश्वास पैदा हुआ है। बच्चे चुनाव की प्रक्रिया समझ पाये हैं। अब लग रहा है कि इंसान के रूप में गैर बराबरी उचित नहीं है। यहाँ यह बताना प्रासंगिक होगा कि मनोज ने घर की गरीबी को देखते हुए अपनी पढ़ाई बीच में छोड़कर पिता के साथ मजदूरी करना प्रारंभ कर दिया था। बाल संसद और मीना मंच के प्रयासों से वह शिक्षा की मुख्यधारा से पुनः जुड़ पाया। अध्यक्ष अनूपा के विचार प्रेरित करते हैं। वह कहती हैं— “पहले स्कूल में लड़कों और लड़कियों के काम का बंटवारा था। साफ़-सफ़ाई, लिपाई-पुताई, रंगोली बनाना, मिड डे मील परोसने में सहयोग करना हम लड़कियों के जिम्मे था। अब माहौल बदल गया है। काम केवल काम होता है। अब सभी काम मिलकर करते हैं।” आगे बात जोड़ती हैं “स्कूल के इन कामों का असर गाँव तक पहुँच गया है। घरों में महिलाओं ने अब खाने-पीने में लड़का-लड़की में भेदभाव करना छोड़ दिया है। यह समानता का व्यवहार बाल संसद के कारण हो पाया है।”

उपलब्धियों की यह यात्रा कई सुनहरे पड़ावों से गुजरते हुए अनवरत् जारी है। अब तक 30 बच्चों ने

राष्ट्रीय योग्यता परीक्षा (आय आधारित) में सफलता अर्जित की है। एक बच्चे को ‘मीना रत्न’ पुरस्कार मिला है। दो बच्चों ने राज्य स्तरीय *इंस्पायर अवार्ड* प्रतियोगिता में सहभागिता की। वह प्रधानाध्यापक जी रिटायर हो चुके हैं। विदायी समारोह में अपने अंतिम भाषण में वह स्वीकारते हैं—‘मैं गलत था। मैंने अपने शिक्षकीय जीवन में बच्चों को सुधारने में दंड को सर्वाधिक महत्त्व दिया। सुधार तो हम शिक्षकों को अपने कार्य-व्यवहार में करना चाहिए। आज मैं एक नया जीवन एक नई सीख लेकर जा रहा हूँ। काश, मुझे कुछ समय आप लोगों के साथ काम करने का मौका मिल पाता। लेकिन मुझे खुशी है कि यह बदलाव का दौर मेरे कार्यकाल में प्रारंभ हुआ है।’

कहने को बहुत कुछ है। बदलाव की यह प्रक्रिया अभी जारी है। अभी बहुत कुछ करना शेष है।

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि बाल संसद के माध्यम से बच्चों ने लोकतंत्र की मूल भावना को समझा है जिसमें सभी के लिए अभिव्यक्ति एवं विकास के समान अवसर हैं। जाति, जेंडर, पंथ, भाषा, क्षेत्र एवं वर्गाधारित भेदभाव के लिए समाज जीवन में कोई जगह नहीं है। प्रेम, सद्भाव, शांति, अहिंसा के साथ जीवन जीने में ही मनुष्य की सफलता है। निश्चित रूप से बाल संसद बच्चों को बेहतर नागरिक के रूप में सँवार रहा है जो देश के संवैधानिक मूल्यों की रक्षा करते हुए लोकतंत्र की नींव को मजबूती देंगे।

कक्षा शिक्षण में वार्तालाप गतिविधि, रोल प्ले और तत्काल प्रस्तुति

शारदा कुमारी*

हम सभी जानते हैं कि निरंतर ज्ञान संचय, स्मरण शक्ति का अभ्यास और रट्टेबाजी यह किसी भी स्थिति में पढ़ाई नहीं है। रट्टेबाजी तो बच्चों के स्वास्थ्य के साथ-साथ उनके बौद्धिक विकास के लिए भी हानिकारक है। अतः ज़रूरी है कि बच्चों को कल्पना और सृजन के संसार में झरने सा बहता बौद्धिक जीवन दिया जाए। इस संदर्भ में एक ऐसा विद्यालयी परिवेश होना ज़रूरी है जहाँ बच्चों द्वारा प्रेक्षण करना, सोचना, चिंतन-मनन करना, एक-दूसरे के सहयोग से तरह-तरह की परियोजनाओं को पूरा करना यह सब ज़रूरी है। इसके लिए कक्षाओं में वार्तालाप संबंधी गतिविधियों को स्थान देना अनिवार्य है। वार्तालाप संबंधी गतिविधियों में महत्वपूर्ण हैं— रोल प्ले व तत्काल प्रस्तुति। प्रस्तुत लेख रोल प्ले व तत्काल प्रस्तुति के महत्त्व, उसके आयोजन-संचालन, कक्षा शिक्षण में उपादेयता और प्रतिपुष्टि देने के तरीकों पर विस्तार से रोशनी डालता है। यह लेख विशेष रूप से यह रेखांकित करता है कि कक्षा को सजीव एवं रोचक बनाने में रोल प्ले की अहम भूमिका है।

गुरु रवीन्द्रनाथ जी से जुड़े एक प्रसंग के साथ अपने लेख की शुरुआत करती हूँ। वाक्या कुछ इस प्रकार से है कि भारत के सुदूर क्षेत्र में एक प्राथमिक विद्यालय था। यहाँ के समस्त अध्यापकों के आग्रह पर गुरु रवीन्द्रनाथ जी इस विद्यालय में यहाँ की गतिविधि का अवलोकन करने आए हुए थे। वे जिस समय विद्यालय में पहुँचे, उस समय प्रातःकालीन सभा का आयोजन चल रहा था। सभी विद्यार्थी कक्षावार कतारों में खड़े थे। कतारें सिर्फ कक्षावार ही नहीं, बल्कि बच्चों के 'छोटे से लंबे' कद के अनुसार बनी थीं। सभी हाथ जोड़कर, आँख मींचकर (बंद करके), तल्लीनता

का भाव प्रदर्शित करते हुए 'ईश प्रस्तुति' कर रहे थे। समवेत गायन के पश्चात् ड्रम की थाप के साथ शारीरिक व्यायाम किया गया।

अध्यापक पैनी दृष्टि से चारों ओर घूम-घूम कर निगरानी कर रहे थे और बीच-बीच में गुरु जी की ओर भी देख लेते थे, संभवतया यह जानने के लिए कि वे कितना प्रभावित हो रहे हैं। गुरु जी के निर्विकार भाव से अध्यापकों के चेहरे पर कुछ निराशा की लकीरें खिंचती, परंतु तत्काल वे लकीरें जबरन ओढ़ी गई मुस्कान में बदल जातीं। शायद इस प्रतीक्षा में कि गुरु जी किसी न किसी गतिविधि से तो प्रभावित

* प्राचार्य, मण्डल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली 110 022

होंगे ही और उनके मुख से 'वाह!' तो अवश्य निकलेगी।

शारीरिक व्यायाम के पश्चात् विद्यालय की प्रमुख द्वारा गुरुजी से आग्रह किया कि वे विद्यार्थियों को संबोधित करें उन्हें शुभकामनाएँ दें। गुरु जी ने संकेत द्वारा स्पष्ट कर दिया कि वे बच्चों की कक्षाओं का भी अवलोकन करना चाहेंगे और उनसे वहीं कक्षाओं में ही बात करना चाहेंगे। उनका मंतव्य समझकर प्रातःकालीन सभा के विसर्जन का आदेश दिया गया।

ड्रम की थाप पर कदम से कदम मिलाते विद्यार्थी अपनी-अपनी कतारों में अपनी कक्षाओं में चले गए। चारों ही तरफ 'व्यवस्था' का साम्राज्य था। समूचा विद्यालयी परिवेश 'चुप्पी' के आवरण में लिपटा हुआ था।

सभी विद्यार्थियों के कक्षाओं में पहुँच जाने के बाद घंटी की आवाज़ आई — 'टन' यानी कि पहला सत्र आरंभ होता है। विद्यालय प्रमुख ने गुरुजी से कहा कि कक्षाएँ आरंभ हो चुकी हैं, आप अवलोकन हेतु चल सकते हैं।

गुरु जी ने सबसे पहले विद्यालय की सबसे छोटी कक्षा यानी कि शुरुआती कक्षा 'पहली' में जाने की इच्छा जताई। विद्यालय प्रमुख उन्हें लेकर वहाँ पहुँचीं। गुरु जी ने देखा, टाटपट्टी बहुत करीने से बिछी हैं। बच्चे कतारबद्ध बैठे हैं, उनके एक ओर यानी सभी बच्चों के बायीं ओर उनके बस्ते रखे हुए हैं, सभी के सामने उनकी तख्तियाँ हैं। एक ओर अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ लिख रही हैं, साथ-साथ कुछ बोल भी रही हैं वहीं दूसरी ओर विद्यार्थी सुनने-लिखने का कार्य कर रहे हैं। गुरुदेव जी के आगमन पर सभी ने एक साथ लगभग यन्त्रवत-सा खड़ा होकर समवेत

स्वर में उनका अभिवादन किया। गुरुदेव जी का उत्तर पाकर, अध्यापिका के निर्देश पर सभी एक साथ बैठ गए और पुनः अपने लेखन कार्य में तल्लीन हो गए। बीच-बीच में कोई-कोई अध्यापिका का इस प्रकार पहली कक्षा से पाँचवी कक्षा तक का अवलोकन हो गया। गुरुदेव जी ने किसी भी कक्षा में न तो किसी को संबोधित किया और न ही किसी से कोई बात की। अलबत्ता उन्होंने अब वापिस जाने की इच्छा ज़रूर जताई। विद्यालय प्रमुख गुरुदेव जी के इस निर्विकार भाव से बहुत निराश थीं। किसी प्रकार से स्वयं को संयत कर जलपान का आग्रह किया।

जलपान की औपचारिकता के बाद उन्होंने विद्यालय की 'आगंतुक डायरी' उनके सामने रखी जिसमें वे अपने भाव संबंधी टिप्पणी उसमें दर्ज कर सकें।

पाठक मित्रो! जानते हैं, गुरुदेव जी ने क्या लिखा? उन्होंने लिखा, "क्या इस विद्यालय में बच्चे भी पढ़ते हैं?"

गुरुदेव जी तो अपने भाव व्यक्त करके चले गए पर समूचे अध्यापक समूह को सकते में छोड़ गए। उन सभी के मन में एक ही सवाल था, "कमी कहाँ रह गई?"

साथियो, गुरुदेव जी की इस टिप्पणी से आपके मन में भी तो हलचल मची होगी। आपका अनुमान क्या कहता है? गुरुदेव जी ने ऐसा क्यों लिखा होगा कि "क्या इस विद्यालय में बच्चे भी पढ़ते हैं?" जबकि वे देख रहे थे कि बच्चे मौजूद हैं, कक्षाओं में भी और प्रातःकालीन सभा में भी।

आपका अनुमान संभवतया इस ओर संकेत करे कि समूचे परिवेश से बच्चों के बीच आपसी संवाद एवं वार्तालाप और उससे उपजा सहज सरस कोलाहल गायब था। निश्चित रूप से जहाँ बच्चे हैं तो वहाँ जिज्ञासा और जिज्ञासा से उपजा वार्तालाप और

आपसी वार्तालाप से उपजा माधुर्य समेटे कोलाहल तो होगा ही। यही तथ्य उस विद्यालयी परिवेश से गायब था।

अध्यापक और बच्चों तथा बच्चों और बच्चों के बीच वार्तालाप होना एक बहुत ही सहज और स्वाभाविक सी प्रक्रिया है और कक्षायी शिक्षण में इसका बहुत महत्त्व है। वार्तालाप संबंधी गतिविधियाँ मुख्यतः दो रूपों में करवायी जा सकती हैं —

- अनौपचारिक संवाद
- रोल प्ले और तत्काल प्रस्तुति

पहला स्वरूप यानी कि अनौपचारिक संवाद, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है जिसमें विद्यार्थियों को आपस में बातचीत करने के भरपूर मौके दिए जाएँ। उन्हें पाँच-पाँच या इससे भी अधिक की संख्या में समूहों में बैठाएँ और उनके शारीरिक-मानसिक स्तर को ध्यान में रखते हुए कुछ विषय बिंदु दें जिन पर वे आपस में मुक्त भाव से बातीचत करें।

ये विषय बिंदु इस प्रकार से हो सकते हैं —

- मेरा घर
- मेरे घर में रहने वाले लोग 'इसमें घर में रह रही छिपकली, कीट-मकौड़े भी शामिल हैं'
- मेरा प्रिय खेल
- शाम को हम क्या-क्या करते हैं?
- मेरे संगी-साथी 'विद्यालय के बाहर वाले'
- मेरे खिलौने
- हम स्कूल कैसे और किसके साथ आते हैं?
- मेरे बस्ते में क्या-क्या रहता है?
- साइकिल की सवारी और उसका मज़ा
- बस की सैर किसने की?

- बारिश में नहाए कभी क्या?
- प्रिय पशु 'जंगली भी हो सकता है'
- किससे डर लगता है?
- टी.वी. में क्या-क्या देखा?

वार्तालाप गतिविधियाँ अनौपचारिक हों या रोल प्ले से संबंधित, उनके लिए विषयों की तो कोई सीमा ही नहीं, बस ध्यान ये रखना है कि विषय बिंदु बच्चों के परिवेश से हटकर न हों। जो विषय बच्चों के सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश में ही नहीं है तो उनसे उस विषय पर संवाद की अपेक्षा कैसे की जा सकती है।

अब हम बात करते हैं रोल प्ले व तत्काल प्रस्तुति की।

रोल प्ले और तत्काल प्रस्तुति में बच्चों को एक परिस्थिति और भूमिका की कल्पना करके अभिनय करने के लिए कहा जाता है। इस काम में बच्चे अपनी भाषा का उपयोग स्वतंत्रतापूर्वक करते हैं। बच्चों को वे भूमिकाएँ दी जा सकती हैं जिन चरित्रों को वे अपने दैनिक जीवन में देखते हैं, जैसे — 'डॉक्टर और मरीज़', 'अभिभावक और बच्चा', 'बस डाइवर और यात्री' या काल्पनिक चरित्र 'राजकुमारी व राक्षस', 'अंतरिक्ष यात्री', 'चिड़ियाघर के जानवर' आदि विषय लिए जा सकते हैं।

रोल प्ले के लिए किसी परिस्थिति का अभिनय भर करते रहना ही उपयुक्त नहीं है। रोल प्ले तब अधिक सफल रहता है जब इसमें समस्या का समाधान सम्मिलित हो।

उच्च स्तरों पर रोल प्ले का प्रयोग उन परिस्थितियों की खोज करने के लिए किया जा सकता है जिनका बच्चे वास्तविक जीवन में सामना करेंगे। जैसे—

असमंजस का निपटारा, कार्य सामना, संसाधनों को साझा करना, नियम बनाना और पालन करना आदि। इस प्रकार का शैक्षिक *रोल प्ले* बच्चों को भयमुक्त तरीके से मुद्दों की पड़ताल करने में मदद करता है और बहुत रोचक चर्चाओं तक पहुँच सकता है।

रोल प्ले बहुत साधारण हो सकता है, जिसमें थोड़ी-सी तैयारी और कुछ मंच सामग्री की ज़रूरत होगी। इसके अलावा *रोल प्ले* अधिक विस्तृत भी हो सकता है जिसमें आप को भाषा तैयार करने और परिस्थिति निर्माण करने में अधिक समय लगाना पड़ेगा। जैसे — ‘बाज़ार’ *रोल प्ले* में दो या तीन बच्चे या पूरी कक्षा सम्मिलित हो सकती है।

सामान्यतः *रोल प्ले* या तत्काल प्रस्तुति कक्षा में करने के लिए तीन चरण होते हैं। पहले चरण में, अध्यापक परिस्थिति निर्माण करके और यह सुनिश्चित करके कि बच्चे के पास आवश्यक शब्दावली है, बच्चों को *रोल प्ले* के लिए तैयार करते हैं। दूसरे चरण में बच्चे *रोल प्ले* करते हैं और शिक्षक उनका अवलोकन करते हैं। साथ ही तीसरे चरण की तैयारी के लिए टिप्पणियाँ दर्ज करते रहते हैं। इस चरण में यह आवश्यक है कि जब तक बहुत ज़रूरी न हो, दखल न किया जाए। एक-एक कर जब *रोल प्ले* समाप्त हो जाए तब शिक्षक प्रक्रिया ‘बच्चों ने क्रियाकलाप कैसे किया’ और परिणाम ‘यह कैसा रहा’ पर पुनरावलोकन और प्रतिपुष्टि का आयोजन करते हैं।

व्यवहार में एक *रोल प्ले* को तैयार करने के मूल चरण निम्नलिखित हो सकते हैं —

- बच्चों को जिस भाषा की ज़रूरत होगी, उसको प्रस्तुत करना और अभ्यास करना।

- चरित्रों को प्रस्तुत करना, यहाँ आप बच्चों को भूमिका कार्ड भी दे सकते हैं जिसमें वह सारी सूचनाएँ होंगी, उस भूमिका, करने में जिनकी ज़रूरत होगी।
- परिस्थिति प्रस्तुत करें और बच्चों को कार्य सौंपें।
- अधिक नियंत्रित वातावरण में कुछ विशेष संवादों का अभ्यास करें।

शुरुआत कुछ छोटे से

सभी बच्चे अभिनय में कुशल नहीं होते, विशेषकर तब जबकि नाटक उनकी प्रथम भाषा की पाठ्यचर्या का हिस्सा न हो। अपनी कक्षा में नाटक की शुरुआत छोटे-छोटे चरणों में करें। आसान, निर्देशित क्रियाकलापों से शुरुआत करें, जैसे — उदाहरण के लिए शेर की नकल और फिर कम नियंत्रित गतिविधियों की ओर बढ़ें। जैसे — साधारण-सी चीज़ें भी सिखानी होंगी। जैसे बाहों को सीधा खींचना, छोटे और बड़े कदम उठाना, उनके चेहरे और पूरे शरीर को भावनाएँ दिखाने के लिए इस्तेमाल करना। ‘पूर्ण शारीरिक प्रतिक्रिया’ वाले क्रियाकलाप नाटकीकरण का सर्वश्रेष्ठ मार्ग हैं। उनमें बच्चे अपने शरीर द्वारा भाषा पर प्रतिक्रिया देते हैं, जो अभिनय और नकल का पहला चरण है। बच्चे कई बार यह अनुभव नहीं करते कि वे चीज़ों को अलग-अलग तरीकों से भी कह सकते हैं। केवल शब्दों या वाक्यों को ऊँची, नीची, गुस्से वाली या दुखी आवाज़ में कहने के लिए बच्चों को कहना, उनकी आवाज़ की शक्ति की खोज करने का एक अच्छा मार्ग हो सकता है। बच्चों को यह देखने की ज़रूरत है कि आप नाटकीकरण के लिए बहुत उत्साहित हैं और

जो क्रियाकलाप आप सुझाते हैं, उन्हें करने में आनंद लेते हैं। आप एक आदर्श के रूप में कार्य करते हैं और उन्हें कक्षा में सक्रिय बनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

क्या हमारी कक्षा व्यवस्थित है?

अधिकतर गतिविधियों में बच्चे बड़े होते हैं और सामान्यतः कक्षा-कक्ष के सामने का स्थान पर्याप्त होता है। यदि बच्चे एक गोले में खड़े होते हैं या समूहों में कार्य करते हैं, तब आपको अधिक स्थान की ज़रूरत होगी। मेज़ों और कुर्सियों को कक्षा-कक्ष के किनारों तक खिसका दें या बच्चों को सभागार या मैदान में ले जाएँ। यदि आप नाटक के क्रियाकलाप अधिक करवाते हैं तो बच्चों को मेज़-कुर्सियाँ किनारे पर शांति से रखना सिखाएँ। प्रत्येक बच्चे को एक चीज़ खिसकाने के लिए दीजिए और कुछेक बार अभ्यास कीजिए। इसे एक प्रतियोगिता बना दीजिए। उन्हें जितना संभव हो उतना तेज़ और उतना शांत होना चाहिए। यदि आपके पास स्थान की गंभीर समस्या है तो कठपुतलियों का प्रयोग कर सकते हैं।

आपकी प्रतिपुष्टि ज़रूरी है

आप व्यावसायिक अभिनेता या अभिनेत्रियों को प्रशिक्षित नहीं कर रहे हैं, बल्कि बच्चों को उनकी भाषा के प्रयोग और अभ्यास का एक आनंददायक रास्ता दे रहे हैं। बच्चों ने जो कुछ किया है, आपको उसके बारे में प्रतिपुष्टि देनी होगी। केवल अंतिम उत्पाद भाषा ही नहीं, बल्कि वे जिस प्रक्रिया से गुज़रे हैं वो भी है। एक-दूसरे से किस तरह सहयोग

किया है और किस तरह वे निर्णयों पर पहुँचे हैं, इसके बारे में भी प्रतिपुष्टि देनी होगी। टिप्पणी करने के लिए कुछ सकारात्मक बातें ढूँढ़ें। बच्चों के कार्य में कुछ क्षेत्र ऐसे होंगे जिनमें सुधार किया जा सकता है। अतः उन्हें जो प्रतिपुष्टि देंगे, यह उसका हिस्सा होना चाहिए। जब बच्चे क्रियाकलाप कर रहे हों, उन्हें देखें और सुनें पर दखल देने का प्रयास न करें। आप जो कुछ देख रहे हैं उसके बारे में टिप्पणियाँ दर्ज करते रहें। आपका मुख्य लक्ष्य प्रतिक्रिया है, लेकिन बच्चे 'प्रदर्शन' को पाठ के सबसे महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में देखेंगे। आपको उनके प्रदर्शनों को महत्त्व देने की आवश्यकता है। जब वे समाप्त कर लें, आप कुछ समूहों को अपना कार्य दिखाने के लिए कह सकते हैं। तब आप उन्हें प्रतिपुष्टि दें। यह करने के कई तरीकें हैं, जैसे — आप उनके लिए 'प्रतिपुष्टि पत्र' बना सकते हैं और उसका इस्तेमाल कर सकते हैं। यदि सृजनात्मक प्रतिपुष्टि नाटकीकरण गतिविधियों का नियमित भाग बन जाए, बच्चे धीरे-धीरे अपनी नाटकीकरण क्षमताओं और भाषा को सुधार लेंगे।

कक्षायी शिक्षण में वार्तालाप संबंधी गतिविधियों का महत्त्व

सभी जानते हैं कि विद्यार्थी अवधारणाओं के प्रति कब अधिक समझ बनाते हैं, क्या वे जब ब्लैकबोर्ड पर लिखे हुए को कॉपी पर उतारते हैं या फिर जब अवधारणाओं पर आपसी संवाद कर उसे अभिनय या रोल प्ले द्वारा प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के तौर पर, कक्षा 7 के विद्यार्थियों को चुनाव की प्रक्रिया समझानी है। अब इसके लिए हमारे पास दो तरीके

हैं — एक तरीका, जिसमें अध्यापक ने पुस्तक में लिखी बातों को पढ़ा या पढ़वाया और फिर मुख्य बिंदु श्यामपट्ट पर लिख दिए। इसके बाद विद्यार्थियों से कहा कि श्यामपट्ट पर लिखे बिंदुओं को उतार लें और याद कर लें।

दूसरा तरीका, जिसमें अध्यापक बच्चों के साथ संवाद करें कि क्या उन्हें याद है कि कभी उनके परिवार में या आस-पास कोई वोट देने गया था। समूची कक्षा में कुछ बच्चे अवश्य ही ऐसे होंगे जिन्हें अनुभव होगा। उन्हें अपने अनुभव सुनाने का मौका दिया जाए। अब सभी बच्चों को उन अनुभवों द्वारा प्रस्तुत करने के लिए कहा जाए। जैसे कि कोई वोटर लिस्ट लेकर बैठा है, कोई अँगुली में स्याही लगाने की भूमिका में, कोई स्वयं मतदाता है, इस प्रकार सभी विद्यार्थी चुनाव की प्रक्रिया अभिनीत करते हैं।

इस तरीके से किस प्रकार का परिवेश सृजित हुआ?

- कक्षायी परिवेश की नीरसता और एकरसता भंग हुई, उसके स्थान पर रोचकता बनी रही।
- विद्यार्थियों के अनुभवों के आधार पर अवधारणा स्पष्ट की गई।
- सभी विद्यार्थी सक्रिय, सजग, चौकन्ने व उत्सुक रहे।
- सभी विद्यार्थियों को शिक्षण अधिगम में भाग लेने का अवसर मिला यानी कि सभी विद्यार्थी क्रियाशील बने रहे।
- विद्यार्थी अपनी भाषा में अपनी बात कह सके। उन्हें समूह भावना के साथ काम करने के अवसर मिले।
- कक्षा शिक्षण में विविधता व सामूहिकता का भाव बना रहा।

उपर्युक्त के साथ-साथ और भी लाभ तलाशे जा सकते हैं।

संदर्भ

राजपूत, जगमोहन सिंह और सरला राजपूत. 2000. *मुस्कान का मदरसा*. एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्ली.

प्राथमिक शिक्षा व शिक्षकों से जुड़ी विपरीत परिस्थितियाँ एवं उनका सामना

अलका त्रिपाठी *

अंजली बाजपेयी**

एक बच्चे के जीवन में उसकी प्रारंभिक शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व होता है। एक बच्चा कैसा बनेगा ये उसकी शुरुआती शिक्षा अर्थात् प्राथमिक शिक्षा पर निर्भर करता है। अगर उनकी शिक्षा अच्छी हुई है तो उसके सही मानसिक विकास की संभावना बढ़ जाती है नहीं तो विपरीत भी सत्य है। जब हम प्राथमिक शिक्षा अच्छी होने की बात करते हैं, तो उसमें एक बहुत महत्वपूर्ण बात छिपी हुई है और वह यह है कि प्राथमिक विद्यालय में एक शिक्षक ही विद्यार्थियों को बनाने व बिगाड़ने में उसकी मदद करता है। हम सभी जानते हैं कि देश में प्राथमिक विद्यालयों की क्या स्थिति है देश में, किस तरह की सुविधाएँ हैं प्राथमिक विद्यालयों में ऐसी स्थिति एक शिक्षक के सामने एक कठिन समस्या पैदा करती है। शिक्षक का दायित्व है कि वे एक बच्चे के विकास में अपना योगदान दें।

लेख में हम प्राथमिक विद्यालयों से संबंधित कठिनाइयों की चर्चा करेंगे कि कैसे यह कठिनाइयाँ शिक्षकों के लिए विपरीत परिस्थितियाँ पैदा करती हैं और शिक्षक उन परिस्थितियों को कैसे दूर करके अध्ययन-अध्यापन कार्य को सुचारू रूप से चलाते हैं।

शिक्षा का प्रथम स्तर प्राथमिक शिक्षा ही है। अतः इस नींव को सुदृढ़ करना, इसके उद्देश्य तथा भागीदारी को समझना शिक्षा से जुड़े हर व्यक्ति का कर्तव्य है। प्राथमिक शिक्षा से अभिप्राय शिक्षा काल के शुरुआती 5 से 7 वर्षों से है।

गांधी जी ने प्राथमिक शिक्षा की परिभाषा इस प्रकार से व्यक्त की है — ‘इसे बेसिक शिक्षा भी कहा जा सकता है। यह 7 से 14 वर्ष तक के बालकों के लिए अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा है तथा हस्तकला

से संबंधित है। इससे छात्र आत्मनिर्भर बनता है तथा भावी भविष्य के व्यावहारिक हस्तकौशल को ग्रहण करता है।’

प्राथमिक शिक्षा का किसी बच्चे के प्रारंभिक जीवन स्तर पर बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। प्राथमिक शिक्षा शिक्षा का प्रारंभिक स्तर होता है, जहाँ बच्चों के संज्ञानात्मक, संवेगात्मक व गत्यात्मक विकास की संतुलित रूप से शुरुआत होती है। प्राथमिक शिक्षा, बच्चों के लिखने और पढ़ने की

* शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, बी.एच.यू., वाराणसी

** प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, बी.एच.यू., वाराणसी

क्षमता के विकास से जुड़ी है व साथ ही साथ यह उनकी मातृभाषा का विकास करने में भी सहायक होती है। मुख्यतः प्राथमिक शिक्षा बच्चों को आगे के जीवन के लिए तैयार करने में पहली सीढ़ी का काम करती है। इस स्तर पर बच्चों के सर्वांगीण विकास की जिम्मेदारी जितनी उनके माता-पिता की होती है उतनी ही उनके शिक्षकों की भी होती है।

जैसा कि हम जानते हैं कि किसी भी विद्यार्थी के उज्ज्वल भविष्य के लिए उनकी प्राथमिक शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व होता है। हम इसे दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि किसी भी विद्यार्थी के लिए उसकी प्राथमिक शिक्षा उनके लिए नींव की ईंट का काम करती है। अर्थात् नींव जितनी मजबूत होगी दीवार उतनी ही मजबूत होती है और इस दीवार को मजबूत करने का कार्य करते हैं उसके मजदूर अर्थात् प्राथमिक शिक्षक। अतः जैसे ही हम नींव की ईंट को मजबूत करने की बात करते हैं वहाँ प्राथमिक शिक्षकों की महत्ता अपने आप दिखने लगती है।

वर्तमान परिदृश्य में अगर देखें तो हम कह सकते हैं कि आजकल अच्छे प्राथमिक शिक्षकों की कमी है कुछ तो अपने मन से इस क्षेत्र में कदम नहीं रखना चाहते तो कुछ यहाँ पर उभरने वाले विपरीत परिस्थितियों से घबराकर इस क्षेत्र को छोड़ देते हैं।

अतः हमें सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि प्राथमिक शिक्षा से जुड़ी विपरीत परिस्थितियाँ कौन-कौन सी हैं, जिसका एक शिक्षक को सामना करना पड़ता है—

- प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थी नामांकन कम होना — हम अक्सर देखते हैं कि प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन आवश्यकता से कम होता है। ग्रामीणों में शिक्षा के प्रति जागरूकता

की कमी होती है वे शिक्षा को एक बोझ की तरह लेते हैं। अतः विद्यालय में बच्चों को नहीं भेजना चाहते हैं।

- विद्यालयों में विद्यार्थियों की उपस्थिति का कम होना— हम जैसे ही अपने गाँव या कस्बे के प्राथमिक विद्यालयों में नजर दौड़ाते हैं हमें यह बात देखने को मिल जाती है कि कक्षा के दौरान विद्यार्थियों की उपस्थिति नाममात्र होती है व जैसे ही मध्याह्न भोजन का कार्यक्रम शुरू होता है उनकी उपस्थिति कई गुना बढ़ जाती है। अतः यह भी शिक्षकों के लिए एक विपरीत परिस्थिति है।
- विद्यालयों के उचित भवनों का अभाव— प्राथमिक शिक्षकों के लिए विद्यालयों में सही भवनों का न हो भी एक विपरीत परिस्थिति पैदा करती है, जिसके कारण उन्हें कभी मैदानों में तो कभी पेड़ों के नीचे शिक्षण कार्य को पूर्ण करना पड़ता है। जिसके कारण विषम दिन में कक्षाएँ नहीं चल पाती है।
- विद्यालयों में शौचालयों का अभाव— प्राथमिक विद्यालयों में शौचालयों की बहुत कमी है। अधिकांश विद्यालयों में शौचालय हैं ही नहीं, जिसके कारण शिक्षक व विद्यार्थियों को बाहर खुले में शौच के लिए जाना पड़ता है। अगर विद्यालय में शौचालय हैं भी तो बालक व बालिकाओं के लिए अलग-अलग नहीं हैं। जो सुरक्षा के दृष्टिकोण से सही नहीं है।
- अभिभावकों में बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी— शिक्षकों को जो सबसे बड़ी विपरीत परिस्थिति का सामना करना पड़ता है वह यह है कि अभिभावकों में उनके बच्चों के प्रति

शिक्षा के लिए जागरूकता की कमी का होना। वह यह समझते हैं कि बच्चे खासकर लड़कियाँ पढ़कर क्या करेंगी? अगर घर पर रहे तो घर के कामों में हाथ बटाएंगी और घर के लिए कुछ पैसे कमायेगी।

विपरीत परिस्थिति का सामना करने के उपाय

प्राथमिक विद्यालयों से संबंधित उपरोक्त विपरीत परिस्थितियों पर नज़र दौड़ाएँ तो ये छोटी-मोटी समस्या नहीं लगेंगी। ये ऐसी समस्याएँ हैं जो कि एक विद्यार्थी या शिक्षक को विद्यालय छोड़ने या दूसरे शब्दों में अध्ययन या अध्यापन कार्य छोड़कर भागने पर मजबूर कर देती हैं।

अतः यहाँ यह बताना आवश्यक है कि प्राथमिक विद्यालय का शिक्षक बनने के लिए बुद्धि लब्धि ज़रूरी है। इसके साथ ही एक और चीज़ ज़रूरी है या कहे कि बुद्धि लब्धि से भी ज़्यादा आवश्यक है, विपरीत परिस्थिति गुणांक। अर्थात् उनका विपरीत परिस्थितियों से निपटने व उसे अपने अनुरूप बनाने की क्षमता।

विपरीत परिस्थिति गुणांक को अंग्रेज़ी में एडवर्सिटी कोशेंट भी कहते हैं। इस संप्रत्यय को सर्वप्रथम पॉल स्टाल्टज़ ने सन् 1997 में अपनी किताब एडवर्सिटी कोशेंट — टर्निंग आब्स्टेकल्स इन टू आपरच्यूनैटि में बताया।

पॉल स्टाल्टज़ ने इसे परिभाषित करते हुए लिखा है कि “The Capacity of the person to deal with the adversities of his life. As such, it is the Science of Human resilience” व्यक्ति अपने सामने कोई विपरीत परिस्थिति आने पर क्या प्रतिक्रिया देता है मुख्यतः इसी को विपरीत परिस्थिति गुणांक द्वारा मापते हैं।

विपरीत परिस्थिति गुणांक एक अंक है जो एक व्यक्ति के जीवन में आने वाले विपरीत परिस्थिति से

लड़ने की क्षमता को मापता है। अतः इसे प्रतिरोध क्षमता के विज्ञान के नाम से भी जाना जाता है।

विपरीत परिस्थिति गुणांक एक व्यक्ति के जीवन की सफलता की ओर संकेत तो करता ही है, साथ ही साथ यह उस व्यक्ति की मानसिक अवसाद, अभिवृत्ति, अधिगम आदि के बारे में भी भविष्यवाणी करता है।

विपरीत परिस्थिति गुणांक चार कारकों नियंत्रण, उद्भव, पहुँच एवं सहनशीलता से मिलकर बना है। इन चारों कारकों पर अगर ध्यान दें तो हम यह देखेंगे कि ये चारों कारक विपरीत परिस्थितियों से निपटने के एक-एक पक्ष को रखते हैं। जैसे — नियंत्रण हमें बताता है कि किसी व्यक्ति का एक विपरीत परिस्थिति पर कितना नियंत्रण है वह कहाँ तक समझता है कि परिस्थिति उसके नियंत्रण में है (See it. Acknowledged change is needed)। इसी प्रकार उद्भव बताता है कि विपरीत परिस्थितियों का उद्भव कहाँ से हुआ है (Own it. Take ownership of the situation), पहुँच बताती है कि वह विपरीत परिस्थिति सिर्फ़ आपके एक ही क्षेत्र पर असर डालेगा या दूसरे क्षेत्र पर भी (Solve it. Develop your action plan) और सहनशीलता बताती है कि उस विपरीत परिस्थिति को आप कितना सहन कर सकते हैं (Do it. Execute the change) जब इन चारों कारकों को हम जोड़ते हैं तो हमें एडवर्सिटी कोशेंट प्राप्त होता है।

विपरीत परिस्थिति गुणांक की विशेषताएँ

- विपरीत परिस्थिति गुणांक को मापा जा सकता है।
- विपरीत परिस्थिति गुणांक जन्मजात न होकर, अर्जित की गई योग्यता है।

- विपरीत परिस्थिति गुणांक द्वारा व्यक्ति के बारे में भविष्यवाणी की जा सकती है।
- विपरीत परिस्थिति गुणांक परिवर्तित हो सकती है।
उपरोक्त विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि विपरीत परिस्थिति गुणांक एक जन्मजात योग्यता न होकर एक अर्जित की गई योग्यता है जो कि परिस्थिति और वातावरण के साथ बदल सकती है।

अतः वर्तमान में विद्वानों ने बुद्धि लब्धि से ज्यादा विपरीत परिस्थिति गुणांक को किसी क्षेत्र में सफलता के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण माना है। बुद्धि लब्धि आपको प्राथमिक शिक्षक बनाने तक सहायता कर सकती है, परंतु प्राथमिक शिक्षक बने रहने में विपरीत परिस्थिति गुणांक ही कारगर साबित होगा।

विपरीत परिस्थिति गुणांक को अगर एक उदाहरण के द्वारा समझें तो और बेहतर होगा, जैसे — अगर हम उपरोक्त समस्या में से ही किसी एक समस्या को उदाहरणस्वरूप लें, जैसे — यह अभिभावक अपने बच्चों को विद्यालय भेजना अनावश्यक या गैर महत्वपूर्ण समझते हैं यह एक विपरीत परिस्थिति है तो यहाँ एक सामान्य शिक्षक जिसकी *एडवरसिटी कोशेंट* सामान्य है। वह थोड़ा-बहुत अपनी तरफ से समझाएगा उसके बाद छोड़ देगा क्योंकि उसकी सहनशक्ति जवाब दे देगी, परंतु एक ऐसा शिक्षक जिसका *एडवरसिटी कोशेंट* अच्छा है वे अलग-अलग प्रलोभन, अलग-अलग तरीके से उस अभिभावक को समझाने का प्रयास करेगा। जैसे, उनके बच्चों की शिक्षा उनके भविष्य में होने वाली उनकी आजीविका के लिए कैसे फायदा पहुँचाएगी यह बताएगा कि

मिड-डे-मिल भी दिया जाता है तथा इसके लाभों के बारे में बताएगा इत्यादि। जिससे वह अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए तैयार हो जाए। एक और उदाहरण देखते हैं, जैसे — मान लें कि किसी विद्यालय में शौचालय नहीं है (जो कि एक विपरीत परिस्थिति है) तो इससे बहुत से प्राथमिक शिक्षक विद्यालय को छोड़ देंगे, अर्थात् उस परिस्थिति से भाग खड़े होंगे, परंतु जिनकी प्रतिरोध क्षमता अच्छी है, वे इस परिस्थिति से भागेंगे नहीं, अपितु शौचालय कैसे बने इसके लिए प्रयास करेगा। यह तो हो गयी उन शिक्षकों की में बात जो सरकार द्वारा नए भर्ती होंगे, परंतु उन शिक्षकों का क्या जो पहले से ही प्राथमिक शिक्षा में हैं? विदित होगा कि हम इस लेख में पहले ही इस बात की चर्चा की गयी है कि विपरीत परिस्थिति गुणांक जन्मजात न होकर अर्जित योग्यता है। अतः एक अर्जित योग्यता को कोई भी इंसान जो उसके लिए प्रयास करे प्राप्त कर सकता है व साथ ही साथ बढ़ा भी सकता है।

किसी व्यक्ति में विपरीत परिस्थिति गुणांक बनाने के तरीके

- किताबों में उन पात्रों पर प्रकाश डाला जाए, जो विपरीत परिस्थितियों से लड़ कर जीतते हैं।
- टेलीविजन में उन कार्यक्रमों को दिखाया जाए, जो इन सब संदर्भों पर आधारित हों।
- अखबारों व पत्रिकाओं में इस संदर्भ आधारित खबरों को छापा जाए, जिससे व्यक्ति इसे सीख सके व इससे प्रेरणा ले सके।
- विपरीत परिस्थिति गुणांक के शीर्षक पर कार्यशाला व संगोष्ठियों का आयोजन कराया जाए।

अतः इन सब उपरोक्त प्रयासों से किसी व्यक्ति के अंदर विपरीत परिस्थिति गुणांक को उत्पन्न किया जा सकता है व साथ ही साथ बढ़ाया जा सकता है। अगर लेख में लिखी हुए बातों पर गंभीरता से ध्यान दें व इस संप्रत्यय को ढंग से समझें तो वर्तमान में जो प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति है उसे सुधारा जा सकता है। जिसका परिणाम यह होगा कि आगे से न तो कोई शिक्षक और न ही कोई विद्यार्थी विद्यालय छोड़ेगा।

निष्कर्ष

सरकार को चाहिए कि वे प्राथमिक विद्यालयों में ऐसे शिक्षक भेजें जिनकी एडवर्सिटी कोशेंट अर्थात् जिनमें

विपरीत परिस्थितियों से लड़ने की क्षमता अच्छी हो। इसके लिए जब सरकार शिक्षकों की भर्ती के लिए बुद्धि लब्धि की परीक्षा करवाती है उसके साथ ही साथ उसे एडवर्सिटी कोशेंट की भी परीक्षा करवानी चाहिए। जिन शिक्षकों में विपरीत परिस्थितियों से लड़ने व उसे अपने अनुरूप करने की क्षमता अधिक हो उन्हें ही शिक्षकों के पद के लिए भर्ती करना चाहिए, अपितु नहीं। तब जाकर वास्तविकता में हमारे प्राथमिक विद्यालय, विद्यार्थियों के नींव के ईंट को मजबूत करेंगे जिस पर हमारे आने वाले समाज के भविष्य की दीवारें टिकेगी।

संदर्भ

- उदय शंकर, 1984. एजुकेशन ऑफ़ इंडियन टीचर्स, स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली.
- एन.सी.टी.ई. 2009. अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, नयी दिल्ली.
- . 1978. टीचर एजुकेशन करिकुलम, एन.सी.टी.ई., नयी दिल्ली.
- कुमार अशोक, 1991. करंट ट्रेड्स इन इंडिया एजुकेशन. एस.बी. फॉर आशिष पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली.
- निः शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, भारत का राजपत्र 27 अगस्त 2009 भारत सरकार, नयी दिल्ली
- मुखर्जी, एस.एम. 1968. एजुकेशन ऑफ़ टीचर्स इन इंडिया. वॉल्यूम 1. एस चाँद एंड कंपनी, नयी दिल्ली.
- रुहेला, सत्यपाल 2007. विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा. अग्रवाल पब्लिकेशंस, आगरा.
- स्टॉलज, पी. 1997. एडवर्सिटी कोशेंट — टर्निंग ऑबस्टेकल्स इन टू ऑपरच्युनिटी, न्यूयॉर्क. <https://carinasciences.com/2018/08/02/adversity-quotient-and-leveraging-micro-adversities/> पर ऑन लाइन देखा गया।

बच्चे का विकासात्मक संदर्भ और विद्यालय

ऋषभ कुमार मिश्र*

यह लेख समकालीन संदर्भों में बच्चों और विद्यालयों के संबंधों की पड़ताल करता है। यह लेख स्कूली जीवन के शुरुआती वर्षों में बच्चे की दुनिया में हो रहे बदलावों का विश्लेषण करता है। इस लेख में परिवार एवं अन्य महत्वपूर्ण भागीदारों के विद्यालयी अनुभव और अपेक्षाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। तदोपरान्त लेख में चर्चा की गयी है कि कैसे विद्यालय की गतिविधियाँ खेल और काम में फर्क पैदा करती हैं? और इसके क्या परिणाम होते हैं?

स्कूल की संस्थागत मौजूदगी बच्चे के रोज़मर्रा की जिंदगी में क्या बदलाव लाती है? अक्सर इस सवाल को सुलझाने की चर्चा को बच्चे के स्कूल में प्रवेश के बाद आरंभ करते हैं। इस कहानी के सूत्र को थोड़ा पहले से पकड़ने की ज़रूरत है। आजकल स्कूल में प्रवेश लेने से पहले ही बच्चे स्कूल से परिचित हो चुके होते हैं। स्कूल से इनका परिचय अभिभावक सहित अन्य वयस्क दो तरीकों से कराते हैं। पहला, वे स्कूल में प्रवेश के पूर्व ही साक्षरता-अक्षर ज्ञान और गणित का अभ्यास कराने लगते हैं। दूसरा, वे स्कूलों के प्रतीकों, जैसे — बैग, ड्रेस, टिफ़िन आदि से बच्चे के मन में स्कूल की छवि उकेरने लगते हैं। जैसे ही बच्चे हाव-भाव या शब्दों के सहारे संवाद आरंभ करते हैं वैसे ही अभिभावक अक्षर और गिनती के उच्चारण और इसे दोहराने के द्वारा पढ़ाई-लिखाई से परिचित कराने लगते हैं। इसके अलावा अभिभावकों का जोर होता

है कि उनके बच्चे रोज़मर्रा के उपयोग की वस्तुओं का अंग्रेज़ी शब्द-ज्ञान कर लें। एक या दो वर्ष के छोटे बच्चे के साथ इन अभ्यासों बच्चे की शैक्षिक सफलता के लिए अभिभावकों का *होमवर्क* मान सकते हैं। यह *होमवर्क* इस मान्यता से संचालित है कि सीखने की सामग्री साक्षरता है और इसे ज़्यादा मात्रा में सीखने के लिए, सीखने का समय अधिक होना चाहिए (क्लार्क, 2001)। सीखी सामग्री को दोहराने की आवृत्ति अधिक होनी चाहिए (कुमार, 2016)। सीखने की प्रतियोगिता में आगे रहने के लिए अतिरिक्त तैयारी करना अभिभावक की ज़िम्मेदारी है। क्या हमने कभी सोचा है कि साक्षरता के इन माध्यमों के अलावा प्रकृति और परिवेश में बहुत कुछ है जिसके प्रति बच्चे को संवेदनशील किया जा सकता है? मसलन फूलों के अलग-अलग प्रकार, चिड़िया की आवाजें, घर और आस-पास के कीट

* सहायक प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा 442 001

पतंगों की पहचान। ऐसा करके बच्चे को कुदरत के निकट ले जाया जा सकता था। उसे परिवेश की संज्ञाओं के ज्ञान के बदले उनकी विशेषताओं को पहचानने और महसूस करने का अवसर दिया जा सकता था। साक्षरता से जोड़ने का उतावलापन बच्चे की दुनिया को सीमित कर देता है। इस सीमित दुनिया में अभिभावक बच्चों के परिवेश में स्कूल से जुड़े प्रतीकों को स्थापित कर देते हैं।

ऐसे ही कुछ प्रतीक, स्कूल का बैग, लंच बॉक्स, ड्राइंग बुक, कलर, ड्रेस आदि हैं। इन प्रतीकों द्वारा स्कूल की छवि कैसे बनती है? इसे स्कूल के बस्ते के उदाहरण से समझते हैं। बच्चे को अपने दूसरे या तीसरे जन्मदिन तक किसी न किसी के द्वारा उपहार में एक बस्ता मिल जाता है। यदि इस बस्ते को बच्चे को बिना किसी निर्देश के दे दिया जाए तो वह इसका तरह-तरह का उपयोग करेगा। एक अवलोकन में मैंने पाया है कि बच्चे के लिए बस्ता अन्य खिलौने की तरह था। उसे वह सिर पर उठाता तो कभी छाते की तरह प्रयोग करता। इस दौरान बच्चे के अभिभावक उसे बस्ते के 'सही' उपयोग का उदाहरण देते। उसमें बच्चे की अक्षर ज्ञान की पुस्तक रखकर बताते हैं कि यह कॉपी-किताब रखने वाला झोला है। कुछ दिनों बाद पाया कि वही बच्चा, जिसने अभी-अभी चलना ही सीखा है, बस्ता लेकर स्कूल जाने की नकल उतारने लगता है। अभिभावक इसे शुभ संकेत मानते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं कि उनके बच्चे में पढ़ाई को लेकर सकारात्मक अभिवृत्ति है। ऐसे ही टिफ़िन और पानी की बोतल जैसे प्रतीकों को स्कूल जाने से जोड़ दिया जाता है। इसके अन्य प्रयोगों और

अर्थों को गौण करते हुए 'लंच' में टिफ़िन करने के अर्थ को स्थापित किया जाता है। यहाँ भोजन करने के खास समय को चिह्नित करके खान-पान के तरीके और इस तरीके को स्कूली व्यवस्था के रूप में स्थापित किया जाता है। पानी की बोतल और लंच बॉक्स लेकर बच्चे घूमने या पार्क भी जा सकते हैं, लेकिन हमारा शिक्षित मन इन प्रतीकों को स्कूल की आवाजाही और वहाँ की गतिविधि के अर्थ में इनके प्रयोग को देखना और दिखाना चाहता है। ऐसे ही बच्चा अपने परिवार और पड़ोस के अन्य बड़े बच्चों को स्कूल आते-जाते देखता है। स्वभावतः वह कई बार इनके साथ 'पढ़ाई' के काम में शामिल होना चाहता है। उसे इन बड़े बच्चों की पढ़ाई के समान से दूरी बनाए रखने की हिदायत दी जाती है। जब उत्सुकतावश वह कोई हस्तक्षेप करना चाहता है तो उसके व्यवहार को 'परेशान' करने या डिस्टर्ब करने की संज्ञा दी जाती है। इस तरह से बच्चा स्कूलों के कामों की महत्ता और विशिष्टता को इस अर्थ में समझने लगता है कि ये काम 'बड़ों' के हैं, बच्चों के नहीं। इन व्यवहारों और अभ्यासों से बच्चे के मन में यह विश्वास पुख्ता होने लगता है कि स्कूल, घर से अलग कोई इकाई है जिसके अपने तौर-तरीके और नियम हैं (कुमार, 2016)।

आखिरकार बच्चे के जीवन में वह समय आ जाता है जब उसे भी स्कूल जाना होता है। एक-दो दिन बच्चा स्कूल के अपरिचित माहौल में जूझता है। अंततः वह स्कूल को अपनाते लगता है। स्कूल आने-जाने के क्रम में उसके मन में पहली छाप स्कूल के इमारत की पड़ती है। बच्चे के लिए यह इमारत

ऐसा घेरा होती है जो घर के ही जैसी दूसरी दुनिया होती है जहा उसकी बातें सुनने वाले, उसकी रूचि और जरूरतों का ध्यान रखने वाले होते हैं। उसे इस बात का बोध कराने के लिए हर विद्यालय की 'नर्सरी' में झूले, खेल का सामान, उसका ध्यान रखने वाली मैम आदि की व्यवस्था होती है। इस इमारत के भीतर बच्चे की एक नई दुनिया होती है। स्कूल के शुरुआती वर्षों में इस दुनिया में नकारात्मकता के लिए न्यूनतम स्थान होता है। यह दुनिया उसे सुरक्षा, प्रेम और आनंद प्रदान करने में लगी होती है। यहाँ बच्चा अपनी दुनिया का विस्तार करता है। माता-पिता या भाई-बहन, दादा-दादी जैसे रिश्तों के अलावा टीचर और दोस्त बनते हैं। टीचर जहाँ सुरक्षा और देखभाल जैसे नैतिक विकास के साथ संज्ञानात्मक विकास का दायित्व उठाते हैं वहीं दोस्त, सेल्फ और अन्य के अंतर का बोध कराते हैं (चौधरी, 2004)। यह बोध उसके परिचय में प्रकट होता है। उसके परिचय में विद्यालय और कक्षा जैसे घटक आ जाते हैं। वह कक्षा, सेक्शन या हाउस आदि की सदस्यता अपनी विशिष्टता को पहचानता है। कुल मिलाकर बच्चे के लिए स्कूल की दुनिया चमत्कृत करने वाली होती है। शुरुआती वर्षों में बच्चा जब स्कूल से वापस आता है तो वह स्कूल की घटनाओं और अनुभवों को साझा करने को उतावला रहता है। स्कूल में दोस्तों से हुयी बात और किए गए कामों की चर्चा करता है। कई बार वह घर पर शिक्षक का रोल निभाते हुए परिवार के अन्य सदस्यों को पढ़ाने का खेल खेलता है। उसके लिए शिक्षक या शिक्षिका ऐसे वयस्क हो जाते हैं जिनके द्वारा दी गयी सूचनाएँ ही ज्ञान होती हैं। जिनके निर्देश का वह

पूरे विश्वास और उत्साह के साथ पालन करता है। शुरुआती वर्षों में बच्चे और शिक्षक का यह रिश्ता ज्ञान की सत्ता और इसके परिणामस्वरूप ज्ञानवान या ज्ञानहीन होने की धारणाओं से मुक्त होता है। इस दौरान आपसी संबंधों में प्रेम करना, एक-दूसरे का ध्यान रखना, बच्चे की बातों को ध्यान पूर्वक सुनना जैसे पक्ष शिक्षक और बच्चे के संबंध को निर्धारित करते हैं (कोरसरो, 2005)।

महानगरों के संदर्भ के देखा जाए तो स्कूल बच्चे को एक बहुसांस्कृतिक समूह का सदस्य बनता है। नगरों के स्कूल के बारे में ये बातें हर आर्थिक एवं सामाजिक समूह के लिए सत्य हैं। स्कूल में बच्चा सामाजिक विविधता का प्रत्यक्ष साक्षात्कार करता है। देश के अलग-अलग क्षेत्रों, संस्कृतियों, भाषा-भाषियों से उसका परिचय होता है। ऐसे ही प्रतिदिन स्कूल आने जाने के दौरान वह वह शहर के स्वरूप, लोग और गतिविधियों का अवलोकन करता है। अलग-अलग स्कूलों के नाम, दोस्तों के स्टॉप, विज्ञापन, परिवहन के साधन आदि से परिचित होता है। कई बार हर रोज की यह बस यात्रा थका देने वाली होती है। कुल मिलाकर आजकल स्कूल उसी भूमिका में हैं जैसे कोई 'ऑफिस'। स्कूल की रीति-नीति की अन्य औपचारिक संस्थानों जैसे 'ऑफिस' बढ़ती नज़दीकी इसमें कृत्रिमता पैदा करती है और इसे बच्चे को 'बड़ा' बनाने का कारखाना बना देती है।

स्कूल को अपनाने के साथ बच्चे की दिनचर्या में समय के सापेक्ष गतिविधियों का नियोजन शुरु हो जाता है। बच्चे की दिनचर्या की सबसे बड़ी विशेषता समय के कठोर विभाजन का अभाव होती है। उसके

लिए दिन के विभिन्न क्रियाकलापों में एक क्रम और व्यवस्था होती है, लेकिन उसे इस व्यवस्था से छेड़-छाड़ करने की आज़ादी मिली होती है। बचपन की यह आज़ादी बड़े और बच्चे के बीच की एक बड़ी विभाजक रेखा है। कई बार इसी लक्षण के आधार पर बचपन को एक अलग अवस्था के रूप में पहचाना जाता है। स्कूल आने-जाने का चक्र शुरू होते ही यह आज़ादी, समय के पालन की बाध्यता बन जाती है। बच्चे को निर्धारित समय पर उठना, तैयार होना, विद्यालय जाना, विद्यालय से आना, खेलना, कार्यों को पूरा करना आदि सीखना पड़ता है। उसे यह बोध हो जाता है कि घर और स्कूल में अलग-अलग कार्यों को करने का समय अलग-अलग और निर्धारित होता है। यह प्रशिक्षण, अनुशासन के लिए बीज का कार्य करता है। अनुशासन का यह बीज अच्छे या बुरे होने की शर्त बन जाता है। तभी तो शुरुआती वर्षों में गुड मैनर और बैड मैनर का जबर्दस्त प्रशिक्षण दिया जाता है। पता नहीं बच्चा गुड और बैड के अर्थ को कितना ग्रहण करता है, लेकिन वह यह जान जाता है कि अंततः गुड बनने में ही भलाई है।

शुरुआती वर्षों में स्कूल का अनुभव काम और खेल में भेद करना सीखा देता है। जैसाकि पहले बताया गया कि बच्चे को सिखाया जाता है कि रोज़मर्रा के कार्यों के लिए समय का बँटवारा कार्यों के महत्व के सापेक्ष होना चाहिए। यह सीख सर्वप्रथम खेल को एक गैर उत्पादक गतिविधि सिद्ध कर देती है, क्योंकि न तो खेल क्लासवर्क का हिस्सा होता है और न ही होमवर्क का। वह तो बस मनोरंजन मात्र है। खेल के बदले स्कूल के कामों को प्राथमिकता देने को 'अच्छे'

बच्चे के साथ जोड़ दिया जाता है। समझ में नहीं आता हम लोग खेल के प्रति ऐसी दृष्टि क्यों रखते हैं? यदि बच्चों के खेल का अवलोकन करें तो आप पाएँगे कि उनके खेल में समस्या समाधान, जोड़-तोड़ और सूझ आदि को देखा जा सकता है। फर्क इतना होता है कि इस खेल के नियंता बच्चे स्वयं होते हैं। खेल के दौरान बच्चा खिलौनों का आविष्कार करता है। आसपास की वस्तुओं को खेल में महत्वपूर्ण सहायक सामग्री के रूप में इस्तेमाल करता है। कई बार इन खेलों में वह घर और समुदाय की घटनाओं की नकल उतारने की कोशिश करता है। वह दोस्तों के साथ नियम बनाता है। उनके परिप्रेक्ष्य को स्वीकारता है। अपनी जिज्ञासाओं को साझा करता है। अपने समूह में न केवल समस्याओं को पहचानता है, बल्कि उनके समाधान भी खोजता है। बच्चों के ये खेल-समूह समावेशी होते हैं। इसमें हर नये बच्चे का स्वागत होता है। उसकी मदद की जाती है। स्कूल काम की जिस अवधारणा को बच्चे को सीखता है वह अकसर वयस्कों के द्वारा परिभाषित कार्य होता है जिसके करने के ढंग के प्रति उसे सजग रहना होता है। इन कार्यों में उसके प्रदर्शन, उसके मूल्यांकन का पैमाना होता है। उसके प्रदर्शन को स्टार और गुड जैसे विशेषणों से नवाज़ा जाता है। बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के जिन सिद्धांतों को शिक्षण का आधार माना जाता है वे भी सीखने में बाह्य नियंत्रण का समर्थन नहीं करते हैं। न ही ये सिद्धांत स्कूल के द्वारा संज्ञानात्मक विकास में किसी तीव्र बदलाव की पैरवी करते हैं। इन्हीं आधारों पर बाल केंद्रित शिक्षा के लिए 'खेल' को शिक्षा का माध्यम बनाने की बात की जाती है। इस सुझाव के विपरीत स्कूल उन नियमों

और तौर-तरीकों को स्थापित कर रहे हैं जहाँ खेल, स्कूल के काम के बराबर महत्वपूर्ण नहीं है। इसके पीछे खेल को असंरचित और लक्ष्यहीन मानने की धारणा है। यह धारणा एक सामाजिक उत्पाद है जिसमें यह विश्वास है कि मानसिक श्रम, शारीरिक श्रम से श्रेष्ठ है और यह डर है कि खेल को अधिक महत्व देने से बच्चा *व्हाइट कॉलर जॉब* के रास्ते पर बढ़ने से भटक जाएगा। बाल केंद्रित शिक्षा की दृष्टि से देखें तो स्थानीय और उपलब्ध संसाधनों के आधार पर सीखने की स्वाभाविकता को बनाए रखने की बात की जाती है। लेकिन प्ले स्कूल या नर्सरी कक्षाओं में खेल की सदृश स्थितियों में सीखाने में इन तत्वों का अभाव होता है।

खेल की एक विशेषता होती है कि बच्चे उपलब्ध वस्तुओं को खिलौनों के रूप में इस्तेमाल करते हैं। आसपास के समान में कुछ जोड़-तोड़ कर उन्हें सिखाने का संसाधन बनाया जा सकता है। ऐसा करने के बदले स्कूल के शुरुआती दिनों में बच्चों को अत्याधुनिक तरीके से सजा हुआ प्ले रूम मिलता है। इस में कारखानों में बने खिलौनों की भरमार होती है। निःसंदेह ये बच्चों को आकर्षित करते हैं। इसके साथ ही प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बच्चे को बाज़ार नाम की इकाई से परिचित करा देते हैं। बच्चा यह जानने लगता है कि ये खिलौने बाज़ार में मिलते हैं। बाज़ार से परिचय का क्रम जारी रहता है। अपने आसपास के प्री-स्कूल या नर्सरी के बच्चों को देखिए। कभी उन्हें खास किस्म की वेशभूषा धारण करना होता है

या कभी कोई खास मॉडल या खिलौना आदि लेकर जाना होता है। कभी कोई पोस्टर तो कभी कोई रंग खरीदना होता है। इन ज़रूरतों के बहाने उसे स्टेशनरी की दुकान या ऐसे किसी बाज़ार तक जाना पड़ता है। ऐसे ही स्कूल आने-जाने के क्रम में चिप्स, चॉकलेट और फ्रूटी भी उसकी ज़रूरतों में शुमार हो जाती है। इन चीज़ों से वह पहले से परिचित होता है, लेकिन अब वह इनका अनुबंधन स्कूल आने-जाने से कर लेता है। यदि वह स्कूल न जाता तो भी एक न एक दिन बाज़ार से परिचित होता। लेकिन इस तरह की व्यवस्थाओं ने बच्चे को भी सक्रिय उपभोक्ता बना दिया है। उसमें एक तरह का भाव पैदा किया है कि ज़रूरत की हर चीज़ को खरीदा जा सकता है।

अब तक जिन अवलोकनों की चर्चा की गयी है वे महानगरों में बड़े हो रहे हर बच्चे के अनुभव का हिस्सा हैं। ये अनुभव उसे किस दिशा में ले जा रहे हैं? इसका आकलन पाठक स्वयं कर सकते हैं। मेरे मन में तो बस यही सवाल है कि स्कूल और इसकी व्यवस्थाएँ घर से कैसे और क्यों दूर होती जा रही हैं? क्या यह बड़े होने की मज़बूरी है? या बड़े करने की एक विधि है?

अंततः कह सकते हैं कि समकालीन संदर्भों में स्कूल जाना एक बच्चे के लिए एक विकासात्मक उपलब्धि के समान हो गया है जो बच्चे की पहचान पर अपनी अमिट छाप छोड़ रहा है। यह छाप उसे उत्पादक के रूप में तैयार करने के लक्ष्य से प्रेरित है जहाँ श्रम के बदले सामाजिक प्रतिष्ठा महत्वपूर्ण है।

संदर्भ

- कुमार, के. 2016. 'स्टैंडिंग चाइल्डहुड इन इंडिया'. *इकोनॉमिक एंड पॉलिटीकल वीकली*, 51(23) <https://www.epw.in/author/krishna-kumar> पर देखा गया।
- कोरसरो, डब्ल्यू. 2005. *द सोशियोलॉजी ऑफ़ चाइल्डहुड*. सेज पब्लिकेशंस, लंदन.
- क्लार्क, पी. 2001. *टीचिंग एंड लर्निंग—द कल्चर ऑफ़ पैडागॉजी*. सेज, दिल्ली.
- चौधरी, एन. 2004. *लिसनिंग टू कल्चर — कांस्ट्रक्टिंग रियल्टी फ्रॉम एवरीडे टाक*. थाउज़ेंड ओक्स, दिल्ली.

पूर्व प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा का शिक्षण

पद्मा यादव*

भाषा सीखना एक सहज प्रक्रिया है — यह मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है और यह मनुष्य के वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के विकास के लिए सबसे उपयोगी साधन है। भाषा की शिक्षा से ही मनुष्य का सामाजिक और बौद्धिक विकास होता है। परंतु पढ़ना-लिखना बच्चों को शुरुआत में कठिन लगता है। उसे रोचक और सहज बनाने के लिए इस लेख में कुछ सुझाव दिए गए हैं जो कि शिक्षकों के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध करती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के अनुसार, यह ज़रूरी नहीं है कि बच्चे सारे अक्षर जानने के बाद ही मात्रा पहचान पाएँगे या इस्तेमाल कर पाएँगे। इसमें सार्थक संदर्भ सामग्री की बात कही गई है जिसका प्रयोग अध्यापक की मदद से बच्चे बार-बार लिखित सामग्री को देखते हुए पढ़ने की शुरुआत कर सकते हैं। शिक्षक की मदद से, चित्रों से मिल रहे संकेतों का इस्तेमाल करते हुए और अनुमान लगाते हुए बच्चे पढ़ना सीख सकेंगे। परंतु पाया यह गया है कि यह प्रक्रिया लंबी है और कई बार शिक्षक इसमें कठिनाई महसूस करते हैं। कई शिक्षकों का मानना है कि बच्चों को लिखित और मुद्रित सामग्री से भरपूर परिवेश उपलब्ध कराया भी जाए तब भी अक्षरों के पहचान की प्रक्रिया बच्चों के लिए मुश्किल होती

है। जब तक कि उन्हें व्यवस्थित ढंग से अक्षर बोध न करवाया जाए परंतु कुछ का मानना है कि यदि बच्चों को पढ़ने-लिखने का माहौल दिया जाए तो बच्चे स्वयं ही पढ़ने के लिए प्रेरित हो जाते हैं।

क्या करें शिक्षक?

प्रारंभिक कक्षाओं की शुरुआत में बच्चों में स्कूल को लेकर भय होता है। विशेषकर उन बच्चों को भय होता है जो बिना पूर्व प्राथमिक शिक्षा का अनुभव लिए सीधे कक्षा एक प्रवेश पाते हैं। ज्यादातर ऐसे बच्चे शिक्षकों से एवं अन्य बच्चों से झिझकते हैं। पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया उनके लिए बिल्कुल नई होती है। भाषा का सबसे महत्वपूर्ण कौशल सुनना है। अगर किसी भाषा को हम सीखना चाहते हैं तो उसे सुनने और बोलने का मौका मिलने पर हम आसानी से उस भाषा को सीख सकते हैं। इसीलिए सुझाव यह है कि स्कूली शिक्षा की शुरुआत सीधे अक्षर ज्ञान से नहीं की जानी चाहिए। किसी भी भाषा को सीखने के लिए उस भाषा से परिचित होना आवश्यक होता है

* प्रोफ़ेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली 110 016

और यह काम कक्षा में संवाद से ही किया जा सकता है। कक्षा का संवाद बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति को मज़बूती देता है, भाषा से परिचित कराता है और सीखे गए को अनुभव से जोड़ने में मदद करता है।

आरंभ में बच्चों को कुछ पशुओं, पक्षियों, फल, सब्जियों, यातायात के साधनों और पेड़-पौधों के चित्र दिखाने चाहिए, ताकि बच्चों का ध्यान पुस्तक पर केंद्रित हो सके तथा रोचक और उपयोगी बातचीत के लिए आधार बन सके।

चित्रों को देखकर उन पर बातचीत करने से बच्चों की झिझक खुलती है। बच्चों के लिए स्कूल का वातावरण घर से बिल्कुल अलग होता है। पहले उन्हें नए वातावरण से परिचित होने का पूरा अवसर देना चाहिए, जैसे — शौचालय कहाँ है? खेल के मैदान की तरफ कैसे जाएंगे? हाथ कहाँ धोया जा सकता है? खेल-खिलौने कहाँ रखे हैं? पीने का पानी कहाँ है? आदि।

कोई कहानी, कविता या गीत सुनकर भी पढ़ने-लिखने की दिशा में प्रेरित हो सकते हैं। उनको इसके लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

एन.सी.एफ़. 2005

बच्चों से उनके घर-परिवार, पास-पड़ोस, खेल-कूद आदि पर बातचीत करें, कहानियाँ सुनाइए, पहेलियाँ बूझें और उचित अंग संचालन (body movements) के साथ गाना गवाइए। इन क्रियाओं से बच्चों की झिझक खुलती है।

कहानियों में बच्चे विशेष रुचि रखते हैं। कहानियाँ बच्चों की कल्पनाओं को विस्तार देती हैं, उनमें अनुमान लगाने के कौशल को विकसित करती हैं, घटनाओं को क्रमबद्ध करके रखने में मदद

करती हैं और कहानी की संरचना को समझने में मदद करती हैं। इसके लिए कक्षा में कहानियाँ सुनने-सुनाने की गतिविधियों को प्रमुख स्थान मिलना चाहिए। किताबों में छपे चित्रों पर होने वाली चर्चा बच्चों के भाषा का इस्तेमाल करने का एक सुंदर मौका देती है। इसलिए चित्र कहानी बनाना, चित्र कहानी को शब्द देना, दो चित्रों में अंतर खोजना आदि इसी तरह की गतिविधियाँ हो सकती हैं जो भाषा को निखारने में मदद कर सकती हैं। चित्रों को देखने से बच्चों की आँखें पुस्तक या कागज़ पर छपी किसी चीज़ को देखने के लिए तैयार हो जाती हैं। साथ ही हाथ और आँख में तालमेल हो जाता है जिससे की बच्चे पुस्तक पर अँगुली रख पढ़ने का अभ्यास करने लगते हैं। अगर हम कहानियों के कार्ड बना लें, यानि कि यदि हम किसी छोटी सी कहानी को चार टुकड़ों में बाँट लें और उनके चित्र कार्ड बना लें फिर क्रमिक घटना के हिसाब से क्रम वार एक-एक कार्ड दिखाकर बच्चों को कहानी सुनाते चलें तो बच्चे कहानी सुनने के साथ-साथ चित्रों के माध्यम से ज्यादा ताल-मेल बिठा सकते हैं और कहानी समझ सकते हैं। इस दौरान हम कहानी के चित्र कार्डों को बाईं से दाईं ओर और ऊपर से नीचे क्रम से रखते जाएँ तो बच्चों की आँखों को बाईं ओर से दाईं ओर तथा ऊपर से नीचे की ओर जाने का भी अभ्यास हो सकेगा साथ ही क्रमवार सोचना भी आ जाएगा। शिक्षिका बच्चों को एक चित्र दिखा कर कह सकती हैं — देखो चित्र में कौन-कौन है? क्या हो रहा है? देखो कहानी में फिर क्या हुआ; ढूँढ़ो और क्रम से लगाओ (पहले रखे कार्ड के दाईं ओर दूसरा कार्ड रखवाओ), फिर देखो क्या हुआ (याद करो) और कार्ड को क्रम से लगाओ इत्यादि।



शिक्षिका एक पिक्चर कार्ड दिखाकर भी पूछ सकती हैं — बताओ या सोचो क्या हुआ होगा; आगे क्या होगा इत्यादि।

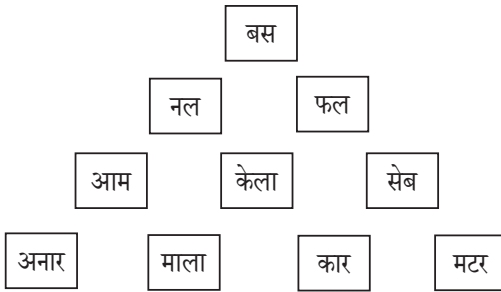
मानसिक विकास के लिए इस प्रकार की गतिविधियाँ बहुत ही सहायक होती हैं।

प्रारंभिक दो-तीन सप्ताह उपर्युक्त क्रियाएँ कराई जानी चाहिए। जब बच्चों को कहानी सुनाए तब उसमें प्रयुक्त शब्दों की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें, ताकि बच्चों के शब्द भण्डार में वृद्धि हो सके और वे खेल-खेल में नए शब्दों और अक्षरों से परिचित हो सकें। खेल-खेल में बच्चों को अक्षर-ज्ञान आरंभ कराया जा सकता है।

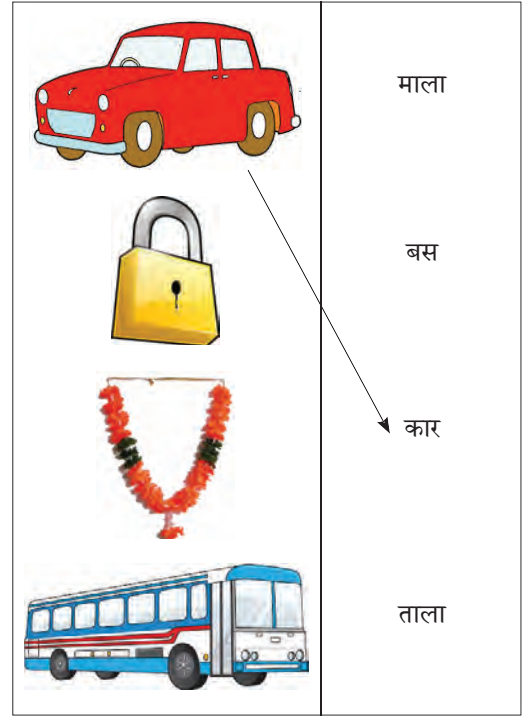
हिंदी भाषा के सभी लिपि चिह्नों के प्रयोग की आवृत्ति समान नहीं होती है। क, म, र, न, ल, स, ब आदि व्यंजनों का प्रयोग कहीं अधिक होता है। छ, ढ, ण, ट, ष का प्रयोग कम होता है। स्वरों की तुलना में उनकी मात्राओं का प्रयोग कहीं अधिक होता है। यह इसलिए अच्छा होता है यदि हम ज्यादा प्रयोग किए जाने वाले लिपि संकेत से बच्चों को पहले परिचित कराएँ। इससे बच्चे उनसे बनने वाले

शब्दों को सरलता से पढ़ना सीख सकेंगे। बिना मात्रा वाले शब्द पहले लिए जाने चाहिए फिर ज्यादा प्रयुक्त मात्रा वाले। जैसे — पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अंत तक बच्चों को यदि कुछ स्वर, व्यंजनों का ज्ञान होने लगे तो आगे पढ़ने लिखने में रुचि बढ़ने लगती है। स्वर, व्यंजन, मात्राएँ, संयुक्ताक्षर (क्ष, त्र, ज्ञ) कक्षा 2-3 में आते-आते या अंत तक आ जाते हैं, इनको चित्रों के माध्यम से और भी आसानी से सिखाया जा सकता है। दूसरी कक्षा के अंत तक बच्चे हिंदी भाषा के सभी परिचित शब्दों को लगभग पढ़ने में समर्थ होने लगते हैं और परिचित व्यंजनों के साथ सीखी हुई मात्राओं के योग का अभ्यास करने लगते हैं तथा तीसरी कक्षा में हिंदी के अतिरिक्त गणित तथा पर्यावरण अध्ययन की किताबें पढ़ने के लिए तैयार होने लगते हैं। शब्दों का चयन कक्षा 1 और 2 में ऐसा होना चाहिए जिससे कि हिंदी भाषा-भाषी बच्चे प्रायः परिचित हों, ताकि विद्यालय में आने के बाद और पुस्तकों में शब्द या चित्र देखने के उपरांत उन्हें वे नए नहीं लगे। लिपि चिह्नों के योग से बनने वाले शब्दों को पढ़ने के अभ्यास से, उन शब्दों के मेल से बनने

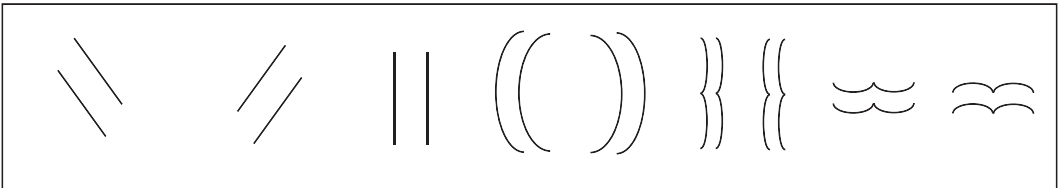
वाले वाक्यों को पढ़ने की योग्यता से बच्चों में भाषा का विकास निरंतर होता जाता है। शब्दों की आवृत्ति बढ़ने से पढ़ने की गति में तीव्रता आती है। इससे ज्ञान सुदृढ़ होता है। मिलान (matching) क्रियाएँ भी करा सकते हैं। एक तरफ कुछ जाने पहचाने चित्र दे दीजिए और इन चित्रों में दिखाई गई वस्तुओं के नाम बच्चे नए शब्दों में से खोजें तो शब्दों को पहचानने का उनका अभ्यास बढ़ेगा और वे इनके अर्थ और प्रयोग अच्छी तरह समझ सकेंगे।



चित्र बनाना बच्चों का पसंदीदा काम है। चित्रों की भी अपनी भाषा होती है जिनका उपयोग बच्चों की कल्पना शक्ति को निखारने, मौलिक अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने आदि में किया जा सकता है। पढ़ने के साथ-साथ बच्चों को लिखने का अभ्यास भी कराना चाहिए। सुसंगत लिखना भाषा के आवश्यक कौशलों में से एक है मगर यहाँ सुसंगतता का आशय केवल लिपि या व्याकरण की शुद्धता से ही नहीं है वरन् बच्चे अपनी बात को कितनी अच्छी तरह से लिखकर बता पा रहे



हैं यह देखना भी महत्वपूर्ण है। शुरुआत में बच्चों को मोमी रंग (क्रेयान) देकर सफेद बड़े कागज पर रगड़ने (Scribbling) के लिए दे सकते हैं। उन्हें कुछ बड़े चित्र दे सकते हैं और उन्हें चित्र में रंग भरने को कह सकते हैं। इससे बच्चों की छोटी मांसपेशियों (finger muscles) का विकास होगा। अँगुलियाँ पेंसिल पकड़ने के लिए धीरे-धीरे तैयार हो जाएँगी। फिर बच्चों को कुछ सरल आकृतियाँ दे सकते हैं जिनका अनुकरण बच्चे स्लेट या कागज पर कर सकते हैं। (कृपया नीचे दिया गया चित्र देखें)



इससे बच्चे आकृतियों को पहचानने लगेंगे और साथ ही उन्हें अपनी अँगुलियों पर नियंत्रण भी प्राप्त होगा। रेखाओं का चयन ऐसा होना चाहिए कि जिनके योग से देवनागरी के वर्ण बन सकते हों। इससे बच्चे लिखना सीखने के लिए भली प्रकार तैयार हो सकेंगे। शुरुआत में कुछ वर्ण लिखने के लिए दिए जा सकते हैं फिर कुछ शब्द और फिर वाक्य। पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया के साथ अध्यापक बोलते समय सरल बोल-चाल की भाषा का प्रयोग करे तो अच्छा रहता है। इससे बच्चों को बातचीत करने का अभ्यास भी सहज रूप से हो जाता है।

पढ़कर अर्थ निर्माण करना भाषा शिक्षण का महत्वपूर्ण कार्य है। पढ़ने की प्रक्रिया को भाषा की अन्य प्रक्रियाओं से अलग करके नहीं सिखाया जा सकता। पढ़ने के द्वारा बच्चों की सुनने, बोलने, लिखने समझने और सोचने की योग्यताएँ भी विकसित होती हैं। कहानी या कविताओं का चयन इस प्रकार होना चाहिए कि जिनसे बच्चों में सहायता, सहयोग, बाँट कर उपयोग करना, दया, सफ़ाई, शिष्टाचार, आज्ञा पालन, पर्यावरण और स्वास्थ्य के प्रति सजगता आदि गुणों का विकास करने में भी सहायता मिले। प्रत्येक बच्चे को बोलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

बच्चे के मस्तिष्क में शब्द एक चित्र के रूप में स्थापित होते हैं। किसी चित्र के सहारे वर्णों का परिचय कराया जाता है। चित्र को देखकर बच्चा यदि चित्र का नाम बता दे तो उसे पढ़ना मानना उचित नहीं होगा। यह

पढ़ने की शुरुआत तो हो सकती है मगर पढ़ना नहीं है। बच्चों में पढ़ने की योग्यता तभी विकसित माननी चाहिए जब वे शब्दों को केवल लिखित रूप में देखकर ही पढ़ सकें, पढ़ने के लिए चित्र के सहारे की आवश्यकता न पड़े। सभी बच्चों पर बराबर ध्यान शुरुआत से ही देना चाहिए तो कोई कमज़ोर रहेगा ही नहीं।

पढ़ने के साथ-साथ सुनना, बोलना और सोचना भी चलता रहना चाहिए। अगर बच्चे सरल आकृतियाँ बनाने लगते हैं तो उन्हें वर्ण लिखने में कठिनाई नहीं होगी। वर्णों की शुद्ध और सुडौल बनावट पर बल देना चाहिए। छोटे बच्चों को कविताएँ बहुत अच्छी लगती हैं। अभिनयात्मक ढंग से कविता और कहानियों का प्रयोग करना चाहिए और करवाना चाहिए। शिक्षक स्वरचित व चयनित शिशु गीत और कविताओं को यदि बच्चों को गवाते हैं तो बच्चे तनावमुक्त रहते हैं और उनके सिखाने की तत्परता बनी ही रहती है। बच्चों को कहानी अवश्य सुनानी चाहिए, क्योंकि हर कहानी में कुछ विचार उभर कर आते हैं। इससे बच्चों में सुनने और बोलने की योग्यता का विकास तो होता ही है साथ ही तर्क शक्ति भी बढ़ती है।

इस तरह का प्रयोग करके यदि शिक्षक करके देखें तो शायद हिंदी पढ़ने-लिखने की शुरुआत के साथ-साथ सीखना आसान हो जाएगा और सुदृढ़ता बढ़ेगी। लिखित भाषा का भरपूर परिवेश यदि स्कूल में बनाया जाए तो पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास करने में बच्चों को सहायता मिलेगी।

संदर्भ

- एन.सी.ई.आर.टी. 2006. रिमझिम 1 पहली कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.
 ———. 2006. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित सीखने के प्रतिफल (कक्षा 6 से 8)

पाठ्यचर्या की अपेक्षाएँ

बच्चों से अपेक्षाएँ की जाती हैं कि वे —

- संख्याओं के मूर्त विचार से संख्या बोध की ओर अग्रसर हो सकें।
- संख्याओं के बीच संबंध देखें तथा संबंधों में पैटर्न ढूँढ़ सकें।
- चर, व्यंजक, समीकरण, सर्वसमिकाओं आदि से संबंधित अवधारणाओं को समझ सकें तथा प्रयोग कर सकें।
- वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने के लिये अंकगणित तथा बीजगणित का प्रयोग कर सकें तथा अर्थपूर्ण प्रश्न बना सकें।
- त्रिभुज, वृत्त, चतुर्भुज जैसी आकृतियों में सममिति की खोज कर सौंदर्यबोध का विकास कर सकें।
- स्थान को एक आकृति की सीमाओं में बंद क्षेत्र के रूप में पहचान सकें।
- परिमाण, क्षेत्रफल, आयतन के संदर्भ में स्थान संबंधी समझ विकसित कर सकें तथा उसका प्रयोग दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने में कर सकें।
- गणितीय संदर्भ में स्वयं द्वारा खोजे गए निष्कर्षों को तर्कसंगत सिद्ध करने हेतु उचित कारण तथा ठोस तर्क प्रस्तुत करना सीखें।
- परिवेश से प्राप्त जानकारीयों/आँकड़ों को एकत्र कर आरेखीय एवं सारणीबद्ध रूप से प्रस्तुत कर सकें तथा उनकी व्याख्या कर सकें।



कक्षा 6 (गणित)

सीखने-सीखाने की प्रस्तावित प्रक्रियाएँ	सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)
<p>सभी शिक्षार्थियों को जोड़ों में/समूहों में/व्यक्तिगत रूप से कार्य करने के अवसर दिए जाएँ तथा उन्हें प्रोत्साहित किया जाए कि वे —</p> <ul style="list-style-type: none"> 8 अंकों तक की संख्याओं वाली स्थितियों के विषय में चर्चा करें, जैसे — किसी संपत्ति का मूल्य, विभिन्न शहरों की कुल आबादी, आदि। दो मकानों के मूल्य, दर्शकों की संख्या, पैसों के लेन-देन आदि स्थितियों के द्वारा संख्याओं की तुलना करें। सम, विषम आदि गुणों के आधार पर संख्याओं का वर्गीकरण करें। संख्याओं में उस पैटर्न का अवलोकन करें जिससे 2, 3, 4, 5, 6, 8, 10 तथा 11 से विभाज्यता के नियमों का पता लगे। अंकों के पैटर्न बनाएँ जिसके द्वारा महत्तम समापवर्तक तथा लघुत्तम समापवर्तक पर चर्चा की जा सके। परिवेश से ऐसी स्थितियों की छानबीन करें जिनमें महत्तम समापवर्तक तथा लघुत्तम समापवर्तक का प्रयोग होता है। दैनिक जीवन में ऋणात्मक संख्याओं से संबंधित स्थितियों पर विचार करें तथा उन पर चर्चा करें। ऐसी स्थितियों का अवलोकन करें जिन्हें भिन्न तथा दशमलव द्वारा प्रदर्शित करने की आवश्यकता हो। गणितीय संदर्भों में अज्ञात राशियों को चर राशियों (वर्णमाला के अक्षरों द्वारा) से प्रदर्शित करने की आवश्यकता के महत्त्व को समझें और प्रयोग करें। 	<p>बच्चे —</p> <ul style="list-style-type: none"> बड़ी संख्याओं से संबंधित समस्याओं को उचित संक्रियाओं (जोड़, घटा, गुणन, भाग) के प्रयोग द्वारा हल करते हैं। पैटर्न के आधार पर संख्याओं को सम, विषम, अभाज्य संख्या, सह अभाज्य संख्या आदि के रूप में वर्गीकरण कर पहचानते हैं। विशेष स्थिति में महत्तम समापवर्तक या लघुत्तम समापवर्तक का उपयोग करते हैं। पूर्णांकों के जोड़ तथा घटा से संबंधित समस्याओं को हल करते हैं। पैसा, लंबाई, तापमान आदि से संबंधित स्थितियों में भिन्न तथा दशमलव का प्रयोग करते हैं, जैसे — $7\frac{1}{2}$ मीटर कपड़ा, दो स्थानों के बीच दूरी 112.5 किलोमीटर आदि। दैनिक जीवन की समस्याओं, जिनमें भिन्न तथा दशमलव का जोड़/घटा हो, को हल करते हैं। किसी स्थिति के सामान्यीकरण हेतु चर राशि का विभिन्न संक्रियाओं के साथ प्रयोग करते हैं, जैसे — किसी आयत का परिमाप जिसकी भुजाएँ x इकाई तथा 3 इकाई हैं, $2(x+3)$ इकाई होगा। अलग-अलग स्थितियों में अनुपात का प्रयोग कर विभिन्न राशियों की तुलना करते हैं, जैसे — किसी विशेष कक्षा में लड़कियों एवं लड़कों का अनुपात $3:2$ है। एकक विधि का प्रयोग विभिन्न समस्याओं को हल करने के लिए करते हैं, जैसे — यदि 1 दर्जन कॉपियों की कीमत दी गई हो तो 7 कॉपियों की कीमत ज्ञात करते हैं।

- चरों (वर्णमाला के अक्षर) के प्रयोग की आवश्यकता की छानबीन करें एवं सामान्यीकरण करें।
- ऐसी स्थितियों की चर्चा करें जिनमें अनुपात के माध्यम से राशियों की तुलना की आवश्यकता हो।
- ऐसी शाब्दिक समस्याओं पर चर्चा करें एवं उन्हें हल करें जिनमें अनुपात तथा एकक विधि का प्रयोग हो।
- विभिन्न आकृतियों के गुणों को मूर्त मॉडल तथा विविध ज्यामितीय आकृतियों, जैसे — त्रिभुज तथा चतुर्भुज आदि के चित्रों द्वारा खोजें।
- व्यक्तिगत रूप से या समूहों में से कक्षा-कक्ष के अंदर अथवा बाहर विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों को पहचानें तथा उनके गुणों का अवलोकन करें।
- तीलियों या पेपर कटिंग के माध्यम से विभिन्न आकृतियाँ बनाएँ।
- 3D आकृतियों के विभिन्न मॉडल तथा जाल (नेट), जैसे — घनाभ, बेलन आदि का अवलोकन करें तथा 3D आकृतियों के विभिन्न अवयव, जैसे — फलक, किनारे व शीर्ष पर चर्चा करें।
- कोणों की अवधारणा को कुछ उदाहरणों द्वारा साझा करें, जैसे — दरवाजे का खुलना, पेंसिल बॉक्स का खुलना आदि। अपने परिवेश से कोण संबंधी अवधारणा के और अधिक उदाहरण प्रस्तुत करें।
- कोणों का घूर्णन (घुमाव) के आधार पर वर्गीकरण करें।
- ज्यामितीय अवधारणाओं, जैसे — रेखा, रेखाखंड, खुली एवं बंद आकृतियों, कोण, त्रिभुज, चतुर्भुज, वृत्त आदि का अपने परिवेश के उदाहरणों द्वारा वर्णन करते हैं।
- कोणों की समझ को निम्नानुसार व्यक्त करते हैं —
 - अपने परिवेश में कोणों के उदाहरण की पहचान करते हैं।
 - कोणों को उनके माप के आधार पर वर्गीकृत करते हैं।
 - 45° , 90° , 180° को संदर्भ कोण के रूप में लेकर अन्य कोणों के माप का अनुमान लगाते हैं।
- रेखिक सममिति के बारे में अपनी समझ निम्नानुसार व्यक्त करते हैं —
 - द्वि-आयामी (2D) आकृतियों में, वह सममित आकृतियाँ पहचानते हैं जिनमें एक या अधिक सममित रेखाएँ हैं।
 - सममित द्वि-आयामी (2D) आकृतियों की रचना करते हैं।
- त्रिभुजों को उनके कोण तथा भुजाओं के आधार पर वर्गीकृत करते हैं, जैसे — भुजाओं के आधार पर विषमबाहु त्रिभुज, समद्विबाहु त्रिभुज, समबाहु त्रिभुज आदि।
- चतुर्भुजों को उनके कोण तथा भुजाओं के आधार पर विभिन्न समूहों में वर्गीकृत करते हैं।
- अपने परिवेश में स्थित विभिन्न 3D वस्तुओं की पहचान करते हैं, जैसे — गोला, घन, घनाभ, बेलन, शंकु आदि।
- 3D वस्तुओं/आकृतियों के किनारे, शीर्ष, फलक का वर्णन कर उदाहरण देते हैं।

- आयताकार वस्तुओं का परिमाण तथा क्षेत्रफल ज्ञात करते हैं, जैसे — कक्षा का फ़र्श, चॉक के डिब्बे की ऊपरी सतह का परिमाण तथा क्षेत्रफल।
- दी गई/ संकलित की गई सूचना को सारणी, चित्रालेख, दंड आलेख के रूप में प्रदर्शित कर व्यवस्थित करते हैं और उसकी व्याख्या करते हैं, जैसे — विगत छह माह में किसी परिवार के विभिन्न सामग्रियों पर हुए खर्च को।

कक्षा 7 (गणित)

सीखने-सिखाने की प्रस्तावित प्रक्रियाएँ

सभी शिक्षार्थियों को जोड़ों में/समूहों में/व्यक्तिगत रूप से कार्य करने के अवसर दिए जाएँ तथा उन्हें प्रोत्साहित किया जाए कि वे—

- पूर्णकों के गुणन तथा भाग के नियमों को खोजें। यह कार्य संख्या रेखा अथवा संख्या पैटर्न के द्वारा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए—

$$3 \times 2 = 6$$

$$3 \times 1 = 3$$

$$3 \times 0 = 0 \quad \text{अर्थात् एक धनात्मक पूर्णांक का}$$

$$3 \times (-1) = -3 \quad \text{गुणा ऋणात्मक पूर्णांक से करते}$$

$$3 \times (-2) = -6 \quad \text{हैं तो परिणाम एक ऋणात्मक}$$

$$3 \times (-3) = -9 \quad \text{पूर्णांक प्राप्त होता है।}$$

- (क) $\frac{1}{4} \times \frac{1}{2}$ का अर्थ है, $\frac{1}{4}$ का $\frac{1}{2} = \frac{1}{8}$



(ख) $\frac{1}{2} \div \frac{1}{4}$ का अर्थ है, $\frac{1}{2}$ में $\frac{1}{4}$ 2 बार है।



- भिन्न/दशमलव की गुणा/भाग को चित्रों द्वारा, कागज मोड़कर या दैनिक जीवन के उदाहरणों से खोजें।
- उन स्थितियों की चर्चा करें जिनमें भिन्नात्मक संख्याओं को एक-दूसरे से विपरीत दिशाओं में प्रयोग किया जाता है, जैसे— एक पेड़ के $10\frac{1}{2}$ मीटर दाईं ओर पहुँचना तथा इसके $15\frac{2}{3}$ मीटर बाईं ओर आदि।

सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)

बच्चे—

- दो पूर्णाकों का गुणन/भाग करते हैं।
- भिन्नों के भाग तथा गुणन की व्याख्या करते हैं।
- उदाहरण के लिए $\frac{2}{3} \times \frac{4}{5}$ की व्याख्या $\frac{2}{3}$ का $\frac{4}{5}$ के रूप में करते हैं। इसी प्रकार $\frac{1}{2} \div \frac{1}{4}$ की व्याख्या इस रूप में करते हैं कि कितने $\frac{1}{4}$ मिलकर $\frac{1}{2}$ बनाते हैं?
- परिमेय संख्या से संबंधित दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करते हैं।
- दैनिक जीवन से संबंधित समस्याओं, जिनमें परिमेय संख्या भी शामिल हैं, को हल करते हैं।
- बड़ी संख्याओं के गुणन तथा भाग को सरल करने हेतु संख्याओं के घातांक रूप का प्रयोग करते हैं।
- दैनिक जीवन की समस्याओं को सरल समीकरण के रूप में प्रदर्शित करते हैं तथा हल करते हैं।
- बीजीय व्यंजकों का योग तथा अंतर ज्ञात करते हैं।
- उन राशियों को पहचानते हैं जो समानुपात में हैं, जैसे— विद्यार्थी यह बता सकते हैं कि 15, 45, 40, 120 समानुपात में हैं, क्योंकि $\frac{15}{45}$ का मान $\frac{40}{120}$ के बराबर है।
- प्रतिशत को भिन्न तथा दशमलव में एवं भिन्न तथा दशमलव को प्रतिशत में रूपांतरित करते हैं।
- लाभ/हानि प्रतिशत तथा साधारण ब्याज में दर प्रतिशत की गणना करते हैं।
- कोणों के जोड़े को रेखीय, पूरक, संपूरक, आसन्न कोण, शीर्षाभिमुख कोण के रूप में वर्गीकृत करते हैं तथा एक कोण का मान ज्ञात होने पर दूसरे कोण का ज्ञात करते हैं।

- यह खोज करें कि गुणन की पुनरावृत्ति को कैसे लघु रूप में व्यक्त किया जाए, जैसे — $2 \times 2 \times 2 \times 2 \times 2 = 26$
- चर तथा अचर राशियों को विभिन्न संक्रियाओं के साथ संयोजित कर सभी संभावित बीजीय व्यंजकों को विभिन्न सदंशों में खोज करें।
- दैनिक जीवन की ऐसी स्थितियों को प्रस्तुत करें जिनमें समीकरण बनाने की आवश्यकता हो तथा चर का वह मान ज्ञात करें जो समीकरण को संतुष्ट कर दे।
- समान समूह की वस्तुओं को जोड़ने/घटाने की गतिविधियों का आयोजन करें जो दैनिक जीवन से संबंधित हों।
- अनुपात तथा प्रतिशत (अनुपातों की तुलना) की अवधारणा की समझ हेतु चर्चा करें।
- दैनिक जीवन से संबंधित स्थितियों पर चर्चा करें जो लाभ/हानि तथा साधारण ब्याज पर आधारित हों तथा जिनमें प्रतिशत का उपयोग होता है।
- दैनिक जीवन के उन उदाहरणों को खोजें जिनमें कोणों के जोड़े में एक उभयनिष्ठ शीर्ष हो। उदाहरण के लिए, कैची, चौराहा, अक्षर X, T आदि।
- चित्र बनाकर कोणों के युग्म के विभिन्न गुणों का सत्यापन करें (एक समूह एक कोण का माप दें तो दूसरा समूह दूसरे कोण का माप बताएँ)।
- जब दो समांतर या असमांतर रेखाओं को एक तिर्यक रेखा काटे तो प्राप्त विभिन्न कोणों के जोड़े के बीच संबंध को प्रदर्शित करें। उच्च प्राथमिक स्तर की गणित किट (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित) एवं चित्रों के माध्यम से त्रिभुज के कोणों तथा उसकी भुजाओं के बीच संबंध प्रदर्शित करें।
- विभिन्न प्रकार के त्रिभुज की रचना करें। त्रिभुज के कोणों को मापें तथा उनके योग का सत्यापन करें।
- तिर्यक रेखा द्वारा दो रेखाओं को काटने से बने कोणों के जोड़े के गुणधर्म का सत्यापन करते हैं।
- यदि त्रिभुज के दो कोण ज्ञात हो तो तीसरे अज्ञात कोण का मान ज्ञात करते हैं।
- त्रिभुजों के बारे में दी गई सूचना, जैसे — SSS, SAS, ASA, RHS के आधार पर त्रिभुजों की सर्वांगसमता की व्याख्या करते हैं।
- पैमाना (स्केल) तथा परकार की सहायता से एक रेखा के बाहर स्थित बिंदु से रेखा के समांतर एक अन्य रेखा खींचते हैं।
- एक बंद आकृति के अनुमानित क्षेत्रफल की गणना इकाई वर्ग ग्रिड/ ग्राफ़ पेपर के द्वारा करते हैं।
- आयत तथा वर्ग द्वारा घिरे क्षेत्र के क्षेत्रफल की गणना करते हैं।
- दैनिक जीवन के साधारण आँकड़ों के लिए विभिन्न प्रतिनिधि मानों, जैसे — समांतर माध्य, मध्यिका, बहुलक की गणना करते हैं।
- वास्तविक जीवन की स्थितियों में परिवर्तनशीलता को पहचानते हैं, जैसे — विद्यार्थियों की ऊँचाइयों में परिवर्तन, घटनाओं के घटित होने की अनिश्चितता, जैसे — सिक्के को उछालना।
- दंड आलेख के द्वारा आँकड़ों की व्याख्या करते हैं, जैसे — गर्मियों में बिजली की खपत सर्दियों के मौसम से ज्यादा होती है, किसी टीम द्वारा प्रथम 10 ओवर में बनाए गए रनों का स्कोर आदि।

- त्रिभुजों के बहिष्कोण के गुण तथा पाइथागोरस प्रमेय का पता लगायें।
- अपने परिवेश से सममित आकृतियों को पहचानें जिनमें घूर्णन सममिति हो।
- कागज़ को मोड़ने के क्रियाकलाप द्वारा सममितता की कल्पना करें।
- सर्वांगसमता की कसौटी स्थापित करें तथा उनका सत्यापन एक आकृति को दूसरे के ऊपर इस प्रकार रखकर करें कि वे एक-दूसरे को पूरा-पूरा ढक लें।
- सक्रिय भागीदारी द्वारा एक रेखा के बाहर स्थित बिंदु से उस रेखा के समांतर एक अन्य रेखा खींचने का प्रदर्शन करें।
- पैमाना तथा परकार (Compass) की सहायता से सरल त्रिभुज की रचना करें।
- कार्डबोर्ड/मोटे कागज़ पर विभिन्न बंद आकृतियों के कट-आउट बनाए तथा आकृतियों का ग्राफ़ पेपर पर खाका खींचें।
- ग्राफ़ पेपर पर आकृति द्वारा घेरे हुए स्थान पर इकाई वर्ग की गिनती करें (पूर्ण/आधा आदि) तथा अनुमानित क्षेत्रफल ज्ञात करें।
- चर्चा के माध्यम से आयत/वर्ग के क्षेत्रफल के सूत्र तक पहुँचें।
- समांतर माध्य, बहुलक या मध्यिका के रूप में असमूहीकृत आँकड़ों का प्रतिनिधि मान ज्ञात करें। उन्हें प्रोत्साहित करें कि आँकड़ों को सारणी के रूप में लिखकर उसे दंड आलेख के रूप में प्रदर्शित करें।
- उपलब्ध आँकड़ों से भविष्य की घटनाओं के लिए निष्कर्ष निकालें।

- उन स्थितियों की चर्चा करें जिसमें “अवसर या मौका या संभावना” शब्द का प्रयोग हो, जैसे — आज बारिश होने की कितनी संभावना है, या किसी पासे को लुढ़काने में ‘6’ अंक प्राप्त होने की कितनी संभावना है।
- “किसी त्रिभुज की दो भुजाओं की लंबाइयों का योग तीसरी भुजा से बड़ा होता है” को जानें तथा सत्यापित करें।

कक्षा 8 (गणित)

सीखने-सिखाने की प्रस्तावित प्रक्रियाएँ	सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)
<p>सभी शिक्षार्थियों को जोड़ों में/समूहों में/व्यक्तिगत रूप से कार्य करने के अवसर दिए जाएँ तथा उन्हें प्रोत्साहित किया जाए कि वे—</p> <ul style="list-style-type: none"> परिमेय संख्याओं पर सभी संक्रियाओं के साथ उदाहरण खोजें तथा इन संक्रियाओं में पैटर्न खोजें। 3 अंकों तक की संख्या के सामान्यीकरण रूप का प्रयोग करें तथा बीजगणित की समझ द्वारा 2, 3, 4,..... से भाज्यता का नियम खोजें, जिसे इससे पूर्व की कक्षाओं में पैटर्न के अवलोकन द्वारा खोजा गया था। वर्ग, वर्गमूल, घन तथा घनमूल संख्याओं में पैटर्न खोजें तथा पूर्णांकों को घातांक के रूप में व्यक्त करने के लिए नियम बनाएँ। ऐसी स्थिति का अवलोकन करें जो उन्हें समीकरण बनाने के लिए प्रेरित करें तथा समीकरण को उचित विधि द्वारा हल करें। वितरण गुण की समझ के आधार पर दो बीजीय व्यंजकों एवं बहुपदों को गुणा करें तथा विभिन्न बीजगणित सर्वसमिकाओं का मूर्त उदाहरणों द्वारा सामान्यीकरण करें। दो संख्याओं के गुणनफल की समझ के आधार पर उचित क्रियाकलापों द्वारा बीजीय व्यंजकों के गुणनखंड करें। ऐसे संदर्भों का अवलोकन करें जिनमें प्रतिशत का प्रयोग विभिन्न संदर्भों, जैसे—छूट, लाभ, हानि, जी.एस.टी.(GST), साधारण तथा चक्रवृद्धि ब्याज आदि में होता है। 	<p>बच्चे—</p> <ul style="list-style-type: none"> परिमेय संख्याओं में योग, अंतर, गुणन, तथा भाग के गुणों का एक पैटर्न द्वारा सामान्यीकरण करते हैं। दो परिमेय संख्याओं के बीच अनेक परिमेय संख्याएँ ज्ञात करते हैं। 2, 3, 4, 5, 6, 9 तथा 11 से विभाजन के नियम को सिद्ध करते हैं। संख्याओं का वर्ग, वर्गमूल, घन, तथा घनमूल विभिन्न तरीकों से ज्ञात करते हैं। पूर्णांक घातों वाली समस्याएँ हल करते हैं। चरों का प्रयोग कर दैनिक जीवन की समस्याएँ तथा पहेली हल करते हैं। बीजीय व्यंजकों को गुणा करते हैं, जैसे $(2x-5)$ $(3x+7)$ का विस्तार करते हैं। विभिन्न सर्वसमिकाओं का उपयोग दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए करते हैं। प्रतिशत की अवधारणा का प्रयोग लाभ तथा हानि की स्थितियों में छूट की गणना, जी.एस.टी.(GST), चक्रवृद्धि ब्याज की गणना के लिए करते हैं, जैसे— अंकित मूल्य तथा वास्तविक छूट दी गई हो तो छूट प्रतिशत ज्ञात करते हैं अथवा क्रय मूल्य तथा लाभ की राशि दी हो तो लाभ प्रतिशत ज्ञात करते हैं। समानुपात तथा व्युत्क्रमानुपात (direct and inverse proportion) पर आधारित प्रश्न हल करते हैं। कोणों के योग के गुणधर्म का प्रयोग कर चतुर्भुज के कोणों से संबंधित समस्याएँ हल करते हैं।

- बार-बार साधारण ब्याज के रूप में चक्रवृद्धि ब्याज के लिए सूत्र का सामान्यीकरण करें।
- ऐसी स्थितियों का अवलोकन करें जिनमें एक राशि दूसरी पर निर्भर करती है। वे ऐसी परिस्थितियों को पहचानें जिनमें एक राशि के बढ़ने से दूसरी में भी वृद्धि होती है या एक राशि के बढ़ने से दूसरी घटती है, जैसे — किसी वाहन की गति बढ़ने पर उसके द्वारा तय की जाने वाली दूरी में लगने वाला समय घट जाता है।
- विभिन्न चतुर्भुजों की भुजाओं तथा कोणों को मापें तथा उनके बीच संबंधों के पैटर्न की पहचान करें। पैटर्न के सामान्यीकरण के आधार पर स्वयं की परिकल्पना का निर्माण करें तथा उनका सत्यापन उचित उदाहरणों द्वारा करें।
- समांतर चतुर्भुज के गुणधर्मों का सत्यापन करें तथा इनका तार्किक प्रयोग समांतर चतुर्भुज की रचना, उनके विकर्णों की रचना, कोणों तथा भुजाओं के मापन जैसे क्रियाकलापों में करें।
- परिवेश की 3D वस्तुओं को 2D रूप में प्रदर्शित करें, जैसे — बॉक्स या बोतल का चित्र कागज पर बनाना।
- विभिन्न आकृतियों, जैसे — घनाभ, घन, पिरामिड, प्रिज्म आदि के जाल (नेट) बनाएँ। नेट से विभिन्न आकृतियाँ बनाएँ तथा शीर्षों, किनारों तथा सतह के बीच संबंध स्थापित करें।
- ज्यामितीय किट का प्रयोग कर विभिन्न प्रकार के चतुर्भुज बनाएँ।
- ग्राफ पेपर पर समलंब चतुर्भुज तथा अन्य बहुभुज का खाका खींचें तथा इकाई वर्ग को गिनकर अनुमानित क्षेत्रफल ज्ञात करें।
- समांतर चतुर्भुज के गुणधर्मों का सत्यापन करते हैं तथा उनके बीच तर्क द्वारा संबंध स्थापित करते हैं।
- 3D आकृतियों को समतल, जैसे — कागज के पन्ने, श्यामपट आदि पर प्रदर्शित करते हैं।
- पैटर्न के माध्यम से यूलर (Euler's) संबंध का सत्यापन करते हैं।
- पैमाना (स्केल) तथा परकार के प्रयोग से विभिन्न चतुर्भुज की रचना करते हैं।
- समलंब चतुर्भुज तथा अन्य बहुभुज के क्षेत्रफल का अनुमानित मान इकाई वर्ग ग्रिड/ग्राफ पेपर के माध्यम से करते हैं तथा सूत्र द्वारा उसका सत्यापन करते हैं। बहुभुज का क्षेत्रफल ज्ञात करते हैं।
- घनाभाकार तथा बेलनाकार वस्तुओं का पृष्ठीय क्षेत्रफल तथा आयतन ज्ञात करते हैं।
- दंड आलेख तथा पाई आलेख बनाकर उनकी व्याख्या करते हैं।
- किसी घटना के पूर्व में घटित होने या पासे या सिक्कों की उछाल के आँकड़ों के आधार पर भविष्य में होने वाली ऐसी घटनाओं के घटित होने के लिए अनुमान (Hypothesise) लगाते हैं।

- त्रिभुज तथा आयत (वर्ग) के क्षेत्रफल की समझ का उपयोग करते हुए समलंब चतुर्भुज के क्षेत्रफल के लिए सूत्र बनाएँ।
- विभिन्न 3D वस्तुओं, जैसे—घन, घनाभ तथा बेलन की सतहों की पहचान करें।
- आयत, वर्ग तथा वृत्त के क्षेत्रफल के सूत्र का प्रयोग करते हुए घन, घनाभ के पृष्ठीय क्षेत्रफल के लिए सूत्र बनाएँ।
- इकाई घनों की सहायता से घन तथा घनाभ का आयतन ज्ञात करें।
- आँकड़ों का संग्रहण, उनका वर्ग अंतरालों में सारणीबद्ध करें और दंड आरेख/पाई आरेख के रूप में प्रदर्शित करें।
- एक जैसे पासे/सिक्के को कई बार उछालकर घटनाओं के घटित होने की गणना करें तथा इसके आधार पर भविष्य की घटनाओं के लिए अवधारणा बनाएँ। बार-बार घटित होने वाली घटनाओं के सापेक्ष व्यक्तिगत घटनाओं के घटित होने की गणना द्वारा भविष्य की उसी प्रकार घटनाओं के बारे में पूर्वानुमान लगाएँ।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए (गणित)

गणित के सीखने के संदर्भ में आने वाली कठिनाइयों से निपटने के लिए, कुछ विद्यार्थियों को स्पर्श संबंधी आवश्यकता हो सकती है, तो दूसरों को ज्यामितीय तथा गणना संबंधी उपकरण की। कुछ विद्यार्थियों को सरल भाषा तथा चित्रों की आवश्यकता होती है। दूसरों को आँकड़ों, ग्राफ़, सारणी या दंड आलेख द्वारा व्याख्या करने में सहायता की आवश्यकता होती है। कुछ बच्चे ऐसे हो सकते हैं जिन्हें मौखिक निर्देश के व्याख्या की आवश्यकता हो या मानसिक गणना करने में सहायता की आवश्यकता हो। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का उपयोग इन कठिनाइयों को दूर करने तथा अमूर्त चिंतन हेतु किया जा सकता है।

विभिन्न अक्षमताओं वाले बच्चों की कुछ विशिष्ट जरूरतों का वर्णन नीचे किया जा रहा है जिनकी पूर्ति करके ऐसे बच्चों की मदद की जा सकती है। इससे वे अपने हम उम्र साथियों के साथ सीख सकेंगे और सीखने के अपेक्षित प्रतिफलों को प्राप्त कर सकेंगे।

दृष्टिबाधित बच्चों के लिए


- स्थानिक अवधारणाओं (स्थान संबंधी अवधारणाएँ) का विकास तथा स्थानिक अवधारणाओं के बीच संबंध की समझ का विकास।
- त्रिविमीय वस्तुओं को द्विविमीय रूप में रूपांतरित करने की समझ।
- गणित में प्रयुक्त विशेष चिह्नों की समझ।
- गणितीय कथन के श्रव्य अभिलेखन (ऑडियो रिकॉर्डिंग) में कठिनाई, जैसे — समीकरण आदि।
- स्थानिक प्रबंध तथा कलर कोड के कारण गणितीय विषय-वस्तु को ब्रेल लिपि में पढ़ने और लिखने में कठिनाई।
- नेमेथ या अन्य गणितीय ब्रेल लिपि सीखना।

श्रवणबाधित बच्चों के लिए

- भाषा संबंधी विकास में देरी जिससे सामान्य शब्दावली एवं गणित की तकनीकी शब्दावली रैखिक, विलोम जैसे शब्द का अभाव उत्पन्न होता है।
- गणितीय समस्याओं को समझने के लिए अनेक शब्दों का प्रयोग करने की समझ।
- गणित संबंधी शब्दावली और उसके अर्थ तथा उन्हीं शब्दों के दैनिक या सामान्य प्रयोग में अंतर कर पाना, जैसे — जोड़, जमा, घटा, भाग, घात आदि।
- शिक्षक के होठों की गति को देखकर (Lip/Speech reading) उच्चरित गणित संबंधी शब्दों में अंतर कर पाना, जैसे — सात तथा साठ, आठ तथा साठ, बीस तथा तीस आदि।
- समस्याओं को हल करने के लिए आवश्यक संगत सूचना तथा तरीकों के चयन में युक्तियों रणनीति का सीमित प्रयोग।


संज्ञानात्मक रूप से बाधित तथा बौद्धिक असमर्थता वाले बच्चों के लिए

- क्रमबद्धता, चरणवार समस्या समाधान तथा स्थानीय मान में कठिनाई।
- गणितीय गणना, संख्या के अंकों के स्थान बदलकर नई संख्या बनाना, लिखी हुई संख्याओं को देखकर उन्हें कॉपी में लिखने में कठिनाई आदि एवं संक्रिया संबंधी चिह्नों में भ्रम जैसे— + के लिए \times तथा संक्रियाओं की क्रमबद्धता को पुनःस्मरण (recall) करने में, कठिनाई।
- ज्यामिति में विभिन्न आकृतियों की पहचान तथा दिशा संबंधी कठिनाई।
- बीजगणित तथा पूर्णांकों में अमूर्त अवधारणा आदि।
- शाब्दिक समस्याओं की समझ।



खेलों का महत्व

“पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे झूँझोगे खराब”- यह कहावत आज निराधार हो गई है। माता - पिता आज जान गए हैं कि बच्चों के मानसिक विकास के साथ शारीरिक विकास भी होना चाहिए। व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन तन और मन रूपी गाड़ी से चलता है। व्यायाम, खेल शारीरिक विकास होता है तथा शिक्षा, चिन्तन - समन से व्यक्ति का मानसिक विकास होता है।





Name - Nishita Mohil

Class - 4th

Section - E

Roll No. - 22


School Name - K.V JNU N.C.E.R.T Branch

DELTA

कविता Date

{ मुस्कान }



थके हुए इंसान के लिए, आराम है
 मुस्कान।
 उदास चेहरे के लिए, प्रकाश है
 मुस्कान।
 कष्ट से भरे हुए इंसान के लिए,
 प्रकृति का उपहार है, मुस्कान।
 बेरंग दुनिया में होंसला देती
 है मुस्कान।
 ना जाने कितने सपने में सामने
 आती है मुस्कान।
 सबके जीवन में मुसकुराहट लाती है,
 बच्चों की नन्ही सी मुस्कान।
 जीवन में नई उमंग भर देती है,
 सौ की सीढ़ी सी मुस्कान।
 जीवन से आगे बढ़ने की प्रेरणा
 देती है, मित्र की मुस्कान।
 बड़े-बड़े से बात करके, अलग सा
 सहसासं दिलाती है, बुजुर्गों की मुस्कान।
 मुस्काए हुए चेहरे को खिलाने का,
 दार्शनिक है मुस्कान।
 हरे दर्द को दूर करने की, खास
 दवा है मुस्कान।
 आपके चेहरे से कुछ नटी, घटाती
 है यह मुस्कान।
 पर दूसरों को जीने की राह, जरूर
 दिखाती, आपकी प्यारी सी मुस्कान।
स्वयं रचित दिपावली (चौधरी)

दिपावली, कक्षा चौथी
 केंद्रीय विद्यालय
 एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

तरक्की

हर्षवर्धन कुमार*

शहर और गाँव की,
दूरियाँ पाटी गयीं।
कितनी हुई तरक्की,
इसकी पर्चियाँ बाँटी गयीं।
सड़क जब चौड़ी हुई
पेड़ सब काटे गये।
टीवी और फोन नये
हर घर में आते गये।
गाँव की मंडली
दिखती नहीं चौपालों में।
लोग सब बैठे हैं
टीवी के सामने।
छोटे-छोटे बच्चे भी
मोबाइल लगे थामने।
कूड़े के ढेर हैं,
मैदानों के सामने।
हमको नहीं चिंता
अब किसी और की।
वाह रे तरक्की,
हमारे इस दौर की।

* निदेशक, बेनी एजुकेशनल सॉल्यूशंस एंड टेक्नोलॉजीज़ फाउंडेशन, C/o घनश्याम शर्मा, सी-2/552, शीर्ष मंजिल (Top Floor), मार्ग संख्या-8, दूसरा पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली 110 094

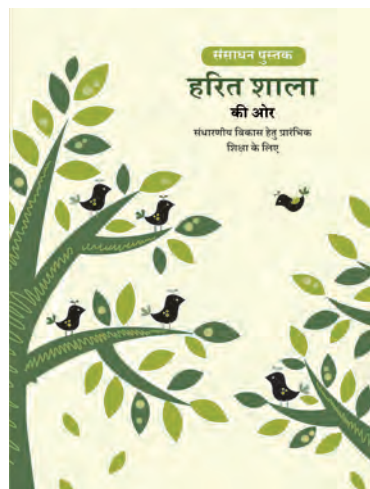
एन.सी.ई.आर.टी. के कुछ अन्य प्रकाशन

हरित शाला की ओर

₹ 115.00 / पृष्ठ 163

कोड — 13150

ISBN—978-93-5007-829-7



दर्पण

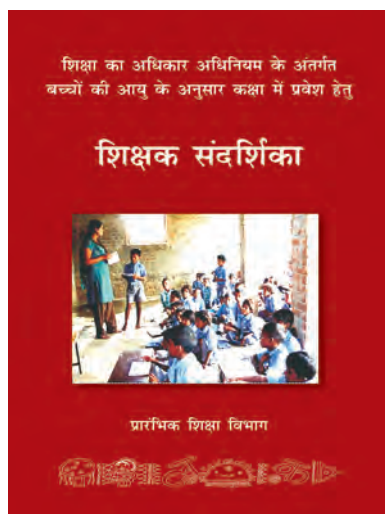
₹ 140.00 / पृष्ठ 104

कोड — 13151

ISBN—978-93-5007-830-3

अधिक जानकारी के लिए कृपया www.ncert.nic.in देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पत्तों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क करें।

शिक्षक संदर्शिका
 ₹ 80.00 / पृष्ठ 110
 कोड — 13133
 ISBN—978-93-5007-756-6



**शिक्षण और अधिगम की
 सृजनात्मक पद्धतियाँ**
 ₹ 75.00 / पृष्ठ 130
 कोड — 13107
 ISBN—978-93-5007-280-6

लेखकों के लिए दिशा निर्देश

- लेख सरल भाषा में तथा रोचक होना चाहिए।
- लेख की विषय-वस्तु 2500 से 3000 या अधिक शब्दों में डबल स्पेस में टंकित होना वांछनीय है।
- चित्र कम से कम 300 dpi में होने चाहिए।
- तालिका, ग्राफ़ विषय-वस्तु के साथ होने चाहिए।
- चित्र अलग से भेजे जाएँ तथा विषय-वस्तु में उनका स्थान स्पष्ट रूप से अंकित किया जाना चाहिए।
- शोध-पत्रों के साथ कम से कम सारांश भी दिया जाए।
- लेखक लेख के साथ अपना संक्षिप्त विवरण तथा अपनी शैक्षिक विशेषज्ञता अवश्य भेजें।
- शोधपरक लेखों के साथ संदर्भ की सूची भी अवश्य दें।
- संदर्भ का प्रारूप एन.सी.ई.आर.टी. हाउस स्टाइल के अनुसार निम्नवत होना चाहिए—
सेन गुप्त, मंजीत. 2013. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा. पी.एच.आई. लर्निंग प्रा. लि., दिल्ली.

लेखक अपने मौलिक लेख या शोध-पत्र सॉफ़्ट कॉपी (यूनीकोड में) के साथ निम्न पते पर या ई-मेल पर भेजे —

अकादमिक संपादक

प्राथमिक शिक्षक

प्रारंभिक शिक्षा विभाग

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016

ई-मेल – prathamik.shikshak@gmail.com

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING